हिंदी के स्वीकृत प्रबंध

हिंदी के स्वीकृत प्रबंध

संपादक

कृष्णाचार्य

आर्यावर्त्त प्रकाशन गृह, कलकत्ता-१२

विषय सूची

आमुख

हिंदी का प्रबंध-लेखन : इटली निवासी **एल० पी० टैसीटोरी** (L. P. Tessitori) ने १६१०ई० में फ्लॅरेंस विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पेवोलिनी (Pevolini) के निर्देशन में **रामचरितमानस और वाल्मीकि रामायण का तुलनात्मक अध्ययन** मूल इटालियन भाषा में लिखा था. यह प्रबन्ध १६११ ई० में प्रकाशित हुआ. टैसीटोरी ने डॉ० ग्रियर्सन के सुझाव पर इंडियन ऐंटीक्वैरी की ४१-४२वीं जिल्दों (१६१२-१३ई०) में **मानस** और **रामायण** की समानांतर पंक्तियाँ रोमन लिपि में छपाई. इस पत्रिका में अध्ययन भाग नहीं है. टैसीटोरी का यह प्रयास हिंदी साहित्य संबंधी प्रथम ज्ञात प्रबंध है.

जे० एन० कार्पेंटर (J. N. Carpenter) कृत **थियोलॉजी ऑफ तुलसीदास** पर लंदन विश्वविद्यालय ने १६१८ई० में डी० डी० (डॉक्टर ऑफ डिवीनिटी) की उपाधि प्रदान की. इस कृति में ईसाई धर्म की श्रेष्ठता का प्रयत्न आद्योपांत लक्षित है. टैसीटोरी का कार्य शुद्ध साहित्यिक दृष्टि और तुलनात्मक पद्धति पर आश्रित होने के कारण अन्वेषणात्मक है.

यह संयोग की ही बात नहीं है कि हिंदी के प्रथम दो प्रबंध तुलसीदास पर हैं. इस समय से लेकर **१६६२ई०** तक इस महाकवि पर भारतीय विश्वविद्यालयों में २७ प्रबंध लिखे जा चुके हैं. १६५०ई० में पेरिस में भी मानस के साहित्यिक श्रोतों पर काम हुआ था. तुलसी के प्रति अब भी यह आकर्षण इस कवि का अन्यतम महत्व ही सिद्ध करता है. १६३०ई० में मोहिउद्दीन क़ादरी ने **हिंदुस्तानी फॉनेटिक्स** विषय पर लंदन विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की. यह पुस्तक आंशिक रूप से १६३०ई० में अंग्रेजी में प्रकाशित हुई.

१६३१ई० में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डॉ० **बाबूराम** सक्सेना को **इवोल्यूशन ऑफ अवधी** विषय पर डी० लिट्० उपाधि मिली. १६३४ई० में यही सम्मान डॉ० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल को हिंदू विश्वविद्यालय ने **निर्गुण स्कूल ऑफ हिंदी पोइट्री** पर दिया. इस प्रकार भारतीय विद्यालयों में हिंदी भाषा और साहित्य पर शोधकार्य की दृष्टि से ये दोनों विश्वविद्यालय अग्रणी हैं. १६३७ से **डॉ० रसाल** द्वारा जो क्रम भारत में चला वह आज तक अक्षुण्ण है.

दिन प्रतिदिन विकसित होता हुआ प्रबंधकार्य इस स्थिति में आ गया है कि प्रतिवर्ष पी-एच० डी० आदि उपाधिधारी अनुसंधित्सुओं का लेखा रखना किसी एक व्यक्ति की सामर्थ्य के बाहर की बात हो गई है. **विश्वविद्यालयानुसार संक्षिप्त प्रबंध–विवरण** से स्पष्ट है कि किस वि० वि० में कब से काम हुआ, कितना हुआ और सन् १९६२ई० तक कितने विश्वविद्यालय इस क्रम में सम्मिलित हो चुके हैं. जहाँ सन् १९४७ई० तक केवल आठ भारतीय विश्वविद्यालयों में यह कार्य होता था, वहाँ अब १९६२ई० तक २५ वि० वि० में अनुसंधान कार्य होने लगा है. सन् १९४९ई० तक देश-विदेश के डॉक्टरों की संख्या ५३ थी. अब कम से कम इतनी संख्या प्रति वर्ष डॉक्टर नाम से सम्मानित होती है.

ग्रंथपुटीय प्रयत्न : यह स्वाभाविक ही है कि हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में यथासमय प्रबंध-ग्रंथों (प्रकाशित-अप्रकाशित) का लेखा-जोखा होता रहे, या विद्वानों का ध्यान इधर जाय. **नागरी प्रचारिणी पत्रिका**, वाराणसी और **हिंदी अनुशीलन**, इलाहाबाद द्वारा विश्वविद्यालय क्रम से प्रबंध-सूची प्रकाशित करने का प्रयत्न समय-समय पर हुआ था. किंतु यह कार्य जिस गति से हुआ उस गति से यह पत्रिकाएँ आवश्यक सूचनाएँ यथासमय संकलित न कर सकीं. इधर पिछले दस वर्षों में नए विश्वविद्यालयों की स्थापना से तथा पुराने वि० वि० के हिंदी विभागों में अनुसंधान की प्रवृत्ति अधिक जागृत होने पर यह काम और भी श्रम-साध्य हो गया है.

इस ओर ध्यान देने वाले व्यक्तियों में डॉ० उदयभानु सिंह का नाम सबसे पहले लिया जा सकता है. १३ अप्रैल १९५८ई० के साप्ताहिक हिन्दुस्तान में डॉ० सिंह कृत १९१८ई० से लेकर १९५७ई० तक के प्रबंधों की सूची प्रकाशित हुई थी. इस सूची द्वारा पहली बार प्रबंध-कार्य की स्थूल रूपरेखा सामने आई. किन्तु इस सूची में प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों का संकेत नहीं था और विषय विशेष पर हुए कार्य की झलक भी एकत्रित रूप में प्रस्तुत न थी. प्रस्तुत आमुख लेखक ने **नागरी प्रचारिणी पत्रिका** के २०१५ वि० सं० के दूसरे अंक में विषय-क्रम देकर यह अभाव दूर करने का प्रयत्न किया था. १९५९ई० में डॉ० सिंह कृत '**हिंदी के स्वीकृत शोध-प्रबंध** पुस्तक (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली) प्रकाश में आई. ३५२ पृष्ठ की इस पुस्तक में डॉ० सिंह ने १९१८ई० से १९५८ई० तक के स्वीकृत प्रबंधों की विषय-सार (Synopsis) सहित सूची और पुस्तक के अंत में विश्वविद्यालय क्रम से भी प्रबंध-सूची हिंदी जगत् को भेंट की.

किसी भी भारतीय भाषा और साहित्य के क्षेत्र में संभवतः यह प्रथम अभि-नंदनीय प्रयत्न है. किन्तु **संदर्भ ग्रंथ** की दृष्टि से इस पुस्तक में खटकने वाली एक त्रुटि रह गई. प्रबंध कार्य में लगे व्यक्ति का उद्देश्य, या कहिये प्राथमिक उद्देश्य अपने विषय की जानकारी प्राप्त करना होता है. उदाहरणार्थ, तुलसी पर कितना काम हुआ ? या आधुनिक काव्य की किन विधाओं का मन्थन हुआ ?—जैसी जिज्ञासाओं की निवृत्ति इस ग्रंथ से नहीं हो पाई. पुस्तक के अंत में लेखक-शीर्षक अनुक्रमणिका का भी अपना उपयोग है. ग्रंथालयों में सेवाकार्य का योग होने से स्पष्ट हुआ कि ना० प्र० पत्रिका में प्राप्त वर्गीकृत सूची से पाठकों ने पर्याप्त लाभ उठाया. अतः मेरा उत्साह जिस रूप में बढ़ा, उसके परिणाम स्वरूप यह ग्रंथपुटी (Bibliography).

भारतीय विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में जिस गति और विविधता से कार्य हो रहा है, उससे यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि अब इस प्रकार की अपटूडेट सूचियाँ बनाने का कार्य व्यक्ति-विशेष की परिधि में आने का नहीं है. **अनुसंधान और आलोचना** (१९६१) में डॉ० नगेंद्र ने और **अनुसंधान का विवेचन** (१९६२) में डॉ० उदयभानु सिंह ने उचित ही कहा है कि अब किसी अनुसंधान परिषद् जैसी केंद्रीय संस्था द्वारा ही यह कार्य हो सकता है. ऐसी संस्था ही प्रति वर्ष अनु-संधान-कार्य के विवरण उपस्थित कर सकती है, और पुनः ये विवरण पंच-वर्षीय सूची के रूप में प्रकाशित किये जा सकते हैं. **इंटर यूनिवर्सिटी बोर्ड** ने स्वीकृत विषयों को लेकर कुछ वर्ष के विवरण छपाए थे. यह सिलसिला भी अपेक्षित रूप में चलता दिखाई न दिया. विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक **विश्वविद्यालय अनुदान समिति** (यू० जी० सी०) से अनुदान लेकर किसी केंद्रीय वि० वि० में इस कार्य को संपादित करा सकते हैं, या **अखिल भारतीय हिंदी परिषद्** भी मार्ग-प्रदर्शन कर सकती है.

अप्रकाशित प्रबंधों की समस्याएँ : और भी कई समस्याएँ हैं. विश्वास करना चाहिये कि वि० वि० में कार्य करने वाले प्राध्यापकों का ध्यान अप्र-काशित प्रबंधों को सुरक्षित करने तथा इस क्षेत्र में कार्य करने वाले अनु-संधित्सुओं द्वारा उनके उपयोग की दृष्टि से अवश्य गया होगा. अ० भा० हिंदी परिषद् जैसी संस्था इस समस्या का समाधान 'भारतीय विश्वविद्यालय' स्तर पर कर सकती है. जब कभी हिंदी के क्षेत्र में अनुसंधानकार्य का इतिहास वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने की बात सामने आएगी तब भारी निराशा हाथ लग सकती है. अभी अभी यह स्थिति है कि

श्री मोतीलाल मेनारिया का प्रबंध श्री उदयभानु सिंह के मत से पुरातत्त्व का विषय बन गया है. विद्वानों के मत देकर निष्कर्ष निकाला गया कि अमुक विषय पर श्री मेनारिया जी ने डॉ० की उपाधि प्राप्त की.[1] इसी प्रकार डॉ० सिंह श्री जनार्दन मिश्र के प्रबंध **रिलीजस पोइट्री ऑफ सूरदास** के प्रकाशित होने का विवरण पाने में असमर्थ रहे. इस पुस्तक की एक प्रति मैंने स्वयं डॉ० सत्येंद्र के पास मथुरा में सन् १९३३-३४ई० में देखी थी. आगरा से (हिंदी इंस्टिट्यूट) श्री उदयशंकर शास्त्री ने पुस्तक देख कर मुझे आवश्यक विवरण भेजे. बाद में मैंने कलकत्ता वि० वि० में हिंदी विभाग के अध्यक्ष श्री कल्याणमल लोढ़ा के पास एक प्रति देख कर अपनी स्मृति सद्य की. श्री **एफ० ई० के** कृत **कबीर ऐंड हिज फॉलोअर्स** भी अप्राप्य समझी जाती है.[2] इस पुस्तक की एक प्रति कलकत्ता के राष्ट्रीय ग्रंथालय में है. मैं निश्चय नहीं कर पाया कि शुद्ध रूप डॉ० व्रजेश्वर वर्मा है कि ब्रजेश्वर वर्मा. डॉ० सिंह ने 'ब्रजेश्वर' रूप टाँका है तो 'हिंदी अनुशीलन' (नवं०-दिसं०-१९६२ का अंक) ने व्रजेश्वर वर्मा. जैसा कि डॉ० सिंह ने भी कहा है कि कुछ वि० वि० से उन्हीं के प्रबंध-ग्रंथों का विवरण नहीं मिला. कलकत्ता वि० वि० के अध्यक्ष श्री कल्याणमल लोढ़ा ने बतलाया कि कलकत्ता वि० वि० से श्री 'शिवनंदन पांडेय' कृत 'भारतीय नाटक का उद्भव और विकास' प्रबंध का पता नहीं लगा. मैंने हिंदी अनुशीलन और डॉ० सिंह को ही प्रमाण मान कर प्रविष्टि बना दी है. आगरा वि० वि० से प्राप्त मुद्रित प्रबंध-सूची के अनुसार डॉ० नगेंद्र को डी० लिट्० उपाधि से १९४९ में विभूषित किया गया. पंजाब वि० वि० के एक दुर्गादत्तजी मैनन हैं या मन्नन ! मुझे वि० वि० से प्राप्त सूची में मन्ननजी मिले. इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि तथ्य के अनुसंधान में कितनी बाधाएँ हैं और कालांतर में वह कितनी जटिल हो सकती है ? अप्रकाशित प्रबंधों की अधिकृत सूची संपादन करने के अनंतर ये सब भ्रम निराकृत किये जा सकते हैं.

अच्छा हो यदि श्री पी० डी० रेकार्ड कृत A Survey of Thesis literature in British libraries(1950) जैसी संदर्भ पुस्तक द्वारा अप्रकाशित प्रबंधों का विवरण पुस्तिका रूप में प्रस्तुत कर दिया जाय. उपर्युक्त पुस्तिका ब्रिटेन की **लाइब्रेरी एसोसिएशन** ने प्रकाशित की है. इस

1. हिंदी के स्वीकृत शोध-प्रबंध, २रा सं० १९६३, पृ० १०९.

2. वही—२रा सं०, पृ० ५.

पुस्तिका में ब्रिटिश पुस्तकालयों में सुरक्षित मूल प्रबंध–ग्रंथों के संबंध में निम्नांकित संकेत दिए गए हैं.

१. प्रबंध-ग्रंथ किस उपाधि के लिए हैं और किन वि० वि० पुस्तकालयों में या विभाग विशेष में सुरक्षित हैं?

२. इनका उपयोग किस स्थिति में किया जा सकता है ?

३. क्या वि० वि० ने प्रबंध-ग्रंथों की सूची और प्रबंध का कोई अंश प्रकाशित किया है; किया है तो कहाँ ?

४. प्रबंध-ग्रंथों का पता लगाने (Location of work) के लिये वि० वि० ने क्या साधन प्रस्तुत किये हैं ?

५. क्या इन ग्रंथों को किसी अन्य वि० वि० या किसी संस्था के उपयोगार्थ दिया जा सकता है ?

६. क्या इनकी माइक्रोफिल्म प्रति बनाई जा सकती है ?

बीस पृष्ठों के इस मुद्रित निबंध में प्रबंध-ग्रंथों की सूची नहीं है. इससे तो इतना ही पता लगता है कि ग्रेट-ब्रिटेन के किन पुस्तकालयों या संस्थाओं में इस प्रकार के ग्रंथों को रखने, उनके उपयोग आदि की व्यवस्था है. किंतु मात्र इतनी व्यवस्था से काम नहीं चलने का. किसी केंद्रीय संस्था को अप्रकाशित ग्रंथों की सूची बनवानी चाहिए और उपयोगी सामग्री प्रकाश में लाने की व्यवस्था भी आवश्यक है.

प्रबंधशास्त्रीय साहित्य : यह संतोष का विषय है कि वि० वि० में अनुसंधान कार्य के विस्तार के साथ साथ उसके सिद्धान्त पक्ष पर भी साहित्य प्रकाशित होने लगा है. निम्नांकित साहित्य पर्याप्त विचारोत्तेजक और पथ-प्रदर्शक के रूप में सामने आचुका है :—

सावित्री सिन्हा, संपा०
अनुसंधान का स्वरूप. दिल्ली, आतमाराम, १९५४.

विश्वनाथ प्रसाद, संपा०
अनुसंधान के मूलतत्त्व. आगरा, क० मुं० हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, १९५९.

सावित्री सिन्हा और विजयेंद्र स्नातक, संपा०
अनुसंधान की प्रक्रिया. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९६०.

उदयभानु सिंह
अनुसंधान का विवेचन. दिल्ली-पटना, हिंदी साहित्य संसार, १९६२.

अनुसंधान का स्वरूप के १४ निबंधों की सामग्री इस प्रकार है :- विश्वेश्वर प्रसाद : ऐतिहासिक खोज की रूपरेखा; धीरेंद्र वर्मा : खोज संबंधी कुछ अनुभव तथा समस्याएँ; ह० प्र० द्विवेदी : हिंदी में शोध-कार्य ; गुलाबराय : अनुसंधान का स्वरूप और उसके विविध क्षेत्र; परशुराम चतुर्वेदी : आलोचना और अनुसंधान; ललिताप्रसाद सुकुल : अनुसंधान का स्वरूप ; विनयमोहन शर्मा : अनुसंधान की प्रारंभिक बातें ; माताप्रसाद गुप्त : हिंदी में पाठानुसंधान ; भगीरथ मिश्र और सत्येंद्र : अनुसंधान का स्वरूप (२ लेख) ; हरवंशलाल शर्मा : हिंदी में अनुसंधान कार्य ; नगेंद्र : अनुसंधान का स्वरूप ; उदयभानु सिंह : हिंदी अनुसंधान की प्रगति.

अनुसंधान के मूलतत्त्व के १२ निबंधों की सामग्री इस प्रकार है :— विश्वनाथ प्रसाद : प्राक्कथन, अनुसंधान के सिद्धांत ; सत्येंद्र : अनुसंधान के सामान्य तत्त्व ; रामकृष्ण गणेश हर्षे : अनुसंधान की तैयारी ; प्रभातकुमार बनर्जी : पुस्तकालय का उपयोग ; उदयशंकर शास्त्री : हस्तलिखित ग्रंथ और उनका उपयोग, शिलालेख और उनका वाचन ; सत्येंद्र : हस्तलिखित ग्रंथो का उपयोग ; रमानाथ सहाय : पुस्तकाध्ययन तथा सामग्री निबंधन ; सत्येंद्र : रेखांकन-चित्रण तथा रूपरेखा विधान ; राधेश्याम त्रिपाठी: डिंगल का गद्य साहित्य.

अनुसंधान की प्रक्रिया के १२ भाषणों की सामग्री इस प्रकार है :— हरवंशलाल शर्मा और सत्येंद्र : अनुसंधान की प्रगति (दो लेख) ; नगेंद्र : अनुसंधान और आलोचना ; दीनदयालु गुप्त : हिंदी साहित्यिक अनुसंधान के प्रकार ; नंददुलारे वाजपेयी और भागीरथ मिश्र : विषय-निर्वाचन (दो-लेख) ; ह० प्र० द्विवेदी : शोध-सामग्री ; माताप्रसाद गुप्त : पाठानुसंधान ; विश्वनाथ प्रसाद : भाषा वैज्ञानिक अनुसंधान ; ए० चंद्रशेखर : भारत में भाषावैज्ञानिक अध्ययन ; ताराचंद : इतिहास और साहित्य ; राजबली पांडेय : अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि.

अनुसंधान का विवेचन के आठ भागों में सामग्री इस प्रकार है :— अनुसंधान का स्वरूप, प्रयोजन और अधिकारी, विषय-निर्वाचन, प्रबंध की तैयारी, उद्धरण, संदर्भोल्लेख, अनुसंधान-योजना और हिंदी अनुसंधान की प्रगति. पुस्तक के दूसरे भाग में स्वीकृत विषय-सूची के अंतर्गत २१ वर्गीकृत विभागों में स्वीकृत प्रबंध और स्वीकृत विषय पर सम्मिलित सूची दे दी गई है . इस सूची में विषय और वि० वि० का ही संकेत मात्र है. इस प्रकार एक ही व्यक्ति द्वारा इस विषय पर लिखी संभवत: यह पहली पुस्तक है.

यों ढूँढ़ने पर इस विषय पर कुछ निबंध भी मिल जायँगे. सन् १९६१ में डॉ० विनयमोहन शर्मा कृत **साहित्य, शोध, समीक्षा** (भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली) और डॉ० नगेंद्र कृत **अनुसंधान और आलोचना** (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली) में भी दो-तीन निबंध हैं.

वर्गीकरण संबंधी समस्याएँ :—संभवत: इस तथ्य पर किसी को मतभेद की गुंजाइश न होगी कि प्रबंध-ग्रंथों (मुद्रित-अमुद्रित) के ग्रंथपुटीय प्रयत्न वर्गीकृत ही होने चाहिये. वर्गीकरण के आधार पर मतों का भेद हो सकता है. किन्तु इस समस्या की जटिलता मात्र इस दृष्टि से सीमित की जा सकता है कि वर्गीकरण प्राप्त या उपलब्ध सामग्री का हो, न कि पहले सिद्धान्त गढ़ लिये जायँ—उन वर्गों में ग्रंथ बैठा देने के लिये.

अनुसंधान की प्रक्रिया में डॉ० हरवंशलाल और डॉ० सत्येंद्र ने वर्गीकरण इस प्रकार किया है :—

डॉ० हरवंशलाल	डॉ० सत्येन्द्र
१. धर्म, दर्शन, संप्रदाय, इतिहास, समाज एवं संस्कृति-	१. साहित्य-सामान्य,
	२. व्यक्ति, ३. गद्य-सामान्य,
२. विशेष धारा या प्रवृत्ति	४. उपन्यास ५. नाटक,
३. विशेष कवि, लेखक या ग्रंथ	६. कहानी,
४. पंथ-संप्रदाय-युग विशेष के साहित्यकार	७. कथा साहित्य,
५. पृष्ठभूमि, विकास, परंपरा-प्रभाव	८. निबंध,
६. काव्य-रूप	९. जीवनी
७. काव्य-शास्त्र	१०. गद्य काव्य,
८. साहित्य का इतिहास संबंधी वर्ग	११. आलोचना,
९. ग्रंथ की भाषा और भाषा विज्ञान	१२. समाचार-पत्र,
१०. ग्रंथ संपादन	१३. साहित्य शास्त्र

डॉ० सत्येंद्र के वर्गीकरण का आधार ८७ प्रबंध हैं; डॉ० लाल का आधार **सिद्धांत** और **ग्रंथ** का संमिश्रण है. इस कारण इसमें पुनरुक्ति आभासित है. ग्रंथों में ज्ञान मिश्रित रूप में रहता है, अत: कहीं-कहीं पुनरुक्ति अनिवार्य रूप से दूर नहीं की जा सकती. उदाहरण के लिए दो साहित्यों के उपन्यासों की तुलना को तुलना वर्ग में रखना चाहिये या क्रमश: साहित्य और उपन्यास वर्ग में? प्रस्तुत ग्रंथपुटी में उपन्यासों की तुलना को उपन्यास

वर्ग के साथ और काव्य संबंधी तुलना को मुख्य काव्य-वर्ग के अंतर्गत काव्यों की तुलना नाम से स्वतंत्र उपवर्ग में रखा गया है. सावधानी से काम लेने पर भी कुछ वर्गों का निर्माण इस रूप में न हो सका. ग्रंथ-संपादन या पाठ-भेद संबंधी वर्ग भी बनता है. किन्तु कुछ कठिनाई भी थी. तुलसी, जायसी, कबीर आदि पर पाठ-संपादन संबंधी कार्य हुए हैं. यह जँचा नहीं कि **साहित्यकार वर्ग** से तुलसी, जायसी, कबीर के पाठ-संबंधी ग्रंथों को प्रथक् कर अलग वर्ग बना दिया जाय. किंतु अनुशीलनकर्त्ताओं के सुभीते के लिये वर्गानुक्रम में पाठ-भेद संबंधी प्रविष्टियों का संकेत दे दिया गया है और एक से जँचने वाले वर्गों के संबंध में यथा-स्थान आन्तर-संदर्भ (Cross reference) की व्यवस्था कर दी गई है. इधर डॉ० उदयभानु सिंह कृत **हिंदी के स्वीकृत शोध-प्रबंध** का द्वितीय संस्करण भी प्रकाशित हो गया है. इस संस्करण में डॉ० सिंह ने सौभाग्य से स्थूल वर्गीकृत सूची भी लगा दी है. अपनी ग्रंथपुटी में संमिलित ५३६ प्रविष्टियों का वर्गीकरण उन्होंने इस प्रकार किया है :

नाटक	कथा-साहित्य
पाठानुसंधान	निबंध और आलोचना
भाषा संबंधी अध्ययन	इतिहास-विकास
विशिष्ट साहित्यकार और रचना	संप्रदाय और पंथ समुदाय विशेष
काव्यशास्त्र और काव्य-सिद्धांतों का प्रयोग	सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन
कविता-सामान्य	लोकसाहित्य,लोक संस्कृति . . .
,, प्राचीनकाल	नारियों का योगदान और नारी-चित्रण
,, आधुनिककाल (सामान्य)	तुलनात्मक अध्ययन
,, ,, ,,	प्रकीर्ण प्रभाव निरूपक विषय
गद्य, गद्यशैली और गद्य-काव्य	

डॉ० सिंह कृत प्राय: सब वर्गों का अंतर्भाव प्रस्तुत ग्रंथपुटी में हो गया है. पाठानुसंधान के अलावा इस पुस्तक में काव्य या इतिहास को ऐतिहासिक क्रम से प्राचीन और नवीन रूप में वर्गबद्ध नहीं किया गया है. आधुनिक काव्य का वर्ग अवश्य अलग है. एक ही ग्रंथ से वर्ग बनाने की प्रवृत्ति से बचने की चेष्टा की गई है. ऐसे ग्रंथों को **विविध** वर्ग के अंतर्गत रख दिया गया है.

प्रस्तुत पुस्तक में वर्गीकरण क्रम पर कुछ विस्तार से लिखना आवश्यक समझा गया है. अब हिंदी में शोध कार्य पर विवेचनात्मक और ग्रंथपुटीय

ग्रंथों का प्रणयन होने लगा है. अतः अब आवश्यक है कि वर्गीकरण-क्रम पर भी सुधी विद्वानों का ध्यान, विशेषकर प्राध्यापक वर्ग का ध्यान लगे. सन् १९६३ई० के अंत तक हिंदी में ६२५ से अधिक डॉक्टर होंगे. प्रति-वर्ष यह संख्या कम से कम ५०–६० डॉ० क्रम से बढ़ेगी. अतः इस समय सुव्यवस्थित वर्गक्रम निश्चित करने से, अनुशीलनकर्त्ता, प्राध्यापक, ग्रंथपुटीकार आदि के कार्य में सुविधा होगी और एकरूपता भी रहेगी.

अंग्रेजी में उपलब्ध कुछ उपयोगी ग्रंथ : योरप की कई समृद्ध भाषाओं में अनुसंधान संबंधी विपुल साहित्य है. भारत में योरप की भाषाओं में से अंग्रेजी भाषा प्रमुख रूप से शासन और शिक्षा की भाषा रही है, अतः पादटिप्पणी में कुछ अंग्रेजी पुस्तकों का संकेत दे दिया गया है.[1]

श्री कोलकृत मैनुअल अमेरिका में अपने विषय की पाठ्यपुस्तक की तरह उपयोग में आता है. इसके तीन अध्यायों में व्यवहार में आने वाली प्रक्रिया का उदाहरण सहित निर्देशन है. अन्य दोनों पुस्तकें भी शोध-कार्य की लेखन–प्रक्रिया से संबद्ध हैं. हिंदी में इस प्रकार का कुछ काम हुआ है. किंतु इतना कुछ पर्याप्त नहीं है. अब आवश्यकता है कि **अंग विशेष** पर भी कार्य हो. पाठानुसंधान को ही लें. इसका शास्त्रीय विवेचन होना बाकी है. सबसे पहले महाभारत संबंधी संपादन कार्य को लेकर पूना में कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ था. किन्तु यह पुस्तक अंग्रेजी में है.[2] इस पुस्तक का अनुवाद भी उपयोगी होगा. डॉ० माताप्रसाद, श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ० सत्येंद्र, डॉ० पारसनाथ आदि ने इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है. किन्तु आज भी पाठानुसंधान के सामान्य सिद्धांत, नियम और अनुशासन पर कोई पाठ्य-पुस्तक नहीं है. हिंदी में, विशेषकर राजस्थानी, अवधी, ब्रज और मैथिली में पांडुलिपियों

1(a) Campbell William Giles : Form and style in thesis writing, new ed. Boston, Houghton Mifflin Company 1954.

(b) Cole, Arthar H. : A manual of thesis-writing, 6th ed. New York, John Ville and Sons., 1951.

(c) Turabian, Kate L. : A manual for writers of term papers, theses and dissertations. 10th ed. Chicago, Chicago University press, 1960.

2(a) Katre, S. M. : Introduction to Indian textrual Criticism, 2nd ed., 1954.

(b) Sukthankar, V. S. : Critical studies in MB., 1944.

का भंडार भरा पड़ा है. इस दृष्टि से यह शास्त्र अब उपेक्षा के गर्त्तसे निकल कर संलग्नता के समतल पर आना चाहिए.

योरप में प्रबंध-लेखन

भारतीय अनुसंधान-केंद्रों में ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ ज्ञानोपलब्धि की परंपरा योरप से प्राप्त हुई है. १८५७ई० में कलकत्ता, बंबई और मद्रास में अंग्रेज शासकों ने विश्वविद्यालयों की स्थापना की. हिंदी क्षेत्र में सर्वप्रथम १८८७ई० में इलाहाबाद विश्वविद्यालय बना. पुनः विश्वविद्यालयों का विस्तार होता ही गया. परिणाम स्वरूप आज भारत में (१९६२ई० तक) ५३ विश्वविद्यालय हैं. यह अत्यन्त उपयोगी और स्फूर्तिदायक बात होगी कि भारत में विज्ञान, समाज विज्ञान (Humanities) और साहित्य के क्षेत्र में हुए आरंभ से आज तक के शोध-कार्य का लेखा जोखा हिंदी में प्रस्तुत कर दिया जाय.

इस ग्रंथपुटी की सामग्री एकत्रित करने के समय योरपीय विश्वविद्यालयों के तत्संबंधी इतिहास जानने की इच्छा जगी थी. इस पुस्तक के छपने तक जो जानकारी प्राप्त हुई, वह संक्षेप में इस प्रकार है :—

श्री पॉल फार्मर ने मार्गरेट क्लेप द्वारा संपादित **द मॉडर्न यूनिवर्सिटी**[1] पुस्तक में योरपीय वि० वि० की तीन विचार-धाराओं की चर्चा इस रूप में स्पष्ट की है :—

१. वि० वि० राज्य की छत्रछाया में ही पनप सकते हैं.

२. वि० वि० से ही राष्ट्र की आत्मा व्यक्त हो सकती है.

३. वि० वि० का प्रधान कार्य ज्ञान-वृद्धि है, मात्र ज्ञान-दान नहीं.

श्री फार्मर तथा अन्य योरपीय विद्वानों की सर्वमान्य स्थापना है कि योरप में वैज्ञानक ढंग से ज्ञानवृद्धि की परंपरा को जन्म देने वाली भूमि जर्मनी है. यहाँ हाले (१६९४), गॉटिंजेन (१७३४) वि० वि० में और प्रुशिया के बर्लिन (१८१०), ब्रेसलाओ (१८११) और बोन (१८१८) वि० वि० प्रोटेस्टेंट आंदोलन के प्रभाव में जन्मे और बढ़े. फ्रांस में १७-१८वीं शती तक वि० वि० की जो साँस अवरुद्ध थी, उसे नेपोलियन ने १८०६ ई०

1. द मॉडर्न यूनिवर्सिटी (१९५०).

में Universite de France को जन्म देकर कुछ गति दी. फ्रांस से अधिक राज्याश्रय मिला रूस में. १७५५ई० में रानी एलीजाबेथ ने मास्को वि० वि० खड़ा किया और अलेक्जेंडर प्रथम ने खारकोव (१८०४), कज़ान (१८०४) और सेंटपीटर्सबर्ग (१८१६) वि० वि० बनवाए.[1]

रूस ने वि० वि० स्थापना की पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय भावना को जागृत करने का उद्देश्य सामने रक्खा. रूस के सम्राट् और कुछ विद्वान् भी अनुभव करते थे कि उनका देश कांटीनेंटल योरप से कला-विज्ञान-शिक्षा में पिछड़ा हुआ है. इस प्रवृत्ति या विचारधारा को विशेष गति जर्मनी में मिली. जर्मनी में एक विशेषता थी—वह यह कि विभिन्न राज्यों के विद्वान् और विद्यार्थी जाति-रंग भेद से हट और मिलजुल कर ज्ञानार्जन का वातावरण बनाने में सबसे आगे आये. ये वि० वि० श्रेष्ठ प्राध्यापक ही नहीं, वरन् श्रेष्ठ राज्य कर्मचारी का निर्माण करने में आत्मसंतोष का अनुभव करने लगे. सेना के लिये अच्छे योद्धाओं को भी किसी न किसी वि० वि० से ही खोज निकाला जाता. अठारहवीं शती के हाले और गाटिंजेन वि० वि० में यह विचारधारा अधिक प्रश्रय पाने लगी कि वि० वि० मुख्यतः ज्ञानवृद्धि के केंद्र हैं. १८५०ई० के लगभग ज्ञानवृद्धि का सिद्धांत जर्मन वि० वि० का सर्वमान्य शील बन चुका था. १६००ई० के आसपास योरप के वि० वि० भी इस विचार के कायल होने लगे.[2] विज्ञान के क्षेत्र में प्रयुक्त गवेषणा की प्रवृत्ति को जर्मन जाति ने धार्मिक जोश की तरह अपनाया. सामंती प्रतिष्ठा धीरे-धीरे औद्योगिक क्रांति से पल्लवित समृद्धि और प्रतिष्ठा में रूपांतरित हो रही थी. ऐसी स्थिति में बुद्धिजीवी समाज वि० वि० जैसे संस्थानों से प्राप्त प्रतिष्ठा से तृप्त होता था. राष्ट्रीय गौरव के साथ-साथ सार्वभौमिक त्राण (Refuge) जैसे राजनीतिक कार्य को भी यह वि० वि० सांस्कृतिक छाया से मंडित करने लगे. यहाँ विद्वान् वह नहीं था जो रेनेसाँ की बहुमुखी ज्ञान-प्रतिभा का परिचय देता था, वरन् वह था जो ज्ञान विशेष की किसी भी शाखा पर संपूर्ण रूप से अधिकार रखता था, या जिसने शाखा विशेष में कोई स्थापना की हो.[2]

1. मॉडर्न यूनिवर्सिटी, पृ० १२

2 This century also brought forth the view of the university as an institution dedicated to a search to widen the bounds of knowledge rather than merely to preserve it. It was in this respect that the German Universities won their undisputed preeminence in the nineteenth century—*The modern university*, p. 16.

इंगलैंड की परंपरा : मि० गिलिस्पी ने सर विलियम हैमिल्टन को उद्धृत कर अपनी यह धारणा पुष्ट की है कि इंगलैंड में ऑक्सफोर्ड या कैंब्रिज ने वि० वि० के संबंध में कोई विचारधारा नहीं दी.[1]

१८७०ई० से पूर्व वि० वि० को यहाँ ज्ञानवृद्धि का केंद्र नहीं माना जाता था. ऐसी स्थापनाओं का खंडन ही होता रहता था. किन्तु Devonshire Commission (१८७३) ने संभवत: पहली बार माना कि वि० वि० को ज्ञानवृद्धि की ओर ध्यान देना ही चाहिये.[2] इस देश में डॉक्टर उपाधि का समारंभ १६००ई० के आगे-पीछे से हुआ. विदेशी विद्यार्थियों को आकर्षित करने की दृष्टि से इस पद्धति का अवलंबन विशेष रूप से किया गया. ऑक्सफोर्ड इस समय के बहुत दिनों के बाद तक भी जीवन-पद्धति के विकास का उद्देश्य सामने रख कर चला. बुद्धि, सामाजिकता, नीतिप्रवणता, यहाँ तक कि ब्रिटिशपन की प्रवृत्ति जगाने में इन वि० वि० ने अधिक योगदान किया.[3] १८५४ई० में ई० बी० पुसी (Pusey) ने जो कुछ बल देकर कहा था, वही यहाँ के जीवन का आदर्श बना रहा :

'विश्वविद्यालय का उद्देश्य नैतिक और बौद्धिक अनुशासन प्राप्त करना है. वि० वि० का विशेष कार्य विज्ञान की प्रगति करना या आविष्कार करना नहीं, मानसिक रूप से दार्शनिक विचारधारा उत्पन्न करना नहीं, विश्लेषण की नई पद्धतियों का पता लगाना नहीं, नई औषधि बनाना नहीं है—उनका काम नैतिक, धार्मिक और बौद्धिक रूप से मानव का विकास करना है. . . .अंग्रेज के बौद्धिक चरित का ढाँचा, पक्का, ठोस, सुदृढ़, विचार-पूर्ण और अनुशासित न्याय है, विश्वविद्यालय को बौद्धिक शक्ति गृह (Forcing house) का रूप देना हमारे लिये बुद्धि–विपर्यय (Perversion) से अधिक और कुछ नहीं है.'

इस प्रकार उन्नीसवीं शती के मध्य तक ब्रिटिश जाति के मत से ज्ञान-वृद्धि का कार्य उनके वि० वि० का नहीं था !

1. England is the only christian country, where the Parson, if he reaches the university at all, receives the same minimum of theological tuition as the squire.;—the only civilized country, where the degree, ... is conferred without either instruction or examination :—the only country in the world, where the physician is turned loose upon the society, with extraordinary and odious privileges, but without professional education, or even the slightest guarentee for his skill.—*The Modern University, p.28.*

2. वही—पृ० ४८. 3. वही—पृ० ५३.

अमेरिका में : अमेरिका का प्रथम वि० वि० (Pennsylvania) १७७६ में स्थापित हुआ. पुनः हारवर्ड (१७८०), न्यूयार्क (१७८४), जार्जिया (१७८५), और नॉर्थ कॉरोलीना (१७८६) वि० वि० स्थापित हुए. जैफर्सन तथा अन्य कई शिक्षा-प्रेमियों के सदुद्योग से बर्जीनिया (१८२०) वि० वि० बना. अमेरिका के शिक्षा विशारदों के मत से वि० वि० निर्माण संबंधी तीसरी लहर १८६५-१८७६ई० में आई. संख्या बल होते हुए भी यहाँ महाशय पियर्सन को लिखना पड़ा था कि उन्नीसवीं शती के अंत तक अमेरिका ने एक भी अमेरिकन टाइप (No single American Type) वि० वि० का निर्माण नहीं किया. उनके मत से यह प्रयत्न और असफलता का समय था. यह समय वि० वि० के उन मूल तत्वों को खोजने में बीत गया जिनके सहारे विशिष्ट वि० वि० के निर्माण की बात बनती है. अमेरिका और इंगलैड में वि० वि० की समस्या सृजन की समस्या थी, कहीं से कुछ लाकर मोड़ देने की नहीं.[1]

अपेक्षाकृत नए राष्ट्र अमेरिका में शिक्षा-प्रसार की तीन प्रबल लहरों से उच्च शिक्षा की प्रेरणा आंदोलित हुई. पहली लहर में चर्च-सुधार (Reformation) के समय इंगलैंड की प्रौटेस्टेंट विचार-धारा के अनुसार कुछ कॉलेज खड़े किये गये. ये शिक्षा केन्द्र ही वि० वि० की तरह उपाधियाँ देने के अधिकारी थे. दूसरी लहर में—अठारहवीं शती के मध्य स्कॉट और फ्रैंच जाति के विद्वान् दार्शनिक संस्थाओं और अकादेमियों द्वारा ज्ञान-विज्ञान के प्रसार का संदेश लाए. इस प्रकार की संस्थाओं ने खोजकार्य में प्रेरणा देने और विद्वानों को प्रतिष्ठा देने में महत्वपूर्ण योग दिया. किन्तु सबसे अधिक स्थायी और व्यापक प्रभाव सन् १८१५-१८७६ई० के बीच जर्मन-शिक्षा-प्रणाली द्वारा व्यक्त हुआ. यह विचार व्यापक रूप धारण करने लगा कि किसान-कारीगरों की शिक्षा का स्तर पर्याप्त ऊँचा उठ सकता है, कि व्यावसायिक उपयोगिता के साथ उच्च शिक्षा का भी गहरा संबंध है—यह सब जर्मन शिक्षा-पद्धति से ही संभव हुआ. इससे भी अधिक व्यापक प्रभाव की बात थी विश्वविद्यालयों में विचार-स्वातंत्र्य की स्वीकृति.[2]

1. देखिये—द मडर्न यनिवर्सिटी में American universities in the 19th Century, by G. W. Pierson.

2. The German example of the free university, an institution where students could study when and what they pleased and where the professors seemed to be free to teach and to investigate, to lecture, to conduct seminars, publish, and compete with each other in the search after new knowledge.
—*Encyclopedia of Social Sciences, xiii, p. 330-334.*

परिणामत: उन्नीसवीं शती के मध्य विश्वविद्यालयों के स्नातक व्याख्यान-प्रणाली के स्थान पर प्राय: सेमिनार पद्धति से शिक्षण और ज्ञानवृद्धि में सहयोग करने लगे. प्राचीन भारत में शास्त्रार्थ-पद्धति भी उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों में चलती थी. ये विद्यार्थी अपने से नीचे की कक्षाएँ पढ़ाते थे. आचार्य इन विद्यार्थियों के शास्त्रार्थ का निरीक्षण करते और उन्हें उचित आदेश-निर्देश देते थे. इनमें से ही कुछ होनहार अध्येता विशिष्ट प्रकार की टीका, शास्त्र या स्थापना-प्रणयन कार्य में हाथ लगाते थे. शास्त्रार्थों के प्रभाव से प्रेरणा लेकर ग्रंथ-प्रणयन होता था. इस दृष्टि से संस्कृत साहित्य का अध्ययन करने से चित्र स्पष्ट हो सकता है. योरप में ऐसे सेमिनार प्राय: लिखित रूप में होते थे. इन्हीं लिखित प्रबंधों को बाद में संशोधित कर डिसर्टेशन (Dissertation) के नाम से प्रकाशित करने की प्रणाली चल पड़ी.

'जॉर्ज बनक्राफ्ट (George Bancraft) ने हार्वर्ड वि० वि० से १८१७ई० में और केवल १७ की आयु में स्नातकीय उपाधि प्राप्त की. इस विद्यार्थी ने अपनी असाधारण प्रतिभा से संभवत: प्रथम बार जर्मनी में तीन साल पढ़ने के लिये १७००० वार्षिक डालर की छात्रवृत्ति प्राप्त की थी. . . . इतिहास विषय में १८३८ई० महत्वपूर्ण वर्ष है. इस वर्ष हार्वर्ड वि० वि० ने मि० स्पार्क्स को प्रथम प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया था.'[1]

ऐंड्रू डी० वाइट नाम के अमेरिकन व्यक्ति ने भी जर्मनी से लौट कर ही मिचीगन वि० वि० में इतिहास संबंधी व्याख्यानों की परंपरा डाली. . . . . इसके विद्यार्थी चार्ल्स कैंडल आदम्स (Charles Candell Adams) ने १८६९ई० में इसी वि० वि० में पहली बार **सेमिनार** आरंभ किये. सेमिनार प्रणाली को हार्वर्ड वि० वि० में हेनरी आदम्स ने १८७२ई० में और जॉन हाप्किस वि० वि० से १८७६ ई० में हर्बर्ट वेब्स्टर्स आदम्स ने प्रचलित किया. पिछले दोनों अमेरिकन जर्मनी से शिक्षा ग्रहण कर लौटे थे. इन्हीं दोनों ने जर्मन संस्था **डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी** का सिलसिला अमेरिका में आरंभ किया. हेनरी आदम्स ने १८७६ई० में कई स्नातकों को हार्वर्ड वि० वि० द्वारा प्रथम बार पी-एच० डी० उपाधि से सम्मानित कराया. १८८०-१९०० ई०

1. The critical method in historical research and writing, by Homer Carey Hockett, 2nd ed. (1957), p. 229-230.

के मध्य हार्वर्ड के अतिरिक्त जॉन हॉप्किंस, कोलंबिया, मिचीगन तथा अन्य वि० वि० में भी उच्च शिक्षा के लिये **थीसिस** लेखन-पद्धति अनिवार्य आवश्यकता के रूप में विस्तार पाने लगी. जॉन हॉप्किस वि० वि० ने जिन सेमिनारों को प्रचलित किया उनका विशिष्ट ऐतिहासिक महत्व है. यहाँ से अमेरिका की शिक्षा-पद्धति में वास्तविक बुद्धिजीवी जीवन का श्रीगणेश हुआ. इनसे विद्यार्थियों को अनुकूल वातावरण के साथ-साथ आवश्यक आर्थिक चिंता से भी मुक्ति मिली.[1]

अब अमेरिका ग्रहण-बोध (Understanding), भविष्य की संभावना (Predict) और घटना विशेष की नियंत्रण शक्ति को अनुसंधान कार्य मानता है. ये तीनों तत्त्व घटना और भेद (Variables) का तारतम्य समझने में सहायक होते हैं. जहाँ घटना का अर्थ किसी अन्य संबंध से ही स्पष्ट होता है, उसी प्रकार भविष्य की प्रक्रिया को भी इतिहास के परिवेश में ही समझा जा सकता है. संक्षेप में—भेदों के संबंधों को समझने की शक्ति ही अनुसंधान-**शक्ति** है.[2]

प्रबंध-लेखन और इतिहास : देखा जा चुका है कि शोध-कार्य का आरंभ योरप के देशों में विज्ञान या इतिहास के क्षेत्र से हुआ. किन्तु यों भी शोधकार्य की अपनी निजी प्रक्रिया में ऐतिहासिक दृष्टि का महत्व निर्विवाद है. 'प्रत्येक शोधक, प्रत्येक विचारक मूल स्रोत की खोज करता है, और इस प्रकार वह, तथ्य खोजी इतिहासकार (Pragmatic historian) है. किसी भी पेचीदा मुकदमे की पकड़ के लिये, या किसी भी विशाल व्यापार के लिये मूल स्रोत का पता लगाना आवश्यक होता है.'[3]

पाद-टिप्पणी, संदर्भ-प्रणाली, ग्रंथपुटियों का निर्माण आदि शोध-साधन **इतिहास** के क्षेत्र में शोधकार्य से प्राप्त हुए हैं. भाषावैज्ञानिकों और इतिहासकारों ने ऐतिहासिक अध्ययन के लिए पाठ-विशेष के प्रत्यक्ष और तुलनात्मक अध्ययन से सत्य के निकट पहुँचने की पद्धति अपनाई.[4]

1. Encyclopadea of Socieal Sciences, Vol. xiii, p. 330-334.
2. Haindbook of research on teaching, by the American educational Research asociation, 2nd., (1963), p. 96.
3. Theodor Mommsen's Address at the University of Berlin in 1874.
4. Barzun : Modern Researcher (1957), p. 5.

इतिहास अन्य विषयों की तरह मात्र विषय विशेष नहीं है; यह किसी भी विषय को समझने की पद्धति भी है. किसी भी भूत का उपयोग इतिहास का उपयोग है. किसी भी विषय के प्रतिपादन के लिये उसकी पृष्ठभूमि हृदयंगम करना आवश्यक होता है. यह ऐतिहासिक प्रक्रिया से ही संभव है.

प्रबंध-लेखन का उद्देश्य : योजनाबद्ध रूप में शोध-विवरण लिखने की प्रवृत्ति कई कारणों से विकसित हुई है. इस प्रकार के अनुशासनपूर्ण कार्य के अनंतर अनुसंधित्सु से आशा की जाती थी कि वह अपने विषय का अच्छा ज्ञाता तो होगा ही, साथ ही वह विभिन्न आलोचना–शैलियों से परिचित होने के कारण उनका सम्यक् प्रयोग करने में भी सक्षम होगा. इस प्रकार के बहुत-से कार्यों से प्रायः अधिक स्पष्ट और संश्लिष्ट रूप के खड़े होने की आशा बनती है. इस प्रकार के कार्य-समूहों से अंत में जो चित्र बनता है वह अधिक स्थायी होता है और यह उपलब्धि व्यक्ति विशेष की मात्र प्रतिभा, परिश्रम या विचारधारा से उत्पन्न कृति से श्रेष्ठ भी होता है. श्री होमर केरे हौकट का यह कथन मननीय है कि "प्रबंध लेखों में सब श्रेष्ठ नहीं होते ; उनमें कुछ अपरिपक्व ही होते हैं और कुछ श्रेष्ठ होते हैं. कुल मिला कर पिछली पीढ़ियों में जो कुछ भी ऐसा कार्य हुआ है, उसकी तुलना में उससे भी पिछली पीढ़ी के बड़े से बड़े इतिहासकारों के कार्य कम महत्व के माने गए हैं. इन प्रयत्नों के संबंध में इतना तो कहा ही जा सकता है ये अधिक परिपक्व विद्वानों द्वारा आत्मसात् या प्रक्रियान्वित होकर किसी अन्य बड़ी या महत्व की इकाई में योग देते हैं. अच्छा से अच्छा शोधकार्य इतिहास का अंग मात्र है और इसकी सार्थकता अपने से किसी बृहत्तर उद्देश्य को पूरा करते हुए अपना व्यक्तित्व उसमें अर्पित करने में ही है".[1]

प्रबंधकर्ता की योग्यता : डॉ० उदयभानु सिंह ने अपनी कृति **अनुसंधान का विवेचन** में प्रबंधकर्ता की योग्यता के संबंध में अच्छा विवेचन किया है. योरपीय देशों में इस संबंध में कई प्रबंधविद्या विशारदों ने विशद रूप में लिखा है. यहाँ केवल श्री बार्जुन कृत **मॉडर्न रिसर्चर** से संक्षिप्त विवरण देना अनुपयोगी न होगा.

१. तथ्यों की आवश्यक परीक्षा करने की क्षमता प्रबंधकर्ता का पहला गुण है—यह कि प्रत्येक स्थापना या उद्धरण प्रामाणिक स्रोत से प्राप्त किया गया है.

1. Critical method of historical research (1957), p. 232.

२. प्रबंधकर्ता से आशा की जाती है कि वह पढ़ने, नोट लेने, तुलना करने, तथ्य की पुष्टि करने, अनुक्रमणिका बनाने या प्रतिलिपि करने के कार्य में क्रमबद्धता और एकरूपता का ध्यान रखता है या उसका अभ्यासी है. इस प्रकार के संयम से व्यर्थ के परिश्रम से छुटकारा मिलता है और संदेहमय त्रुटियों की संभावना कम होती है.

३. विचारों की तर्क-सम्मत व्याख्या की योग्यता प्रबंधकर्ता का विशिष्ट गुण है. तथ्य का उचित प्रयोग करने में प्रायः असावधानी हो जाती है. तर्क-सम्मत शैली से पूर्वाग्रह और अप्रामाणिक तथ्य आप से आप छँट जाते हैं. अनुशीलनकर्ता का काम तथ्यों या उद्धरणों की भरमार करना नहीं, प्रमाण को यथाक्रम बैठाना है.

४. सच्चाई का आग्रह प्रबंधकर्ता का जीवन है. ईमानदारी केवल इतनी ही नहीं कि प्रमाण खरे हैं, उन प्रमाणों या आधारों का उपयोग भी शुद्ध अन्वेषण की दृष्टि से ही करना आवश्यक है. बुद्धि-वैभव का सच्चा उपयोग चमत्कार प्रदर्शन में नहीं, विचार-शक्ति को सत्य की मैत्री से बाँधे रखने म है.

५. चतुर्दिक् फैली ज्ञानराशि से केवल मतलब की बात छाँट लेना भारी कौशल का काम है. अपनी सीमा-क्षमता में स्व-चैतन्य (Self awareness) का उचित उपयोग ही वास्तविक अनुशीलन क्षमता है.

६. रचना-कौशल में कल्पना-शक्ति की संपत्ति सदैव उपयोगी सिद्ध हुई है. किसी भी कृति को उपयोगी बनाने से आगे बढ़ कर उसे सुंदर और प्रभावशाली बनाने में कल्पना-गुण ही काम आता है. यह कल्पना ही है जो तथ्यों की भीड़ या सामग्री की अतिव्याप्ति से लेखक को ऊपर उठा कर संतुलन, क्रमबद्धता और स्फूर्ति देती है. किसी भी कृति को अवयवीय एकता (Organic unity) देने का काम कल्पना से सम्पन्न होता है. संभवतः यह कहने की आवश्यकता नहीं कि अनुशीलन कार्य में प्रयुक्त कल्पना कवि-कल्पना से भिन्न है.

भारतीय विश्वविद्यालयों में अनुशीलन-कार्य : कलकत्ता, बंबई और मद्रास में पहली बार १८५७-५८ ई० में विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई. भारतीय विश्वविद्यालयों की स्थापना और विस्तार का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है. शून्यांकित विश्वविद्यालयों में हिंदी-शोधकार्य हो रहा है. सन् १९६० के अनंतर भी कुछ वि० वि० स्थापित हुए हैं, उन्हें भी यहाँ दिखलाया जा रहा है.

भारत के विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय	वर्ष
०कलकत्ता	१८५७
०बंबई	१८५७
०मद्रास	१८५७
०इलाहाबाद	१८८७
मैसूर	१९१६
०हिंदू	१९१६
०पटना	१९१७
०उस्मानिया, हैदराबाद	१९१८
०अलीगढ़	१९२१
०लखनऊ	१९२१
०दिल्ली	१९२२
०नागपुर	१९२३
आंध्र, वाल्टेअर	१९२६
०आगरा	१९२७
अन्नमलाइ	१९२९
केरल, त्रिवेंद्रम्	१९३७
उत्कल, कटक	१९४३
०सागर	१९४६
०पंजाब, चंडीगढ़	१९४७
०राजस्थान, जयपुर	१९४७
गोहाटी	१९४८
जम्मू-कश्मीर, श्रीनगर	१९४८
०बड़ौदा	१९४९
गुजरात, अहमदाबाद	१९४९
०पूना	१९४९
कर्नाटक, धारवाड़	१९४९
रुड़की	१९४९
महिला, बंबई	१९५१
०विश्वभारती, शांतिनिकेतन	१९५२
०बिहार, मुजफ्फरपुर	१९५२
वेंकटेश्वर तिरुपति	१९५४
जादवपुर, कलकत्ता	१९५५
वल्लभभाई, आनंद	१९५५
इंदिरा कला-संगीत, खैरागढ़	१९५६
०कुरुक्षेत्र	१९५६
०गोरखपुर	१९५७
०जबलपुर	१९५७
०विक्रम, उज्जैन	१९५७
वाराणसेय संस्कृत, वाराणसी	१९५८
मराठवाड़ा, औरंगाबाद	१९५९
उ० प्र० कृषि, इलाहाबाद	१९६०
दरभंगा	१९६०
बर्दवान	१९६०
०भागलपुर	१९६०
०राँची	१९६०
कल्याणी, बंगाल	२९६१
पंजाब कृषि, लुधियाना	१९६१
पंजाबी, पटियाला	१९६१
रवींद्र भारती, कलकत्ता	१९६१
उड़ीसा कृषि और तकनीकी, भुवनेश्वर	१९६२
मगध, बोध गया	१९६२
राजस्थान कृषि, उदयपुर	१९६२
शिवाजी, कोल्हापुर	१९६२

भारत में विद्यालयों की स्थापना और साहित्य, कला एवं विज्ञान की उच्च शिक्षा की पाश्चात्य प्रणालियों को जन्म देने का श्रेय ब्रिटिश जाति को है. १८७५ ई० के २१ वें एक्ट के अनुसार किसी भी व्यक्ति को बिना परीक्षा लिये बी० ए०, एम० ए० की उपाधियाँ देने का अधिकार कलकत्ता

वि० वि० को था. किन्तु निकट भविष्य में ही इस प्रकार की उपाधियाँ नियमित रूप से पढ़ कर और परीक्षा द्वारा ही प्राप्त की जा सकती थीं. मद्रास वि० की सीनेट के सदस्य वि० **भाष्यम् आय्यंगार** ने सम्मानीय उपाधियाँ (डी० लिट्० आदि) देने का समर्थन करते हुए कहा था कि यह सम्मान देशी भाषाओं के पंडितों को भी मिलना चाहिये. फरवरी १८८३ ई० में लिखे इस पत्र के अनुसार सम्मानीय उपाधियों के लिये १८८४ ई० का कानून बना. इसके अनुसार भारतीय विश्वविद्यालयों में सम्मानीय डॉक्टरों की परंपरा चली. पंजाब वि० के १८८२ई० के १९वें एक्ट के अनुसार भी उन व्यक्तियों को सम्मानित करने की व्यवस्था थी जिन्हें असाधारण योग्यता का व्यक्ति समझा जाता था. किन्तु **ओरियंटल पंडित** को संमानित करने का सिलसिला १८८४ ई० के कानून से चला.[1]

भारतीय विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषाओं की उच्च शिक्षा की व्यवस्था का सिलसिला **कलकत्ता विश्वविद्यालय कमीशन, १९१७ई०** के बाद शुरू हुआ. इससे भी पूर्व सर आशुतोष मुखोपाध्याय ने १९०७ से १९११ ई० के मध्य कई दीक्षांत तथा अन्य भाषणों में स्पष्ट रूप से कहा था कि अपने देश में उच्च शिक्षा केवल विज्ञान और विदेशी भाषाओं के अतिरिक्त देश की भाषाओं में भी होनी चाहिये. इस प्रकार की व्यस्था से ही ये विश्वविद्यालय सार्थक कहे जा सकेंगे. परिणाम स्वरूप उपर्युक्त कमीशन के सुझाव पर कलकत्ता विश्वविद्यालय ने १९१७ में 'मॉडर्न इंडियन लैंग्वेज़' विभाग की स्थापना की. इस विभाग ने बंगला के साथ हिंदी आदि के पठन-पाठन की व्यवस्था की. तदनंतर हिंदी भाषा और साहित्य के अध्यापन की व्यवस्था इलाहाबाद और हिंदू विश्वविद्यालय में हुई. आरंभ में भारतीय भाषाओं को पढ़ाने का माध्यम अंग्रेजी भाषा ही थी. हाईस्कूल तक में प्रत्येक विषय के प्रश्न–पत्र अंग्रेजी में बनते थे. यह स्थिति भी १९३०ई० के आसपास बदल गई. भारतीय भाषाओं की उच्च शिक्षा और शिक्षा-माध्यम भी देशी भाषाको बनाने का उत्साह संभवतः सबसे पहले उस्मानिया विश्वविद्यालय ने दिखलाया.[1] इस विश्वविद्यालय (१९१८) की स्थापना के मूल में ही यह मंत्र शिलान्यस्त था.

नियमानुसार प्रबन्ध लिख कर किस भारतीय भाषा में पहला डॉक्टर हुआ? भूमिका लिखने के समय प्राप्त सूचनाओं के आधार पर

1. Selections from educational records. Published by National archives, New Delhi. 1963. Page 437

यह बतलाना कठिन है. १९१०ई० में टैसीटोरी कृत रामचरितमानस और वाल्मीकि के तुलनात्मक अध्ययन का उल्लेख हो चुका है. डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी को लंदन विश्वविद्यालय ने १९२१ई० में **बंगला भाषा का विकास** पर पी-एच० डी० उपाधि दी. इसी वर्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय ने श्री रामतनु लाहिरी छात्रवृत्ति के अन्तर्गत श्री तमोनाशचंद्र दासगुप्त को श्री दीनेशचंद्र सेन के साथ **प्राचीन बंगला साहित्य में बंगाली समाज** (Aspects of Bengali Society from old Bengali literature) विषय पर कार्य करने की स्वीकृति दी. अपने देश के ही विश्वविद्यालय द्वारा और देशी भाषा के अनुशीलन के क्षेत्र में यह संभवत: प्रथम शोध-प्रबंध है. इस प्रबंध पर पी-एच० डी० उपाधि मिली थी. आजकल यह विश्वविद्यालय **डी० फ़िल्०** प्रदान करता है—**पी-एच० डी०** नहीं.

मराठी भाषा और साहित्य पर भी प्रथम कार्य का श्रेय फ्रांस के विख्यात विद्वान ज्यूल ब्लाख ने **मराठी भाषेचा विकास** (La formation de la langue Marathi) पर १९१४ई० में **डी० लिट्०** प्राप्त कर लिया. इस ग्रंथ का मराठी अनुवाद १९४१ई० में प्रकाशित हो चुका है. १९३५ई० में बंबई विश्वविद्यालय ने श्री पुरुषोत्तम गणेश सहस्त्रबुद्धे को स्वभावलेखन (१८६१-१९३८ई० तक के गल्प-उपन्यास-नाटक साहित्य के पात्रों का चरित्र–चित्रण) पर पी-एच० डी० दी. यह संभवत: भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा मराठी साहित्य पर प्रथम प्रबंध है. पुस्तक पूना, समर्थ भारत ने १९३८ ई० में प्रकाशित की. इसी वि० वि० ने श्री माधव त्र्यंबक पटवर्धन को (१८९४-१९३९) १९३८ई० में डी० लिट्० का सम्मान छंदोरचना विषय पर दिया. १९४८ई० में मु० वरदराजन् मद्रास वि० से तमिल अध्ययन पर पी-एच० डी० पाने वाले प्रथम व्यक्ति हैं.

विश्वविद्यालय शिक्षण में अनुसंधान कार्य के महत्व और उसकी वर्तमान स्थिति पर मुझ जैसे अनधिकारी और क्षेत्रबाह्य व्यक्ति के लिये कुछ कहना संभवत: युक्त नहीं है. यों भी भारतीय विश्वविद्यालयों के अनुसंधान-स्तर के संबंध में यों ही बोल देना अहितकर ही है. किन्तु इस सिलसिले में दिसंबर १९४८ई० से लेकर अगस्त १९४९ की विश्वविद्यालय शिक्षा (के संबंध में विवरण प्रस्तुत करने वाली) समिति की रिपोर्ट को यहाँ संक्षेप में देना उपयोगी होगा. समिति के विचार में :—

Provision for advanced study must be recognized as an integral part of our academic system (p. 141).

As long as our universities were of an affiliating type, only a few individual scholars at isolated colleges conducted research on their own lines, sometimes with admirable results and some of them deeply inspired their pupils, for example, Sir R. G. Bhandarkar at Poona, Sir Ganganath Jha at Allahabad, Prof. Kuppuswami Sastri at Madras, Sir J. C. Bose and Sir P. C. Ray at Calcutta, Colonel J. Stephenson and Prof. S. R. Kashyap at Lahore. ...... But no organized attempt was made to train students in methods of research and to develop schools of research at any university. It was only in 1941 that Sir Ashutosh Mukherji founded the first post-graduate departments at the Calcutta University and placed post-graduate training and research there on a proper footing. Promising scholars from all parts of India were appointed to professional chairs and in a few years Calcutta had produced research work of a high quality, but in the humanities and science. ...... After the first World War several new universities started post-graduate training and research from their very begining. ...... These new schools attracted a number of young and promising teachers who organized research and raised the level of post-graduate teaching at several university centres. The degrees of Ph. D., D. Litt., and D. Sc. were instituted and were awarded to students on successful completion of their researches. A number of professors fulfilled their promise of leadership in research and their work brought them international recognition, like the nobel prize, the fellowship of the British academy, the fellowship of the Royal Society, or the higher Doctrate degrees of Oxford and Cambridge. It may rightly be said that both in quality and quantity the level of scientific research was at its best in Indian universities between the years 1920-1945. (p. 145).

Although post-graduate training and research in the universities have made substantial progress during the last twenty five years, to any one acquanted with the universities,

it is clear that the amount of research done either by teachers or by research students does not approach what it should be.......

Unfortunately there are signs of a steady decline in the quality and quantity of research at our universities. There are several causes, but the most important is that most of the leaders of research in different fields have either left the universities, or at the verge of retirement and the universities have not been able to find suitable successors to continue the research tradition. (p. 147).

We recommend that the universities should assist in the publication of really good work by financial aid. ...... Research should be primarily, if possible, the sole work of the holders of these fellowships and not a mere adjunct to a life consumed in teaching. (p. 151).

That research is as important a function of a university as teaching has not been adequately realized by teachers and university administrators in our country. Some of the university teachers who do not care to look after their intellectual health try to justify their laziness by subscribing to the dictum that research is not an integral part of university work—it is a mere luxury. One of the teacher witnesses frankly confessed to us that the reason for inadquate amount of research by teachers in our universities was that we were a lethargic people, and one of the vice-chancellors also testified that the reason for stagnation amongst teachers was not so much lack of opportunities in the way of library and laboratory facilities as sheer unwillingness to put in hard work and learn more. (p. 152).

University teachers should not forget that their's is a priviledged life, they have leisure and a life of tranquility—the two essentials for research ; they are largely sheltered from the battle of life, having a security of tenure nowhere obtainable in

a business house or an industrial concern or in a political life. They should give the community, in grateful acknowledgement for their priviledges, punctuality, efficiency and devotion to duty in relation to their teaching work, and germ of new ideas and newer methods in relation to their research work. They should not only impart existing knowledge, but should be, in a real sense, creators of new knowledge. (p. 152).

कृतज्ञता-ज्ञापन

इस छोटी-सी पुस्तक को प्रस्तुत करने की प्रक्रिया में हाथ बँटाने वाले साथियों, सूचना देने वाले विद्वानों और प्रोत्साहित करने वाले अग्रजों की संज्ञा–सूची काफ़ी बड़ी है, इतनी बड़ी कि मैं अनुग्रह करने वाले सदस्यों को भूल जाने के भय से मुक्त नहीं हूँ. सबसे पहले अपने साथी श्री अविनाश माहेश्वरी को स्मरण करता हूँ जो मुझे प्रबंध-सूची से ग्रंथपुटी स्तर तक परिश्रम करने के लिये निरंतर तंग करते रहे और अंत में कलकत्ता से बंबई जाकर और भी अतिरिक्त सूचनाएँ दीं. कलकत्ता वि० वि० के हिंदी विभाग के अध्यक्ष श्री कल्याणमल लोढ़ा और श्री विष्णुकांत शास्त्री, हिंदी इन्स्टिट्यूट के श्री उदयशंकर शास्त्री, हिन्दी संग्रहालय, प्रयाग के श्री वाचस्पति गैरोला, प्रयाग वि० वि० के प्राध्यापक श्री हरदेव बाहरी, नागपुर वि० वि० के हिंदी विभाग के अध्यक्ष श्री कमलाकांत पाठक ने सूचनाएँ देकर या उनमें संशोधन–परिवर्धन कर उपकृत किया. ठीक मुद्रण-कार्य के समय लखनऊ विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रध्यापक डॉ० विपिनबिहारी त्रिवेदी ने **विश्वविद्यालयानुसार विवरण** में अपने विश्वविद्यालय की सूची ठीक कर तथा १९६३ ई० में डी० लिट्० की एक प्रविष्टि बढ़ा कर महती कृपा की. बंबई विश्वविद्यालय की सूचनाएँ डॉ० प्रबोधनारायण सिंह और डॉ० बंशीधर पंडा ने दीं. भारतीय विश्वविद्यालयों में, विशेषकर मराठी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में प्रबंध-लेखन कार्य के संबंध में मुझे अपने मित्र श्रीकृष्ण बापूराव जोशी से महत्वपूर्ण संकेत मिले. भाई श्री महादेव साहा ने संपूर्ण भूमिका पढ़कर कई शोधन परामर्श दिये. श्री नारायण बालकृष्ण मराठे ने भूमिका-भाग का अंतिम प्रूफ देखा, औरउपयोगी सुझाव दिये.

मुद्रण-कार्य और प्रविष्टियों की रूपाकार शैली निर्धारित करने में मुझे अपने साथी श्री चिंतामण वामन दातार, श्री एम० एन० नागराज और श्री कात्तिकचंद्र दत्त से अमूल्य सहयोग-परामर्श प्राप्त हुआ है.

कलकत्ता के राष्ट्रीय ग्रंथालय, बड़ा बाजार कुमार सभा पुस्तकालय और सूरजमल जालान पुस्तकालय ने मुझे अपेक्षित सहयोग दिया है. पिछले दोनों पुस्तकालयों के पुस्तकाध्यक्षों ने कभी-कभी असमय में भी पुस्तकालय खोल कर मेरा उपकार किया है. इस धृष्टता के लिये मैं संभवतः क्षमा-याचना का भी अधिकारी नहीं.

आर्यावर्त्त प्रकाशन के स्वामी श्री रामनिवास ढंढारिया ने तो अपना प्रेस ही मेरे हवाले कर दिया. प्रेस के कंपोजीटर से लेकर फोरमैन महोदय तक को कई बार विपत्ति में डालने का अपराध किया. ऐसी स्थिति में क्षमा-याचना के स्थान पर यह कहना ही उचित होगा कि भविष्य में मैं ऐसी अनधिकार चेष्टा न करूँ. किन्तु श्री रामनिवास जी जैसा प्रकाशक, प्रभु करे, सबको अवश्य मिले.

इस पुस्तक में कुछ त्रुटियाँ और अभाव हैं. ये मुझे तकनीकी दृष्टि से और यों भी बहुत अखर रहे हैं. वि० वि० से प्राप्त सूचनाओं में भी वर्तनी (स्पैलिंग) अंग्रेजी में मिली, वह भी कहीं कहीं अपूर्ण या अस्पष्ट. आशा है कि साहित्य-विदग्ध पाठक इसी दृष्टि से मेरी अज्ञता को बाद देंगे और मुझे भविष्य के संस्करण के लिये साधन-संपन्न करेंगे.

रामनवमी २०२१

—**कृष्णाचार्य**

वर्गानुसार स्वीकृत प्रबंध-विवरण
१६१०–१६६२

[५५५ प्रबंध वर्गातर्गत वर्षक्रम से व्यवस्थित हैं. प्रकाशित प्रबंधों के मूल्य और पृष्ठ संख्या सहित विवरण दिये गये हैं. प्रबंधकार का नाम ग्रंथ पर मुद्रित रूप के अनुसार प्रविष्ट है और नाम का शेष भाग कोष्ठकबद्ध है. प्रबंधकार का जन्म-वर्ष देने का प्रयत्न किया गया है. प्रत्येक प्रविष्टि के दक्षिण-कोण में वि० वि० सहित उपाधि-वर्ष अंकित है. यहाँ केवल **डी० लिट्०** उपाधि का उल्लेख है. इलाहाबाद और कलकत्ता वि० वि० **डी० फ़िल्०** और शेष वि० वि० **पी-एच० डी०** उपाधि प्रदान करते हैं. वर्ग विशेष से संबद्ध अन्य ग्रंथों की जानकारी के लिए आंतर-संदर्भ (Cross reference की व्यवस्था है.]

वर्गानुक्रम

साहित्यकार-व्यक्ति विशेष

साहित्यकार—समुदाय विशेष

साहित्य-शास्त्र

● विशेष—अंक प्रविष्टि-संख्या सूचक हैं.

मुद्रणोत्तर प्राप्त सूचनाएँ

वर्गानुसार स्वीकृत-प्रबंध-विवरण मुद्रित होने के अनंतर प्राप्त प्रकाशित प्रबंधों का प्रकाशन-विवरण निम्नांकित है. कृपया प्रविष्टि-संख्याओं के सामने लिखे प्रकाशकों के नाम यथास्थान भर लें.

१९६३ ई० में प्रकाशित

प्रविष्टि-संख्या	प्रकाशक
१५	आत्माराम, दिल्ली
१९१	साहित्य निकेतन कानपुर
२०८	चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी
२४६	आत्माराम, दिल्ली
३९०	हिंदू वि० वि०
४०१	लखनऊ वि० वि०
४५३	हिंदू वि० वि०

१९६४ ई० में प्रकाशित

प्रविष्टि-संख्या	प्रकाशक
१४७	हिंदू वि० वि०
३४६ख	अशोक प्रकाशन, दिल्ली
४३२	राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

शुद्धिपत्र

प्रविष्टि संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
१८क	शुमकार(नाथ)कपूर	शुभकार(नाथ)कपूर, १९३५-
११३	अष्टभुजप्रसाद	अष्टभुजाप्रसाद
१२३	हिन्दी महाकवियों में	हिन्दी महाकाव्यों में
१५१क	यह प्रविष्टि निकाल दें	
१५५	अष्ठा	आष्टा
१८१च	१९६२, आगरा वि०	१९६२, पंजाब वि०
२१४	रामसिंह ...ज्ञानवादी...	रामसिंह (चौहान) ...जनवादी...
२८८	शिवा भार्गव	शिव भार्गव
४२५	बद्रीप्रसाद परमार	श्याम (बद्रीप्रसाद) परमार

साहित्यकार : व्यक्ति विशेष

अब्दुर्रहीम खानखाना

अमरबहादुर सिंह १

अब्दुर्रहीम खानखाना—जीवनी और कृतियाँ. झाँसी, साहित्य सदन, १९६१. viii,४३६पृ०, २०से०. १०.००

इतिहास विभाग से. १९५२, लखनऊ वि०

अयोध्यासिंह उपाध्याय

मुकुन्ददेव शर्मा, १९१८— २

हरिऔध : जीवन और कृतित्व. वाराणसी, नन्दकिशोर ब्रदर्स, १९६१. xxx,५३२,१८पृ०, २२से०. १०.००

१९६०, गोरखपुर वि०

नारायणदास गुप्त २क.

अयोध्यासिंह उपाध्याय : काव्य, कला और आचार्यत्व.

१९६२, आगरा वि०

आलम

सरनदास भणोत ३

श्याम सनेही या आलम.

१९५२, पंजाब वि०

कबीरदास

के, एफ० ई०, १८७९— ४

कबीर ऐंड हिज फॉलोअर्स. कलकत्ता, ऑक्सफोर्ड यूनियन प्रेस, १९३१. viii,१८६पृ०,१८से०. ४.५०

F. E. Keay. Wesleyan Mission Press, मैसूर से मुद्रित.

१९३१, लंदन वि०

गोविन्द त्रिगुणायत, १९२४— ५

कबीर की विचारधारा. कानपुर, साहित्य निकेतन, १९५२. ४६९पृ०, १८.५से०. ६.००

१९५१, आगरा वि०

पारसनाथ तिवारी ६

कबीर-ग्रन्थावली. प्रयाग, प्रयाग वि० वि०—हिन्दी परिषद्, १९६१.
xxiv, ३१०पृ०, २२से०. १२.००
पाठ-सम्पादन.

१९५७, इलाहाबाद वि०

गिरीशचन्द्र तिवारी ७

कबीर के बीजक की टीकाओं की दार्शनिक व्याख्या.

१९५८, हिन्दू वि०

रामजीलाल सहायक, १९१८ ८

कबीर के दार्शनिक विचारों का अध्ययन.

१९६०, लखनऊ वि०

केदारनाथ दुबे ८क

कबीर और कबीर-पन्थ का तुलनात्मक अध्ययन.

१९६२, आगरा वि०

और देखिये—१८१, १८२

किशोरीलाल गोस्वामी

कृष्णा नाग ९

श्री किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यासों का वस्तुगत और रूपगत विवेचन.

१९६०, आगरा वि०

महेन्द्रनाथ मिश्र १०

किशोरीलाल गोस्वामी : जीवनी और कृतियाँ.

१९६१, लखनऊ वि०

केशवदास

हीरालाल दीक्षित, १९२५— ११

आचार्य केशवदास. लखनऊ, लखनऊ वि०—हिन्दी विभाग, १९५४.
ix, ४३१पृ०, २४.५ से० ९.००

१९५०, लखनऊ वि०

किरणचन्द्र शर्मा, १९१७– १२

केशवदास—जीवनी, कला और कृतित्व. दिल्ली, भारतीय साहित्य मन्दिर, १९६१. ५५४पृ०,२२से०. १५.००

मूल : केशवदास—उनके रीतिकाव्य का विशेष अध्ययन.

१९५७, पंजाब वि०

विजयपाल सिंह, १९२३— १३

केशव और उनका साहित्य. दिल्ली, राजपाल,१९६१. xvi,३९४,२पृ०, मुखचित्र,२२से०. १२.००

'यत्किंचित परिवर्तित रूप'

१९५८, अलीगढ़ वि०

गार्गी गुप्ता, १९२९— १४

रामकाव्य की परम्परा में रामचन्द्रिका का विशेष अध्ययन.

१९५९, दिल्ली वि०

और देखिये–४९ख

गोरखनाथ

रांगेय राघव, (टी० एन० बी० आचार्य), १९२३–१९६२. १५

श्री गुरु गोरखनाथ और उनका युग.

१९४८, आगरा वि०

गोविन्द ठाकुर

बद्रीनारायण झा १६

गोविन्द ठाकुर और उनका काव्य.

१९६२, बम्बई वि०

गोविन्दसिंह, गुरु

प्रसिन्नी सहगल, १९२७— १७

गुरु गोविन्दसिंह की जीवनी और कृतित्व का अध्ययन.

१९६१, लखनऊ वि०

घनानन्द

मनोहरलाल गौड़, १९१८— १८,

घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा १९५८. xxviii,४७७पृ०,२२से०. (ना०प्र० ग्रंथमाला, ५४). ८.००

१९५४, आगरा वि०

शुमकार (नाथ) कपूर **१८क**
चतुरसेन शास्त्री के उपन्यासों का अध्ययन.
१९६२, लखनऊ वि०

चन्द बरदायी

विपिनबिहारी त्रिवेदी, १९१५— **१९**
चन्द बरदायी और उनका काव्य. प्रयाग, हिन्दुस्तानी एकेडमी, १९५२. iv,३७६पृ०,२४से०. ८.००
१९४८, कलकत्ता वि०

नामवर सिंह, १९२७— **२०**
पृथ्वीराज रासो की भाषा. वाराणसी, सरस्वती प्रेस, १९५६. २९१पृ०, २१से०. ६.००
१९५६, हिन्दू वि०

बेनीप्रसाद शर्मा **२१**
पृथ्वीराज रासो का अध्ययन : लघुतम पाठ के आलोचनात्मक सम्पादन सहित.
१९५८, पंजाब वि०

कृष्णचन्द्र अग्रवाल, १९३४— **२२**
पृथ्वीराज रासो के पात्रों की ऐतिहासिकता
१९६१, लखनऊ वि०

जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

विश्वम्भरनाथ भट्ट, १९१५— **२३**
रत्नाकर : उनकी प्रतिभा और कला. दिल्ली, पुस्तक सदन, १९५७. x,३८३,२पृ०,२१से०. ९.००
१९५२, आगरा वि०

जयशंकर 'प्रसाद'

जगन्नाथप्रसाद शर्मा, १९०५— **२४**
प्रसादके नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन. ३ रा सं०. बनारस, सरस्वती मन्दिर, १९४९. ३०९पृ०,२१से०. ५.५०
डी० लिट्०, १९४३, हिन्दू वि०

प्रेमशङ्कर, (तिवारी) १९३०— २५
प्रसाद का काव्य. २रा सं०. प्रयाग, भारती भंडार,१९६१. xii,५३२ पृ०,२१.५से०. १२.००
१ला सं० १९५५.

१९५३, सागर वि०

द्वारिकाप्रसाद (सक्सेना), १९२१— २६
कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, १९५८. x,४९८पृ०,२२से०. १०.००

१९५७, आगरा वि०

ज्ञानवती अग्रवाल २७
प्रसाद का काव्य और दर्शन.

१९५८, आगरा वि०

कामेश्वरप्रसाद सिंह, १९०९— २७क
प्रसादजी की काव्य प्रवृत्ति.

१९५९, बिहार वि०

दुर्गादत्त मन्नन २८
जयशङ्कर प्रसाद : उनके विचार और कला.

१९५९, पंजाब वि०

देवेश ठाकुर २९
आधुनिक भारतीय समाज में नारी और प्रसाद के नारी पात्र.
१९६१, सागर वि०

तुलसीदास

टैसीटोरी, एल० पी०, १८८७-१९१९. ३०
तुलसीकृत रामचरितमानस और वाल्मीकि रामायण का तुलनात्मक अध्ययन. इंडियन एंटीक्वेरी, जि० ४१, वर्ष १९१२ ई० और जि० ४२, वर्ष १९१३ ई०.
L. P. Tessitori.

१९१०, फ्लॉरेंस वि०

बम्बई से प्रकाशित उपर्युक्त त्रैमासिक पत्रिका की ४१ वीं जि०, पृ० २७३ पर टैसीटोरी ने लिखा : 'The present paper

on the connection between Tulsidas's Ramcharitmanas and Valmiki's Ramayana was first published in Italian in the 'Giornale della Societa Asiatica Italiana, (Vol. XXIV, 1911) and now published in English at the kind suggestion of Sir R. C. Temple'.

हिन्दी में इस शोध-प्रबन्ध की सूचना सर्वप्रथम 'संयुक्त राजस्थान', नवं० १९५४ के टैसीटोरी श्रद्धांजलि अंक में, पुनः हिन्दी अनुशीलन, वर्ष १३, अंक ४ में श्री वेदप्रकाश गर्ग कृत 'हिन्दी का सर्व प्रथम शोध-प्रबन्ध' में।

कार्पेन्टर, जे० एन० ३१

द थियोलॉजी ऑफ तुलसीदास. मद्रास, क्रिश्चियन लिटरेरी सोसाइटी, १९१८. २०२पृ०,१८से०.

J. N. Carpenter.

डी० डी०, १९१८, लंदन वि०

बलदेवप्रसाद मिश्र, १८९८— ३२

तुलसी-दर्शन. प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन,१९३८. ३४८पृ०,२१ से०. ३.५०

३रा सं० १९४४.

डी० लिट्०, १९३८, नागपुर वि०

हरिहरनाथ हुक्कू ३३

रामचरितमानस के सन्दर्भ में तुलसीदास की शिल्प-कला का अध्ययन.

डी० लिट्०, १९३९, आगरा वि०

माताप्रसाद गुप्त, १९०९— ३४

तुलसीदास : सञ्जीवनी और कृतियों का समालोचनात्मक अध्ययन. प्रयाग, इलाहाबाद वि० वि०—हिंदी परिषद्, १९४२. xx,६१६पृ०, २१.५से०. ६.००

डी० लिट्०, १९४०, इलाहाबाद वि०

राजपति दीक्षित, १९१५— ३५

तुलसीदास और उनका युग. वाराणसी, ज्ञान मण्डल, १९५२. xxvii,४८६पृ०,१८.५से०. ८.००

डी० लिट्०, १९४९, हिन्दू वि०

बोदविल, शार्लोत ३६

तुलसीदास रचित रामचरितमानस का मूलाधार व रचना विषयक समालोचनात्मक एक अध्ययन, भाग १. अनु० जगवंशकिशोर बलवीर. पांडुचेरी, इंस्टीटचूट फ्रांकेइस-इंडोलॉजीए, १९५९. xxii,१९४पृ०, २४से०.

Charlotte Vaudeville. मूल फ्रेंच से अनूदित

डी० लिट्०, १९५०, पेरिस वि०

देवकीनन्दन श्रीवास्तव, १९२८— ३७

तुलसीदास की भाषा. लखनऊ, लखनऊ वि० वि०—हिंदी विभाग, १९५७. xxxii,३९५पृ०,२५से०. १०.००

१९५३, लखनऊ वि०

सीताराम कपूर ३८

रामचरितमानस के साहित्यिक स्रोत.

१९५५, आगरा वि०

राजाराम रस्तोगी ३९

तुलसीदास : जीवनी और विचारधारा. कानपुर, अनुसन्धान प्रकाशन, १९६३. ४०७पृ०,२४से०. १६.००

१९५७, पटना वि०

उदयभानु सिंह, १९१७— ४०

तुलसी-दर्शन-मीमांसा. लखनऊ, लखनऊ वि० वि०—हिन्दी विभाग, १९६१. vi,४६४पृ०,२४से०. १८.००

डी० लिट्०, १९५९, लखनऊ वि०

रामदत्त भारद्वाज, १९०२— ४१

गो० तुलसीदास-व्यक्तित्व : दर्शन : साहित्य. दिल्ली भारती साहित्य मन्दिर, १९६२. xxii,५९०पृ०, प्लेट०,२१से०. १८.००

डी० लिट्०, १९५९, आगरा वि०

भाग्यवती सिंह ४२

तुलसी की काव्य-कला—उनकी रचनाओं में. आगरा, सरस्वती पुस्तक सदन, १९६२. ii,४००पृ०,२२से०. १२.५०

१९६०, लखनऊ वि०

विजयबहादुर अवस्थी ४३

रामचरितमानस पर पौराणिक प्रभाव.

१९६०, दिल्ली वि०

राजकुमार पाण्डेय, १९२७— ४४

रामचरितमानस का काव्यशास्त्रीय अनुशीलन. कानपुर, अनुसन्धान प्रकाशन, १९६३. ४९९,६पृ०,२४से०. १६.००

१९६०, आगरा वि०

महेशप्रसाद चतुर्वेदी ४५

तुलसी का समाज-दर्शन.

१९६१, सागर वि०

रघुराजशरण शर्मा ४६

तुलसी और भारतीय संस्कृति.

१९६१, आगरा वि०

शम्भूलाल शर्मा, १९०९— ४७

तुलसी का शिक्षा दर्शन : रामचरितमानस के सन्दर्भ में.

१९६१, राजस्थान वि०

श्रीधर सिंह, १९२२— ४८

तुलसीदास की रचनात्मक प्रतिभा का अध्ययन,

१९६१, हिन्दू वि०

वचनदेव कुमार, १९३४— ४९

तुलसी के भक्त्यात्मक गीत—विशेषत: विनय-पत्रिका के सन्दर्भ में.

१९६२, पटना वि०

अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ४९क

तुलसी काव्य : मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

डी० लिट्०, १९६२, आगरा वि०

जगदीशनारायण ४९ख

रामचरितमानस और रामचन्द्रिका का तुलनात्मक अध्ययन

१९६२, आगरा वि०

नरेन्द्रकुमार ४६ग

तुलसीके काव्यमें अलङ्कार योजना.

१६६२, दिल्ली वि०

मोहनराम यादव ४६घ

रामलीला की उत्पत्ति और विकाश–रामचरितमानस के सन्दर्भ में.

१६६२, हिन्दू वि०

विष्णुशर्मा मिश्र ४६ङ

तुलसी का सामाजिक दर्शन.

१६६२, लखनऊ वि०

और देखिये–१७१,१७३,१७७,४५५.

तुलसी साहब

हरस्वरूप माथुर ५०

तुलसी साहब (हाथरस के) की जीवनी, कृतित्व और पन्थ का अध्ययन

१६५६, लखनऊ वि०

दरिया साहब

धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी, १६०५— ५१

सन्त कवि दरिया : एक अनुशीलन. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, १६५४. ix,२६४,२५६पृ०,सचित्र,२३से०.

१६४४, पटना वि०

देवदत्त

लक्ष्मीधर मालवीय ५२

देव के लक्षण-ग्रन्थों का पाठ तथा पाठ सम्बन्धी समस्याएँ,

१६६१, इलाहाबाद वि०

और देखिये—३५३

द्विजदेव

अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ५३

द्विजदेव और उनका काव्य.

१६५८, आगरा वि०

नागरीदास

फैयाजअली खाँ ५४

सन्त नागरीदास.

१९५२, राजस्थान वि०

पद्माकर

रेवतीसिंह यादव ५५

कवि पद्माकर तथा उनके रचित ग्रन्थों का अध्ययन.

१९५९, आगरा वि०

परमानन्ददास

गोवर्द्धननाथ शुक्ल, १९१५— ५६

परमानन्ददास और उनका साहित्य. अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर,—?

संक्षिप्त संस्करण

१९५६, अलीगढ़ वि०

पल्टूदास

प्रयागदत्त तिवारी ५७

सन्त कवि पल्टूदास और सन्त सम्प्रदाय.

१९५९, आगरा वि०

प्रेमचन्द

शङ्करनाथ सुकुल ५८

उपन्यासकार प्रेमचन्द : उनकी कला, सामाजिक विचार और जीवन-दर्शन

१९५२, आगरा वि०

महेन्द्र भटनागर, १९२६— ५९

समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द. वाराणसी, हिन्दी प्रचारक, १९५७. २१२पृ०,२१.५से०. ५.००

१९५७, नागपुर वि०

राजेश्वर गुरु, १९१८— ६०
प्रेमचन्द : एक अध्ययन—जीवन, चिन्तन और कला. भोपाल, मध्यप्रदेशीय प्रकाशन समिति, १९५८. viii, २८२, २ पृ०, २४ से०. १५.००

१९५७, नागपुर वि०

गीतालाल ६१
प्रेमचन्द का नारी-चित्रण तथा उसे प्रभावित करने वाले तत्त्व.

१९६०, पटना वि०

बनादास

भगवतीप्रसाद सिंह ६२
उन्नीसवीं शती का रामभक्ति साहित्य—महात्मा बनादास का अध्ययन.

१९५५, आगरा वि०

बनारसीदास जैन

रवीन्द्रकुमार जैन, १९१५ ६३
कविवर बनारसीदास : जीवनी और कृतित्व.

१९५६, (हिन्दी इंस्टीट्यूट) आगरा वि०

बरकत उल्लाह

लक्ष्मीधर शास्त्री ६४
ऋषि बरकत उल्लाह प्रेमी कृत प्रेमप्रकाश का अनुसन्धान, सम्पादन और अध्ययन. दिल्ली, फ्रैंक ब्रदर्स, १९४३. xLii, १७८पृ०, २२से०. ४.००

१९४५, पंजाब वि०

बालकृष्ण भट्ट

राजेन्द्रप्रसाद शर्मा— ६५
बालकृष्ण भट्ट, उनका जीवन और साहित्य. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, १९५८. ४३७पृ०, २२से०. १०.००

१९५६, आगरा वि०

बालमुकुन्द गुप्त

नत्थनसिंह ६६

गद्यकार बाबू बालमुकुन्द गुप्त : जीवन और साहित्य. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर,१९५९. x,५२६पृ०,२२से०. १२.५०

१९५७, आगरा वि०

बिहारीलाल

रामसागर त्रिपाठी ६७

मुक्तक काव्य परम्परा और बिहारी. दिल्ली,अशोक प्रकाशन, १९६०. xviii,५९३पृ०,२२.५से० १६.००

१९५८, आगरा वि०

गणपतिचन्द्र गुप्त, १९२८— ६८

हिन्दी काव्य में शृङ्गार परम्परा और महाकवि बिहारी. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, १९५९. xxiv,४४०पृ०,२२से०. १०.००

१९५६, पंजाब वि०

रामकुमारी मिश्र ६९

बिहारी सतसई का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन.

१९६१, इलाहाबाद वि०

रणधीरप्रसाद सिन्हा, १९३४— ७०

कविवर बिहारीलाल और उनका युग.

१९६२, पटना वि०

भिखारीदास

नारायणदास खन्ना ७१

आचार्य भिखारीदास. लखनऊ, लखनऊ वि०वि०—हिन्दी विभाग,१९५५. vi,३६८पृ०,२४.५से०. १०.००

१९५२, लखनऊ वि०

मतिराम

त्रिभुवन सिंह, १९२९— ७२

महाकवि मतिराम और मध्यकालीन हिन्दी कविता में अलङ्करण वृत्ति. वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९६०. ३४२पृ०, २३से०. १०.००

१९५८, हिन्दू वि०

महेन्द्रकुमार **७३**

मतिराम : कवि और आचार्य. दिल्ली, भारती साहित्य मन्दिर, १९६०. xv,३८७पृ०,२२.५से०. १०.००

१९५९, दिल्ली वि०

मलिक मुहम्मद जायसी

लक्ष्मीधर **७४**

पदुमावती—ए लिंग्विस्टिक स्टडी ऑफ द सिक्सटींथ सैंचुरी हिन्दी (अवधी). लंदन, लूज़क ऐंड कं०, १९४९. xi,३३५पृ०,२२से०.

१९४०, लंदन वि०

जयदेव (कुलश्रेष्ठ) **७५**

सूफी महाकवि जायसी. अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर, १९५७. xii,३७२पृ०,२१.५ से०. ६.००

१९४९, आगरा वि०

शिवसहाय पाठक **७६**

मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य.

१९६१, सागर वि०

गायत्री सिन्हा **७६क**

पदमावत में समाज-चित्रण.

१९६२, आगरा वि०

प्रभाकर शुक्ल, १९३५— **७६ख**

जायसी की भाषा

१९६२, लखनऊ वि०

मलूकदास

त्रिलोकीनारायण दीक्षित, १९१९— **७७**

सन्तकवि मलूकदास.

१९४८, लखनऊ वि०

महावीरप्रसाद द्विवेदी

उदयभानु सिंह, १९१७— **७८**

महावीरप्रसाद द्विवेदी और उनका युग. लखनऊ,लखनऊ वि० वि०—हिन्दी विभाग, १९५१. xvi,४३०पृ०,२३.५से०

१९४६, लखनऊ वि०

मीरांबाई

छोटेलाल ७६
मीरांबाई.
१६५८, आगरा वि०

विमला गौड़ ८०
मीरा-साहित्य के मूल स्रोतों का अध्ययन.
१६५६, (हिन्दी इंस्टीट्यूट) आगरा वि०

मैथिलीशरण गुप्त

उमाकान्त (गोयल) ८१
मैथिलीशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १६५८. xv,४८८पृ०,२४से०. १५.००
१६५७, दिल्ली वि०

कमलाकान्त पाठक, १६२२— ८२
मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य. दिल्ली, रणजीत प्रिन्टर्स हिन्दी परिषद्–(सागर वि० वि० के लिये), १६६०. xxviii,७२६पृ०, २२से०. २५.००
१६५७, सागर वि०

रज्जब साहब

ब्रजलाल वर्मा, १६२४— ८३
सन्त साहित्य के सन्दर्भ में संतकवि रज्जब का परिशीलन.
१६६०, आगरा वि०

रविदास

भगवद्व्रत मिश्र ८४
सन्त कवि रविदास और उनका पन्थ.
१६५४, लखनऊ वि०

रामचन्द्र शुक्ल

जयचन्द राय, १६२५— ८५
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : सिद्धान्त और अध्ययन. दिल्ली, भारती साहित्य मंन्दिर, १६६३. xii,३०२पृ०,२२से०. १०.००

१९५८, आगरा वि०

और देखिये—शुक्ल के काव्य-सिद्धान्त ३२४.

लक्षदास

मुरारीलाल शर्मा, १९२७— ८५क

अवधी कृष्ण-काव्य में लक्षदास और उनका काव्य.

१९६२, आगरा वि०

विद्यापति

अम्बादत्त पंत ८६

अपभ्रंश काव्य और विद्यापति.

१९५८, आगरा वि०

वीरेन्द्रकुमार ८७

रीति काव्य पर विद्यापति का प्रभाव.

१९६०, आगरा वि०

विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक

एन० डी० साहू ८८

विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक के सम्पूर्ण साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन.

१९६०, जबलपुर वि०

वृन्दावनलाल वर्मा

शशिभूषण सिंहल, १९३३— ८९

उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, १९६० xvii,३५५पृ०,२२ से०. १०.००.

१९५८, लखनऊ वि०

श्रीधर पाठक

रामचन्द्र मिश्र ९०

श्रीधर पाठक तथा हिन्दी का पूर्व स्वच्छन्दतावादी काव्य—१८७५-१९२५. दिल्ली, रणजीत प्रिंटर्स,१९५९. xxx,४६४पृ०, मुखचित्र, २०.५से०. १२.००

१९५६, आगरा वि०

सुन्दरदास

महेशचन्द्र सिंहल ९१
सन्त सुन्दरदास.

१९५६, आगरा वि०

सूदन

त्रिलोकीनाथ सिंह, १९३६— ९१क
सूदन का सुजान चरित और उसकी भाषा.

१९६२, लखनऊ वि०

सूरदास

जनार्दन मिश्र ९२
सूरदास. पटना, युनाइटेड प्रेस, १९३५. १६२ पृ०, १८ से०.
अन्तिम पृष्ठ और फ्रेंच भाषा में लेखक का परिचय.

१९३४, कोनिग्सबर्ग वि०

ब्रजेश्वर वर्मा, १९१३— ९३
सूरदास—जीवन और काव्य का अध्ययन; ३रा सं०. इलाहाबाद, हिन्दी परिषद—इलाहाबाद वि०वि०, १९५९. xix, ५९०पृ०, २१से० ८.००
१ला सं० १९४६.

१९४५, इलाहाबाद वि०

मुंशीराम शर्मा 'सोम', १९०१— ९४
भारतीय साधना और सूर साहित्य. कानपुर, आचार्य शुक्ल साधना सदन, १९५३. ४६१पृ०, २२से० ८.००

१९५१, आगरा वि०

हरवंशलाल शर्मा, १९१५— ९५
श्रीमद्भागवत और सूरदास.

१९५३, आगरा वि०

रामधन शर्मा, १९०५— ९६
सूरदास के कूट-काव्य का अध्ययन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९६३.

१९५४, पंजाब वि०

हरवंशलाल शर्मा, १९१५— ९७

सूरदास और उनका साहित्य.२रा सं०. अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर, १९५८. xx,३७९,३७,२०पृ०,२५से०. १०.००.

डी० लिट्०, १९५५, नागपुर वि०

मनमोहन गौतम, १९१८— ९८

सूर की काव्य-कला. दिल्ली,भारती साहित्य मंदिर,१९५८. iv,४०२ पृ०,२२से०. १०.००

१९५६, दिल्ली वि०

प्रेमनारायण टण्डन, १९१५— ९९

सूर की भाषा. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार, १९५७. viii,६२४पृ०, २४से०. २०.००

१९५७, लखनऊ वि०

रमाशङ्कर तिवारी १००

सूरदास की शृङ्गार-भावना.

१९६२, भागलपुर वि०

हरिदास, स्वामी

गोपालदत्त शर्मा १०१

स्वामी हरिदासजी का सम्प्रदाय और उनका बानी साहित्य.

१९५८, आगरा वि०

हरिभद्र

नेमिचन्द्र शास्त्री १०१ क

हरिभद्र का प्राकृत-कथा साहित्य.

१९६१, भागलपुर वि०

(भारतेन्दु) हरिश्चन्द्र

शिवनारायण बोहरा, १९०९— १०२

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र.

१९४६, पंजाब वि०

हित ध्रुवदास

केदारनाथ दुबे १०३

श्री हित ध्रुवदास और उनका साहित्य.

१९५९ पंजाब वि०

हित वृन्दावनदास

गोपाल व्यास, १९१६— १०४

चाचा हित वृन्दावनदास और उनका साहित्य.

१९५९, आगरा वि०

साहित्यकार—समुदाय विशेष

सरयूप्रसाद अग्रवाल, १९२२– १०५

अकबरी दरबार के हिन्दी कवि. लखनऊ, लखनऊ वि०वि०–हिन्दी विभाग, १९५०. ix,३५६पृ०,२४से०. १०.००

१९४९, लखनऊ वि०

सावित्री सिन्हा, १९२३— १०६

मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ. दिल्ली, आत्माराम, १९५३. ३१७पृ०, २१से०. ८.००

१९५१, दिल्ली वि०

त्रिलोकीनारायण दीक्षित, १९१९— १०७

चरनदास, सुन्दरदास और मलूकदास के दार्शनिक विचार.

डी० लिट्०, १९५६, लखनऊ वि०

विमला पाठक १०८

रीवाँ दरबार के हिन्दी-कवि.

१९५६, इलाहाबाद वि०

बृजकिशोर मिश्र, १९१२–१९६२. १०९

अवध के प्रमुख कवि—१७००–१९००. लखनऊ, लखनऊ वि० वि०–हिन्दी विभाग, १९६०. xxvi,३२८पृ०,मुखचित्र,२२से०. ११.००

१९५७, लखनऊ वि०

सूरजप्रसाद शुक्ल, १९२७— **११०**
बैसवाड़े के हिन्दी कवि.

१९६०, आगरा वि०

गोपीवल्लभ नेमा **११० क**
रामानन्द सम्प्रदाय के अज्ञात कवि.

१९६२, आगरा वि०

महेन्द्रप्रताप सिंह **११० ख**
भगवन्तराय खीची और उसके मण्डल के कवि.

१९६२, सयाजीराव वि०

और देखिये—रीति. . .के प्रमुख आचार्य ३३३.

काव्य-रूपों का अध्ययन

खण्ड काव्य

सियाराम तिवारी **१११**
मध्यकालीन खण्डकाव्य.

१९६२, पटना वि०

रामकुमार गुप्त **१११ क**
हिन्दी खण्डकाव्यों का अध्ययन.

१९६२, इलाहाबाद वि०

गद्यकाव्य

पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', १९१८— **११२**
हिन्दी-गद्यकाव्य. दिल्ली, राजकमल,१९५८. viii,३०५पृ०,२१से०.
७.००

१९५४, आगरा वि०

अष्टभुजप्रसाद पाण्डेय **११३**
हिन्दी में गद्यकाव्य का विकास. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन,१९६०. iv,
३८४पृ०,२२से०. १६.००

१९५७, हिन्दू वि०

गीतिकाव्य

शिवमंगलसिंह सुमन, १६१६— ११४
गीतिकाव्य का उद्गम, विकास और हिन्दी साहित्य में उसकी परम्परा.
डी०लिट्०, १६५०, हिन्दू वि०

श्यामसुन्दरलाल दीक्षित, १६१४— ११५
कृष्ण काव्य में भ्रमरगीत. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १६५८. vi, ४४०पृ०,२२से०. १०.००
१६५४, आगरा वि०

स्नेहलता श्रीवास्तव, १६१२— ११६
हिन्दीमें भ्रमरगीत-काव्य और उसकी परम्परा. अलीगढ़,भारत प्रकाशन मंदिर, १६५८. xxii,६१६पृ०,२१से०. १२.००
१६६१, दिल्ली वि०

सच्चिदानन्द तिवारी ११७
आधुनिक हिन्दी कविता में गीत तत्त्व का अध्ययन.
१६६१, हिन्दू वि०

महाकाव्य

हरिश्चन्द्र राय ११८
हिन्दी साहित्य में महाकाव्य.
१६४६, लंदन वि०

प्रतिपाल सिंह, १६०६— ११६
बीसवीं शती (पूर्वार्द्ध) के महाकाव्य. दिल्ली, ओरियन्टल बुक डिपो, १६५५. v,३५०पृ०,२.५से०. ८.५०
१६५२, आगरा वि०

शंभुनाथ सिंह, १६१७— १२०
हिन्दी में महाकाव्य का स्वरूप-विकास.२ रा सं०. काशी, हिन्दी प्रचारक १६६२. vii,७१०पृ०,२२से०.
प्रथम सं० १६५६. १६५५, हिन्दू वि०

पुष्पलता निगम १२१
हिन्दी महाकाव्यों में नायक.
१६५७, लखनऊ वि०

गोविन्दराम शर्मा १२२

हिन्दी के आधुनिक महाकाव्य—परम्परा और विकास. दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार, १९५९. vi, ५०९पृ०, २२से०. १२.५०.

१९५८., पंजाब वि०

शङ्करलाल मेहरोत्रा १२३

हिन्दी महाकवियों में नाट्य तत्त्व.

१९६०, आगरा वि०

श्यामनन्दन प्रसाद किशोर, १९२३– १२३ क

आधुनिक हिन्दी–महाकाव्यों का शिल्प-विधान.

डी० लिट्०, १९६१, बिहार वि०

मुक्तक काव्य

रामसागर त्रिपाठी

मुक्तक काव्य–परम्परा और बिहारी–देखिये ६७.

भक्ति-काव्य

सामान्य—भक्ति

मुंशीराम शर्मा, १९०१— १२४

भक्ति का विकास. वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन, १९५८. xviii, ८०७ पृ०, २२ से०. २०.००

डी० लिट्०, १९५६, आगरा वि०

शिवशङ्कर शर्मा १२५

भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य में योग-भावना.

१९५८, अलीगढ़ वि०

ब्रजलाल १२६

निर्गुण और सगुण काव्य-धाराओं की प्रवृत्तियों का अध्ययन—सोलहवीं शती के अंत तक.

१८६०, पंजाब वि०

करुणा वर्मा १२७

मध्ययुगीन हिन्दी भक्ति-साहित्य में वात्सल्य एवं सख्य—१५००–१७०० वि०.

१९६१, इलाहाबाद वि०

मिथिलेश कान्ति, १६२६– १२८
हिन्दी भक्ति–काव्य में शृङ्गार रस—१३७५–१७०० वि०.
१६६१, इलाहाबाद वि०

आशा गुप्त १२८ क
सगुण और निर्गुण भक्ति-साहित्य का अध्ययन.
१६६२, इलाहाबाद वि०

जगमोहन राय १२८ ख
हिन्दी का पद-साहित्य.
१६६२, हिन्दू वि०

रतिभानु सिंह १२८ ग
हिन्दी भक्ति-साहित्य के सन्दर्भ में भक्ति-आन्दोलन का अध्ययन.
१६६२, इलाहाबाद वि०

अष्टछाप

दीनदयालु गुप्त, १६०५— १२६
अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय. प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, १६४७.
२ जि०. २४ से०. २०.००
डी० लिट्०, १६४४, इलाहाबाद वि०

श्यामेन्द्रप्रकाश शर्मा १३०
अष्टछाप के कवियों में ब्रज संस्कृति.
१६५८, अलीगढ़ वि०

मायारानी टण्डन, १६३७— १३१
अष्टछापका सांस्कृतिक मूल्याङ्कन. लखनऊ, हिन्दी साहित्य भण्डार, १६६०.
६३१पृ०, २५से०. २५.००
संक्षिप्त रूप में भी प्रकाशित. १६५६, लखनऊ वि०

कृष्ण भक्ति

उषा गुप्ता १३२
हिन्दी के कृष्ण भक्तिकालीन साहित्य में सङ्गीत. लखनऊ, हिन्दी-विभाग-लखनऊ वि० वि०, १६६०. xxx, ३६३पृ०, २४से०. (सेठ भोलाराम सेकसरिया-स्मारक ग्रंथमाला, ६).
१६५५, लखनऊ वि०

ललितेश्वर झा, १९२६– १३३
मैथिली के कृष्ण-भक्त कवियों का अध्ययन.

१९५७, लखनऊ वि०

बालमुकुन्द गुप्त, १९०९– १३४
हिन्दी में कृष्ण-काव्य का विकास.

१९५८, आगरा वि०

गिरिधारीलाल शास्त्री, १९२३– १३५
हिन्दी कृष्ण भक्ति–काव्य की पृष्ठभूमि.

१९५९, अलीगढ़ वि०

द्वारिकाप्रसाद मीतल १३६
भक्तिकालीन कृष्ण–काव्य में राधा का स्वरूप.

१९५९, अलीगढ़ वि०

शरणबिहारी गोस्वामी १३७
हिन्दी कृष्ण–भक्ति काव्य में सखी भाव.

१९५९, आगरा वि०

हरीसिंह १३८
हिन्दी के कृष्ण–काव्य को मुसलमानों की देन.

१९५९, अलीगढ़ वि०

राजकुमारी मित्तल, १९३४– १३९
हिन्दी के भक्तिकालीन कृष्ण साहित्य मे रीतिकालीन काव्य-परम्परा.

१९६०, दिल्ली वि०

सरोजिनीदेवी कुलश्रेष्ठ १४०
मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में कृष्ण (विकास वार्ता).

१९६०, आगरा वि०

सावित्री सिन्हा, १९२३– १४१
ब्रजभाषा के कृष्ण-भक्ति काव्य में अभिव्यञ्जना-शिल्प. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९६१. xiv,४९१पृ०,२४से०. २०.००

डी० लिट्०, १९६०, दिल्ली वि०

रूपनारायण, १९३२—

ब्रजभाषा के कृष्णकाव्य में माधुर्य-भक्ति—१५५०–१६५०वि. दिल्ली, यंगमैन ऐंड कं०, १९६२. xx,५०६पृ०,२३से०. १२.५० **१४२**

१९६१, दिल्ली वि०

निर्गुण काव्य

पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, १९०२-१९४३—

हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, अनु० परशुराम चतुर्वेदी. लखनऊ, अवध पब्लिशिंग हाउस,१९५०. xic,४४२पृ०,१८से०. **१४३**

मूल : द निर्गुण स्कूल ऑफ हिन्दी पोइट्री, १९३६.

डी० लिट्०, १९३४, हिन्दू वि०

गोविन्द त्रिगुणायत, १९२४—

हिन्दी की निर्गुण काव्यधारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि. कानपुर, साहित्य निकेतन,१९६१. xx,७३५पृ०,२१.५से०. २५.००. **१४४**

डी लिट्०, १९५७, आगरा वि०

मोतीसिंह

निर्गुण साहित्य : सांस्कृतिक पृष्ठभूमि. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९६२. xvi,३२५पृ०,२२से०. ७.५०. **१४५**

१९५८, हिन्दू वि०

शान्तिस्वरूप त्रिपाठी, १९२९—

निर्गुण काव्य पर शङ्कर के अद्वैत वेदान्तका प्रभाव. **१४६**

१९५९, लखनऊ वि०

श्यामसुन्दर शुक्ल

हिन्दी काव्य की निर्गुण धारा में भक्ति का स्वरूप. **१४७**

१९६०, हिन्दू वि०

राम काव्य

बुल्के, कामिल, १९०९—

राम-कथा—उत्पत्ति और विकास.२रा सं०. प्रयाग, हिन्दी परिषद्—इलाहाबाद वि० वि०, १९६२. xxiv,८२०पृ०,२२से०. २०.०० **१४८**

प्रथम सं०, १९५०.

C. Bulcke

१९४९, इलाहाबाद वि०

रामनिरंजन पाण्डेय, १९१२— **१४९**

राम-भक्ति शाखा. हैदराबाद, नवहिन्द पब्लिकेशन्स,१९६०. xiv, ५३६पृ०,२३से०. २०.००

१९५६, नागपुर वि०

भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव', १९१२— **१४९ क**

राम-भक्ति साहित्य में मधुर उपासना. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, १९५८. ४४७पृ०,मुखचित्र,२४.५से०. १०.२५

१९५८, बिहार वि०

राम अवतार **१५०**

राम-भक्ति और उसकी हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्ति—१२००–१७०० ई०

१९६०, इलाहाबाद वि०

रामशरण बत्रा **१५१**

राम-काव्य में सामाजिक तथा दार्शनिक पृष्ठभूमि—१६वीं तथा १७वीं शती.

१९६०, अलीगढ़ वि०

शुभकारनाथ कपूर **१५१ क**

बीसवीं शताब्दी के राम-काव्य.

१९६२, लखनऊ वि०

संत काव्य

धर्मवीर भारती, १९२६— **१५२**

सिद्ध साहित्य. इलाहाबाद, किताब महल,१९५५. ५४४पृ०,२१.५से०. १०.००

१९५३, इलाहाबाद वि०

रामखेलावन पाण्डेय, १९१३— **१५३**

मध्यकालीन सन्त-साहित्य.

डी० लिट्०, १९५३, पटना वि०

जयराम मिश्र १५४

श्रीगुरु ग्रन्थ दर्शन. इलाहाबाद, साहित्य भवन लिमि०, १९६०. ix, ३५८पृ०, २२से०. ८.००

१९५६, आगरा वि०

धर्मपाल आष्टा १५५

(द) पोइट्री ऑफ दशम ग्रन्थ. नई दिल्ली, अरुण प्रकाशन, १९५९. xvi, ३१३, ५४ पृ०, २७.५से०. ५०.००

१९५८, पंजाब वि०

धर्मपाल मैनी १५६

(श्री) गुरु ग्रन्थ साहब में उल्लखित सन्त कवियों के धार्मिक विश्वासों का अध्ययन,.

१९५९, हिन्दू वि०

रामकुमार शुक्ल १५६ क

गुरु ग्रन्थ साहित्य.

१९५९, नागपुर वि०

ओम्प्रकाश शर्मा, १९३६— १५७

सन्त साहित्य की लौकिक पृष्ठभूमि.

१९६१, इलाहाबाद वि०

केशनीप्रसाद चौरसिया, १९३०— १५८

मध्यकालीन हिन्दी सन्त साहित्य की साधना पद्धति—१३७५–१७०० वि०

१९६१, इलाहाबाद वि०

सुदर्शनसिंह मजीठिया, १९२५— १५९

सन्त साहित्य. दिल्ली, रूपकमल प्रकाशन, १९६२. x, ४०४पृ०, २३से०. १६.००

मूल : मध्यकालीन हिन्दी और पंजाबी सन्तों की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन.

१९६१, नागपुर वि०

रत्नसिंह जग्गी १६०

दशम ग्रन्थ पर पौराणिक प्रभावों का अध्ययन.

१९६२, पंजाब वि०

सूफी काव्य

कमल कुलश्रेष्ठ (पृथ्वीनाथ), १९२०— १६१

हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य——१५००–१७५०. अजमेर,मानसिंह प्रकाशन, १९५३. ४२७पृ०,ग्रंथपुटी,१९से०. ७.५०

१९४७, इलाहाबाद वि०

विमलकुमार जैन, १९१२– १६२

सूफीमत और हिन्दी साहित्य. दिल्ली, आत्माराम, १९५५. ii,२७१ पृ०,२१ से०. ८.००.

१९५१, दिल्ली वि०

हरिकान्त श्रीवास्तव १६३

भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य——१०००-१९१२ ई०. २रा सं०. वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९६१. vi,४८१पृ०,२२ से०. १०.०० प्रथम सं० १९५५.

१९५१, लखनऊ वि०

विमला वाघ्रे १६४

दखिनी हिन्दी के सूफी कवि.

१९५४, इलाहाबाद वि०

सरला शुक्ल, १९२७—— १६५

जायसी के परवर्ती हिन्दी-सूफी कवि और काव्य. लखनऊ,लखनऊ वि०वि० हिन्दी विभाग, १९५६. viii,६३०पृ०,२४से०. १२.००.
(सेठ भोलाराम सेकसरिया-स्मारक ग्रन्थमाला, ६).

१९५४, लखनऊ वि०

श्याममनोहर पाण्डेय १६६

मध्ययुगीन प्रेमाख्यान——१४००–१७०० ई०. इलाहाबाद,मित्र प्रकाशन, १९६२. xxiv,२९६पृ०,२२.५से०. १०.००

१९६०, इलाहाबाद वि०

रामपूजन तिवारी, १९१४— १६६ क
सूफी मत:साधना और साहित्य. बनारस, ज्ञान मण्डल, १९५६. xvi, ५७५पृ०,१८.५से०. ११.००
१९६२, नागपुर वि०

तुलनात्मक अध्ययन

जगदीश गुप्त, १९२४— १६७
गुजराती और ब्रजभाषा कृष्ण-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन—१५-१७वीं शती. इलाहाबाद, इलाहाबाद वि० वि०–हिन्दी परिषद्, १९५७. ii,५३०पृ०,२२से०. ८.००.
१९५३, इलाहाबाद वि०

भास्करन् नायर, के०, १९१३— १६८
हिन्दी और मलयालम में कृष्ण-भक्ति काव्य. दिल्ली, राजपाल एण्ड संस, १९६०. ३३८पृ०,२२से०. १०.००
१९५५, लखनऊ वि०

रत्नकुमारी १६९
सोलहवीं शती के हिन्दी और बंगाली वैष्णव कवि. दिल्ली, भारतीय साहित्य मंदिर, १९५६. iii,४९०पृ०,२१से०.
१९५५, इलाहाबाद वि०

हिरण्मय १७०
हिन्दी और कन्नड़ में भक्ति–आन्दोलन का तुलनात्मक अध्ययन. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, १९५९. ix,३९०पृ०,२१से०. १०.००
१९५६, हिन्दू वि०

रामनाथ त्रिपाठी १७१
कृत्तवासी-बँगला-रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन. अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर १९६३. xxiii,३३०पृ०,२४से०. १०.००
१९५७, आगरा वि०

प्रभाकर (बलवन्त) माचवे, १९१७— १७२
हिन्दी और मराठी का निर्गुण सन्त–काव्य. वाराणसी, चौखम्बा विद्या भवन, १९६२. ४३९पृ०,२२से.
१९५८, आगरा वि०

कमला सांकृत्यायन **१७३**

महाकवि भानुभक्त के नेपाली रामायण और गो० तुलसीदास के रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन.

१९५९, आगरा वि०

मालतीबाई श्रीखण्डे, श्रीमती **१७४**

हिन्दी और मराठी के सन्त-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन.

१९५९, सागर वि०

विश्वनाथ अय्यर, एन० ई० **१७५**

आधुनिक हिन्दी और मलयालम काव्य का तुलनात्मक अध्ययन.

१९५९, सागर वि०

शङ्कुरराजू नायुडु, सु०, १९२०—— **१७५ क**

कम्ब रामायणम् और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन.

१९५९, मद्रास वि०

मनोहर काले **१७६**

आधुनिक हिन्दी और मराठी काव्य-शास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन.
बम्बई, हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर, १९६३.

१९६०, दिल्ली वि०

रामप्रकाश अग्रवाल, १९१९—— **१७७**

बाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस का साहित्यिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन.
संस्कृत विभाग से.

१९६०, आगरा वि०

रामप्रसाद शर्मा **१७८**

उपनिषदों और हिन्दी काव्य की निर्गुण धारा का तुलनात्मक और आलोचनात्मक अध्ययन.
संस्कृत विभाग से.

१९६०, आगरा वि०

लालजी शुक्ल **१७९**

शङ्करदेव तथा माधवदेव के विशिष्ट सन्दर्भ में असमिया और हिन्दी वैष्णव-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन—१६वीं शती.

१९६०, इलाहाबाद वि०

नगेन्द्रनाथ उपाध्याय, १६३२— **१८०**
नाथ और सन्त साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन.
१६६१, हिन्दू वि०

वेङ्कटेश्वर रेड्डी, कोल्लि **१८१**
कबीर और वेमना का तुलनात्मक अध्ययन.
१६६१, लखनऊ वि०

अरविन्दकुमार देसाई **१८१ क**
भारतेन्दु और नर्मद—एक तुलनात्मक अध्ययन.
१६६२, आगरा वि०

ओम्प्रकाश दीक्षित **१८१ ख**
जैनकवि स्वयंभु-कृत पउमचरिउ एवं रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन.
१६६२, आगरा वि०

जार्ज, एम० **१८१ ग**
तुलसीदास और रामभक्ति सम्प्रदाय के प्रसिद्ध मलयालम कवि एडुतच्छन का तुलनात्मक अध्ययन.
१६६२, आगरा वि०

पंजाबीलाल शर्मा **१८१ घ**
रीतिकालीन निर्गुणभक्ति-काव्य.
१६६२, आगरा वि०

सुशीला धीर **१८१ ङ**
हिन्दी और गुजराती निर्गुण सन्त-काव्य.
१६६२, आगरा वि०

हरवंशलाल शर्मा **१८१ च**
हिन्दी और पंजाबी निर्गुण-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन.
१६६२, आगरा वि०

और देखिये—उपन्यासों की तुलना २८०,२८५. नाटकों की तुलना ३०२.
व्याकरणों की तुलना ३६७.

'प्रभावों' का अध्ययन

सरनामसिंह शर्मा 'अरुण', १६१७– १८२

हिन्दी साहित्य पर संस्कृत का प्रभाव—१४००–१६००ई०. प्रयाग, रामनारायण लाल, १६५२. x,२७०पृ०,२१.५से०. ५.००

१६४६, राजस्थान वि०

विश्वनाथ (मिश्र), १६२३— १८३

हिन्दी भाषा और साहित्य पर अंग्रेजी प्रभाव.—१८७०–१६२०. देहरादून, साहित्य सदन,१६६३. ३८८पृ०,२०से०. १२.५०

१६५०, इलाहाबाद वि०

रामसिंह तोमर १८४

प्राकृत अपभ्रंश साहित्य और उसका हिन्दी साहित्य पर प्रभाव.

१६५१, इलाहाबाद वि०

रवीन्द्रसहाय वर्मा १८५

हिन्दी काव्य पर आँग्ल प्रभाव. कानपुर, पद्मजा प्रकाशन,१८५४. iv, २८५ पृ०, २१ से०.
अंग्रेजी विभाग से.

१६५३, इलाहाबाद वि०

पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिन्दी पर उसका प्रभाव. गोरखपुर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १६६०. १६०,४पृ०,२२ से०. ५.००
'हिन्दी काव्य पर आँग्ल प्रभाव' का पूरक भाग.

विनयमोहन शर्मा, १६०५— १८६

हिन्दी को मराठी सन्तों की देन. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, १६५७. xxxiii,५००पृ०,२४से०.

१६५६, नागपुर वि०

सुधाकर चट्टोपाध्याय १८७

आधुनिक हिन्दी साहित्ये बाँगलार स्थान, भाग १. कलकत्ता, शरत् पुस्तकालय, १६५७. xii,१११पृ०,२१से०.
मूल अंग्रेजी प्रबन्ध के एक अंश का बँगला रूपान्तर.

१६–?, कलकत्ता वि०

शशि अग्रवाल १८८
हिन्दी कृष्ण-भक्ति काव्य पर पुराणों का प्रभाव. इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९६०. २८३पृ०,२३से०. ६.००

१९५७, इलाहाबाद वि०

इन्द्रावती सिन्हा १८९
पौराणिकता का हिन्दी साहित्य में प्रभाव.

१९५८, आगरा वि०

रमेशकुमार शर्मा १९०
रीति कविता का आधुनिक हिन्दी कविता पर प्रभाव.

१९५८, आगरा वि०

सरला (देवी) त्रिगुणायत, १९२० १९१
हिन्दी के मध्ययुगीन साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव.

१९५८, आगरा वि०

अम्बाशङ्कर नागर, १९२५— १९२
गुजरात की हिन्दी सेवा.

१९५९, राजस्थान वि०

केशवचन्द्र सिन्हा १९३
हिन्दी उपन्यास पर बँगला उपन्यास का प्रभाव.—१८७५–१९३६.

१९५९, इलाहाबाद वि०

प्रेमसागर जैन, १९२४— १९४
जैन भक्ति-काव्य की पृष्ठभूमि, वाराणसी,भारतीय ज्ञानपीठ, १९६३. २२३पृ०,२१.५से०. ६.००.
यह प्रथम खंड.

१९५९, आगरा वि०

विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, १९२५— १९५
सन्त वैष्णव काव्य पर तान्त्रिक प्रभाव. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९६२. xvi,४७२पृ०,२२.५से०. १५.००.

१९५९, आगरा वि०

किरणकुमारी गुप्ता, १६२०— १६६
विशिष्टाद्वैत और उसका हिन्दी के भक्तिकाव्य पर प्रभाव.
संस्कृत विभाग से. डी० लिट्०, १६६०, आगरा वि०

कीर्तिलता १६७
भारत का स्वतन्त्रता प्राप्ति सम्बन्धी आन्दोलन और हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव.—१८८५–१९४७ ई०.
१६६०, इलाहाबाद वि०

कोमलसिंह सोलङ्की, १६२७— १६८
हिन्दी के निर्गुण सन्त कवियों पर नाथ पन्थ का प्रभाव.
१६६०, विक्रम वि०

नटवरलाल अम्बालाल व्यास १६६
गुजरात के कवियों की हिन्दी काव्य-साहित्य को देन.
१६६०, (हिन्दी इंस्टीट्यूट), आगरा वि०

ब्रह्मानन्द, १६३२— २००
बँगला (भाषा और साहित्य) पर हिन्दी (भाषा और साहित्य) का प्रभाव. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १६६२. viii,३६६पृ०,२३से०. १५.००.
१६६०, (हिन्दी इंस्टीट्यूट), आगरा वि०

धन्यकुमार जैन २०१
प्राचीन हिन्दी साहित्य पर जैन साहित्य का प्रभाव.
१६६१, अलीगढ़ वि०

रामदेव ओझा २०२
नाथ-सम्प्रदाय का मध्यकालीन हिन्दी-भाषा और साहित्य पर प्रभाव.
१६६१, गोरखपुर वि०

एस० एल० जायसवाल २०३
उत्तर युद्धकालीन हिन्दी गद्य पर समाजवाद का प्रभाव.
१६६१, जबलपुर वि०

विश्वनाथ शुक्ल, १९२७— २०४

श्रीमद्भागवत का हिन्दी कृष्ण-भक्ति साहित्य पर प्रभाव.

१९६१, अलीगढ़ वि०

धर्मपाल २०४ क

हिन्दी साहित्य पर राष्ट्रीय आन्दोलनों का प्रभाव—१९०६–१९४७ ई०.

१९६२, पंजाब वि०

रामकरण मिश्र २०४ ख

हिन्दी साहित्य पर बीसवीं शताब्दी की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रभाव.

१९६२, सागर वि०

सुरेशचन्द्र जैन २०४ ग

आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता का विकास.

१९६२, सागर वि०

सुषमा नारायण २०४ घ

भारतीय राष्ट्रवाद की हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्ति.

१९६२, दिल्ली वि०

और देखिये—उपन्यास पर प्रभाव १९३. रीतिकाव्य पर प्रभाव ८७. नाटकों पर प्रभाव २९७, ३०४, ३०५. अलंकारों पर प्रभाव ३२१.

'वादों' का अध्ययन

ब्रजमोहन गुप्त २०५

हिन्दी काव्य में रहस्यवादी प्रवृत्तियाँ—१४००–१७००ई०तक. दिल्ली, गौतम साहित्य निकेतन, तिथि नहीं. १११पृ०,२१से०. ४.००

संक्षिप्त.

१९४६, इलाहाबाद वि०

प्रेमनारायण शुक्ल, १९१४— २०६

हिन्दी साहित्य में विविध वाद. कानपुर, पद्मजा प्रकाशन, १९५३. xvi, ५२६पृ०,२१.५से०. ९.००

१९५२, आगरा वि०

चन्द्रकला २०७
आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीकवाद—विशेषतः पन्त-प्रसाद-निराला और महादेवी के काव्य का अध्ययन.

१९५४, राजस्थान वि०

कपिलदेव पाण्डेय २०८
मध्यकालीन साहित्य में अवतारवाद.

१९५९, हिन्दू वि०

विद्या सिंह, श्रीमती, १९३०— २०९
हिन्दी काव्य में रहस्यवाद.

१९५९, लखनऊ वि०

विश्वनाथ गौड़, १९२१— २१०
आधुनिक हिन्दी काव्य में रहस्यवाद. वाराणसी, नन्दकिशोर, १९६१. xvi,२७८,५पृ०,२१से०. ७.००.

१९५९, आगरा वि०

बलभद्र तिवारी २११
आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी प्रवृत्तियाँ. वाराणसी, नन्दकिशोर ऐण्ड सन्स, १९६२.

१९६०, सागर वि०

रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', १९२७— २१२
हिन्दी काव्य में नियतिवाद—१०५०–२००० वि०.

१९६०, आगरा वि०

रामनारायण पाण्डेय २१३
हिन्दी काव्य में रहस्यवाद.

१९६०, इलाहाबाद वि०

रामसिंह २१४
हिन्दी कविता में ज्ञानवादी प्रवृत्तियाँ.

१९६०, दिल्ली वि०

वीरेन्द्रसिंह, १९३५— २१५
हिन्दी काव्य में प्रतीकवाद का विकास—१९००–१९४० ई०.

१९६०, इलाहाबाद वि०

और देखिये—आधुनिक काव्य में निराशावाद २४०, यथार्थवाद ३०७.

सम्प्रदाय और उनके कवि

शीलवती मिश्र २१६

हिन्दी सन्तों पर वेदान्त-सम्प्रदायों का ऋण—तुलसी-कबीर-सूर के सन्दर्भ में.

१९४८, इलाहाबाद वि०

बदरीनारायण श्रीवास्तव, १९२६— २१७

रामानन्द सम्प्रदाय तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव. इलाहाबाद, इलाहाबाद वि० वि०-हिन्दी परिषद्, १९५७. xxx,५१५पृ०,२२से०. ८.००.

१९५५, आगरा वि०

रामचन्द्र तिवारी २१८

शिवनारायणी सम्प्रदाय के हिन्दी कवि.

१९५६, लखनऊ वि०

विजयेन्द्र स्नातक, १९१४— २१९

राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९५७. xxiv,६१२पृ०,२५से०.

१९५६, दिल्ली वि०

शान्तिप्रसाद चन्दोला २२०

नाथ सम्प्रदाय के हिन्दी कवि.

१९५६, लखनऊ वि०

भगवतीप्रसाद सिंह २२१

राम-भक्ति में रसिक सम्प्रदाय. बलरामपुर, अवध साहित्य मंदिर, १९५७. xxxii,६२५पृ०,फलक, २३से०. १५.००

पं० गोपीनाथ कविराज कृत भूमिका.

डी० लिट्०, १९५८, आगरा वि०

नारायणदत्त शर्मा, १९१४— २२२

निम्बार्क सम्प्रदाय और उसके कृष्ण-भक्त हिन्दी कवि. प्रयाग, निम्बार्क

प्रतिष्ठान, १९६३. ८००पृ०,२४से०. १५.००

१९५९, आगरा वि०

भगवतीप्रसाद शुक्ल, १९२६— २२३

बावरी पन्थ के हिन्दी कवि : एक अध्ययन.

१९६१, लखनऊ वि०

मीरा श्रीवास्तव २२४

मध्ययुगीन हिन्दी कृष्ण-भक्ति-धारा और चैतन्य सम्प्रदाय.

१९६१, इलाहाबाद वि०

राधिकाप्रसाद त्रिपाठी, १९३६— २२५

रामस्नेही सम्प्रदाय.

१९६१, गोरखपुर वि०

और देखिये—हरिदासी सम्प्र० १०१, रविदास. . .सम्प्र० ८४.

काव्य और साहित्य में नारी

शैलकुमारी (माथुर), १९२५— २२६

आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी भावना—१९००–१९४५. इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५१. viii,२६४पृ०,२४.५से०.

१९४९, इलाहाबाद वि०

रघुनाथ सिंह, १९१६— २२७

आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी—१८५७–१९३६ ई०.

१९५६, हिन्दू वि०

उषा पाण्डेय, १९३१— २२८

मध्यकालीन काव्यमें नारी-भावना. दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार,१९५९. iv,२४२पृ०,२१.५से०. १०.००.

१९५७, इलाहाबाद वि०

श्यामसुन्दर (यादोराम) व्यास, १९२९— २२९

हिन्दी महाकाव्यों में नारी-चित्रण. मथुरा, साहित्य सङ्गम, १९६३. ३५०पृ०,२३से०. १२.५०.

१९५९, आगरा वि०

सरलादेवी २३०

आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी.

१९५९, आगरा वि०

गजानन शर्मा, १९२२— २३० क

भक्तिकालीन काव्य में नारी.

१९६२, सागर वि०

शान्तिदेवी श्रीवास्तव २३० ख

भक्तियुगीन साहित्य में नारी.

१९६२, लखनऊ वि०

और देखिये—उपन्यासों में नारी २८७, २९०. नाटकों में नारी ३१६. महाकाव्यों में नारी २२९. प्रसाद के नारी पात्र २९. प्रेमचन्द की नारी ६१.

काव्य में नीति

भोलानाथ तिवारी, १९२३— २३१

हिन्दी नीति-काव्य. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९५८. ४२३पृ०, २२से०. १०.००

१९५६, इलाहाबाद वि०

रामस्वरूप शास्त्री 'रसिकेश', १९०७— २३२

हिन्दी में नीति-काव्य का विकास.

१९५९, दिल्ली वि०

देवीशरण रस्तोगी २३३

हिन्दी नीति-काव्य : आदिकाल से भारतेन्दु तक.

१९६०, आगरा वि०

काव्य में प्रकृति

किरणकुमारी गुप्ता, १९२०— २३४

हिन्दी काव्य में प्रकृति-चित्रण. इलाहाबाद, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, १९४९. x,४८४,८पृ०,२२से०. ६.००

१९४८, आगरा वि०

रघुवंश (सहाय वर्मा) २३५

प्रकृति और काव्य—हिन्दी मध्य-युग.२रा सं०. दिल्ली नेशनल पब्लि-शिंग हाउस, १६६०. ४२४पृ०,२३से०. १२.००

प्रथम सं० १६४६.

१६४८, इलाहाबाद वि०

लालताप्रसाद सक्सेना, १६२४— २३६

हिन्दी-काव्यमें मानव और प्रकृति. लखनऊ,हिन्दी साहित्य भण्डार,१६६२. ii,४६६पृ०,२६से०. १६.००.

१६५६, लखनऊ वि०

ओम्प्रकाश २३६ क

हिन्दी गद्य-साहित्य में प्रकृति-चित्रण.

१६६२, आगरा वि०

आधुनिक काव्य

केशरीनारायण शुक्ल, १६१६— २३७

आधुनिक काव्य-धारा. ४ था सं०. वाराणसी, सरस्वती मन्दिर, १६६१. xvi,२२६पृ०,२२से०. ६.००.

प्रथम सं० १६४३. डी० लिट्०, १६४०, हिन्दू वि०

सुधीन्द्र (ब्रह्मदत्त मिश्र), १६१७-१६५४— २३८

हिन्दी कविता में युगान्तर—१६०१–१६२०. दिल्ली, आत्माराम ऐण्ड सन्स, १६५०. xviii,५२२पृ०,२२से०. ८.००

१६५०, राजस्थान वि०

रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण', १६१६— २३६

आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १६५८. viii,४६८पृ०,२२से०. १२.५०.

संशो० और परि० रूप में.

१६५५, आगरा वि०

शम्भुनाथ पाण्डेय, १६२३— २४०

आधुनिक हिन्दी साहित्य में निराशावाद. आगरा, आगरा बुक स्टोर, १६५५. iv,४२४पृ०,२१से०.

१६५५, आगरा वि०

अविनाशप्रसाद अग्रवाल २४१
भारतेन्दुयुगीन हिन्दी-कवि.

१९५६, लखनऊ वि०

आशा गुप्ता २४२
खड़ी बोली काव्य में अभिव्यञ्जना. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९६१. x,४७९पृ०, २३ से०. १६.००

१९५९, पंजाब वि०

कैलाश (चन्द्र) वाजपेयी २४३
आधुनिक हिन्दी-कविता में शिल्प. दिल्ली, आत्माराम, १९६३. viii, ३४९पृ०,२२से०. १२.००

१९५९, लखनऊ वि०

गोपालदत्त सारस्वत २४४
आधुनिक हिन्दी काव्य में परम्परा तथा प्रयोग—१९२०–१९५० ई०. इलाहाबाद, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, १९६१. xxii,४९५पृ०,२३से०. १५.००.

१९५९, आगरा वि०

नित्यानन्द शर्मा, १९२१— २४५
आधुनिक हिन्दी-काव्य में प्रतीक-विधान—१८७५–१९३५ ई०.

१९५९, आगरा वि०

मधुरमालती सिंह २४६
आधुनिक हिन्दी काव्य में विरह-भावना.

१९५९, दिल्ली वि०

मोहनलाल अवस्थी २४७
आधुनिक काव्य का शिल्प—१९००–१९४०ई०. प्रयाग, हिन्दी परिषद्–प्रयाग वि० वि०, १९६१. ८.००

१९५९, इलाहाबाद वि०

शिवकुमार मिश्र, १९३१— २४८
नया हिन्दी काव्य. कानपुर, अनुसन्धान प्रकाशन, १९६२. xxi,४२४, १०पृ०,२३से०. १६.००.

मूल : छायावाद युग के पश्चात् हिन्दी काव्य की विविध विकास दिशाए.
१९५९, सागर वि०

सुरेशचन्द्र गुप्त, १९३३—— २४९
आधुनिक हिन्दी कवियों के काव्य-सिद्धान्त. दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार (अनुसन्धान परिषद्—दिल्ली वि० वि० के लिये), १९६०. ६००पृ०, २३से०. २५.००.

१९५९, दिल्ली वि०

कमलारानी तिवारी २५०
आधुनिक हिन्दी काव्य में सौन्दर्य बोध.
१९६०, लखनऊ वि०

बीरबल सिंह 'रत्न' २५१
हिन्दी की छायावादी कविता के कला-विधान का विवेचन.
१९६०, आगरा वि०

शम्भुनाथ चतुर्वेदी, १९३७—— २५२
स्वातन्त्र्य–प्राप्ति के अनन्तर हिन्दी-काव्य.
१९६०, लखनऊ वि०

निर्मला जैन २५३
आधुनिक हिन्दी काव्य में रूप-विधाएँ. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस १९६३.
१९६१, दिल्ली वि०

रामप्रसाद मिश्र २५४
खड़ी बोली काव्य में विरह-वर्णन. आगरा, सरस्वती पुस्तक सदन, १९६२.
१९६१, आगरा वि०

शङ्करदेव अवतरे २५५
हिन्दी साहित्य में काव्य-रूपों के प्रयोग—२०वीं शताब्दी. दिल्ली, राजपाल, १९६२. ३६१पृ०, २२से०. १२.००.
१९६१, हिन्दू वि०

शैल श्रीवास्तव, २५६
आधुनिक काव्य में कवि-कल्पना का स्वरूप और उसकी विवेचना.
१९६१, गोरखपुर वि०

उर्वशी सुरती २५७

आधुनिक हिन्दी कविता में मनोविज्ञान.

१९६२, बम्बई वि०

परशुराम शुक्ल 'विरही' २५७ क

आधुनिक हिन्दी-काव्य में यथार्थवाद—भारतेन्दु से १९५० ई० तक.

१९६२, आगरा वि०

राजेन्द्रप्रसाद मिश्र २५७ ख

आधुनिक काव्य और वादों का तुलनात्मक अध्ययन.

१९६२, सागर वि०

राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी २५७ ग

आधुनिक कविता की मूल प्रवृत्तियाँ.

डी० लिट्०, १९६२, आगरा वि०

विद्यारामकमल मिश्र २५७ घ

आधुनिक स्वच्छन्दतावादी काव्य का अनुशीलन.

१९६२, सागर वि०

सरोजिनीदेवी अग्रवाल २५७ ङ

आधुनिक हिन्दी काव्य में गीत-भावना का विकास.

१९६२, लखनऊ वि०

काव्य में अन्य प्रवृत्तियाँ

टीकमसिंह तोमर, १९१३— २५८

हिन्दी वीर काव्य—१६००—१८०० ई०. इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५४. iv,४१२पृ०,२४से०. १५.००

१९५२, इलाहाबाद वि०

दयाशङ्कर शर्मा, १९२४— २५९

हिन्दी में पशु-चारण काव्य.

१९५४, आगरा वि०

ओम्प्रकाश (कुलश्रेष्ठ), १९२४— २६०

हिन्दी काव्य और उसका सौन्दर्य. दिल्ली, भारती साहित्य मन्दिर, १९५७.

x,२६८पृ०,२२से०. ८.००
यह ग्रन्थ का दूसरा भाग है. प्रथम भाग देखिये—३१६

१६५१, आगरा वि०

रामयतन सिंह, १६१८— **२६१**
हिन्दी कविता में कल्पना–विधान.

१६५७, नागपुर वि०

उमा मिश्र **२६२**
काव्य और सङ्गीत का पारस्परिक सम्बन्ध–१७००–१६०० वि०. दिल्ली, पुस्तक सदन,१६६२. ४०२पृ०,२२.५से०. १२.५०.
मूल : रीतिकालीन काव्य और सङ्गीत का पारस्परिक सम्बन्ध.

१६५८, दिल्ली वि०

संसारचन्द्र (मलहोत्रा) **२६३**
हिन्दी काव्य में अन्योक्ति. दिल्ली, राजकमल, १६६०. xiv,३५२ पृ०, २१.५ से०. १२.५०.

१६५८, पंजाब वि०

कृष्णकुमार मिश्र **२६४**
हिन्दी पद्य-साहित्य का विकास.

१६५६, हिन्दू वि०

रामबाबू शर्मा, १६३०— **२६५**
पन्द्रहवीं शताब्दी से सत्तरहवीं शताब्दी तक हिन्दी साहित्य के काव्य-रूपों का अध्ययन.

१६५६, (हिन्दी इंस्टीट्यूट), आगरा वि०

हरभजन सिंह **२६६**
गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिन्दी-काव्य का आलोचनात्मक अध्ययन. दिल्ली, भारती साहित्य मन्दिर, १६६३ ?

१६५६, दिल्ली वि०

के० सी० डी० यजुर्वेदी **२६७**
ध्रुवपद और हिन्दी साहित्य.

१६६०, आगरा वि०

देवीशङ्कर अवस्थी, १९३०— २६८

अठारहवीं शती के ब्रजभाषा काव्य में प्रेमा-भक्ति. बम्बई, हिन्दी ग्रंथ-रत्नाकर, १९६३ ?

१९६०, आगरा वि०

दयाशङ्कर शुक्ल २६९

हिन्दी का समस्यापूर्त्ति काव्य.

१९६१, लखनऊ वि०

सत्यवती गोयल २७०

मध्यकालीन हिन्दी कविता में दोहा.

१९६१, राजस्थान वि०

सुरेन्द्रबहादुर त्रिपाठी २७१

मध्यकालीन हिन्दी कविता में भारतीय संस्कृति—१७००–१९०० ई०.

१९६१, गोरखपुर वि०

कथा-साहित्य का अध्ययन

लक्ष्मीनारायण लाल, १९२५— २७२

हिन्दी कहानियों की शिल्प-विधि का विकास. इलाहाबाद, साहित्य भवन लि०, १९५३. xiv,३९२पृ०,२१.५से०. १०.००

१९५२, इलाहाबाद वि०

ब्रह्मदत्त शर्मा, १९१२— २७३

हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन. आगरा,सरस्वती पुस्तक सदन, १९५८. xvi,३८६,३६पृ०,२०से०. १०.००.

१९५४, आगरा वि०

देवराज उपाध्याय, १९०८— २७४

आधुनिक हिन्दी कथा–साहित्य और मनोविज्ञान. इलाहाबाद, साहित्य भवन,१९५६. xvi,३५२पृ०,२१से०. १०.००

१९५५, राजस्थान वि०

इन्द्रावती ग्रोवर, श्रीमती २७५

हिन्दी उपन्यास में नारी–चित्रण—१९५० तक.

१९५८, आगरा वि०

गणेशन्, एस० एन०, १९३०— **२७५क**
हिन्दी उपन्यास साहित्यका अध्ययन—पाश्चात्य उपन्यास से तुलना. दिल्ली, राजपाल, १९६२. ४६१पृ०,२२से०. १२.००.
१९५८, हिन्दू वि०

गोविन्दप्रसाद शर्मा **२७५ख**
हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन.
१९५८, नागपुर वि०

प्रतापनारायण टण्डन, १९३२— **२७६**
हिन्दी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास. लखनऊ, हिन्दी साहित्य भण्डार, १९५८. ४२२पृ०,२४.५से०. १२.००.
१९५८, लखनऊ वि०

भीष्म साहनी **२७७**
हिन्दी-उपन्यास में नायक.
१९५८, पंजाब वि०

रणवीर (चन्द्र) राँग्रा **२७८**
हिन्दी उपन्यास में चरित्र-चित्रण का विकास. दिल्ली,भारती साहित्य मन्दिर, १९६१. xxiv,५६२पृ०,२३से०. १५.००.
१९५८, आगरा वि०

कैलाशप्रकाश **२७९**
प्रेमचन्द-पूर्व हिन्दी उपन्यास. दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार, १९६२. xii,३२४पृ०,२३से०. १२.५०
१९५९, दिल्ली वि०

शान्तिस्वरूप गुप्त **२८०**
हिन्दी तथा मराठी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन—१९००–१९५०.
१९५९, आगरा वि०

श्रीनारायण अग्निहोत्री, १९१२— **२८१**
हिन्दी उपन्यास साहित्य का शास्त्रीय विवेचन. आगरा, सरस्वती पुस्तक सदन,१९६१. xiii,३२८पृ०,२२से०. ८.५०.
१९५९, आगरा वि०

सीता हांडा २८२

आधुनिक हिन्दी साहित्य में आख्यायिका के विकास का विवेचनात्मक अध्ययन.

१९५९, राजस्थान वि०

सुषमा धवन २८३

हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्द तथा उत्तर प्रेमचन्द-काल—१९५५ तक. दिल्ली, राजकमल, १९६१. vi,३८८पृ०,२२.५से०. ११.००.

१९५९, पंजाब वि०

इन्द्रा जोशी २८४

हिन्दी उपन्यासों में लोकतत्त्व.

१९६०, (हिन्दी इंस्टीट्यूट), आगरा वि०

गङ्गा पाठक २८५

प्रेमचन्द और रमणलाल वसंतलाल देसाई के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन.

१९६०, आगरा वि०

चण्डीप्रसाद जोशी २८६

हिन्दी उपन्यास : समाजशास्त्रीय अध्ययन. कानपुर, अनुसन्धान प्रकाशन,१९६२. xvi,४६०पृ०,२४से०. १६.००.

१९६०, सागर वि०

बिन्दु अग्रवाल, श्रीमती, १९२८— २८७

हिन्दी उपन्यासों में नारी-चित्रण.

१९६०, इलाहाबाद वि०

शिवा भार्गव २८८

प्रेमचन्द उत्तरकालीन हिन्दी-उपन्यास.

१९६०, दिल्ली वि०

शारदा अग्रवाल २८९

द्विवेदीयुगीन उपन्यास.

१९६१, लखनऊ वि०

शैल रस्तोगी, १९२७— २९०

हिन्दी उपन्यास में नारी.

१९६१, हिन्दू वि०

सुखदेव शुक्ल २६१
हिन्दी उपन्यासों में नैतिक विचारों का विकास.
१६६१, लखनऊ वि०

ओम् शुक्ल २६१क
हिन्दी उपन्यासों की शिल्पविधि का विकास.
१६६२, लखनऊ वि०

कुसुम जायसवाल २६१ख
हिन्दी लघुकथाओं में सामाजिक तत्त्व.
१६६२, इलाहाबाद वि०

कुसुम वार्ष्णेय २६१ग
हिन्दी कथा-साहित्य में नायक की परिकल्पना.
१६६२, इलाहाबाद वि०

दामोदर २६१घ
हिन्दी-मलयालम के सामाजिक उपन्यास--१६००--१६६० ई०.
१६६२, सागर वि०

रामकुमारी जौहरी २६१ङ
हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी उपन्यास.
१६६२, सागर वि०

शिवनारायणलाल श्रीवास्तव २६१च
हिन्दी उपन्यासों का विकास.
१६६२, हिन्दू वि०

श्रीशङ्कर शेष २६१ छ
हिन्दी और मराठी कथा साहित्यका तुलनात्मक अध्ययन.
१६६२, नागपुर वि०

और देखिये---वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास ८६.

नाटक-साहित्य का अध्ययन

सोमनाथ गुप्त, १६०५-- २६२
हिन्दी नाटक-साहित्य का इतिहास. ४था सं०. इलाहाबाद, हिन्दी भवन,

१९५८. xxii,२७२पृ०,२३से०. ६.००.
प्रथम सं० १९४७.

१९४७, आगरा वि०

शिवनन्दन पाण्डेय २९३

भारतीय नाटक साहित्य का उद्भव और विकास.

१९५१, कलकत्ता वि०

दशरथ ओझा, १९०९— २९४

हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास.२रा सं०. दिल्ली राजपाल, १९५६. xxxii,५५६पृ०,१८.५से०. ९.००.
प्रथम सं० १९५४.

१९५२, दिल्ली वि०

वीरेन्द्रकुमार शुक्ल, १९२४— २९५

भारतेन्दु का नाट्य साहित्य. इलाहाबाद, रामनारायण लाल, १९५५. v,३९०पृ०,२२से०. ५.००

१९५२, सागर वि०

वेदपाल खन्ना 'विमल' २९६

हिन्दी नाटक का आलोचनात्मक अध्ययन. दिल्ली, भारत भारती लि०, १९५८. xiv,४०९पृ०,२२से०. १२.००.

१९५२, पंजाब वि०

धर्मकिशोर . लाल २९७

अंग्रेजी नाटकों का हिन्दी नाटकों पर प्रभाव.
अंग्रेजी विभाग से.

१९५३, इलाहाबाद वि०

देवर्षि सनाढ्य, १९१९— २९८

हिन्दी के पौराणिक नाटकों का आलोचनात्मक अध्ययन. वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन, १९६१. xxvi,३७६पृ०,२२से०. १०.००

१९५६, अलीगढ़ वि०

रामचरण महेन्द्र, १९१९— २९९

हिन्दी एकाङ्की : उद्भव और विकास. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९५८. ४४०पृ०,२२से०. १२.५०.

१९५६, राजस्थान वि०

गोपीनाथ तिवारी, १६१३— ३००

भारतेन्दुकालीन नाटक साहित्य—१८५०—१६००. जाल्लधर, हिन्दी भवन, १६५६. xiv,४१६पृ०,२२से०. ८.००

१६५७, आगरा वि०

जगदीशचन्द्र जोशी ३०१

प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक. आगरा, सरस्वती पुस्तक सदन, १६५६. xiv,४०६,४पृ०,२४से०. १२.५०

१६५७, राजस्थान वि०

पाण्डुरङ्गराव 'मुरली', १६३०— ३०२

आन्ध्र-हिन्दी रूपक. पटना, नागरी प्रकाशन,१६६०. x,२३६पृ०,२४से०. ७.५०

१६५७, नागपुर वि०

भानुदेव शुक्ल ३०३

भारतेन्दुयुगीन नाट्य साहित्य. वाराणसी, नन्दकिशोर ऐंड संस, १६६२. x,३६६पृ०,२२से०. ८.००

१६५७, सागर वि०

श्रीपति (त्रिपाठी) शर्मा, १६१८— ३०४

हिन्दी नाटकों पर पाश्चात्य प्रभाव. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर,१६६१. xxvi,४४६पृ०,२२से०. १२.५०

१६५८, आगरा वि०

विश्वनाथ मिश्र, १६२३— ३०५

हिन्दी नाटकों और उपन्यासों पर पाश्चात्य प्रभाव.

डी० लिट्०, १६५६, लखनऊ वि०

सुरेशचन्द्र अवस्थी, १६१८— ३०६

हिन्दी नाट्यरूपों का अध्ययन.

१६५६, लखनऊ वि०

कमलिनी मेहता, कु० ३०७

नाटकों में यथार्थवाद.

१६६०, हिन्दू वि०

नवरत्न कपूर, १९३३— ३०८

हिन्दी के ऐतिहासिक नाटक.

१९६०, हिन्दू वि०

प्रभुनारायण शर्मा, १९०४— ३०९

राजस्थानी लोक-नाटक का अध्ययन.

१९६०, आगरा वि०

लीला अवस्थी, १९२३— ३०९क

आधुनिक हिन्दी नाटकों में नारी-चित्रण.

१९६०, नागपुर वि०

वासुदेवनन्दन प्रसाद, १९२५— ३१०

भारतेन्दु-युग का नाट्य-साहित्य और रङ्गमञ्च.

१९६०, पटना वि०

सरोज अग्रवाल, श्रीमती, १९३१— ३११

प्रबोध चन्द्रोदय और उसकी हिन्दी परम्परा. इलाहाबाद, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, १९६२. xx, ४३२पृ०, २३से०. १०.००

१९६०, (हिन्दी इन्स्टीट्यूट), आगरा वि०

सावित्री खरे ३१२

प्रसाद के पश्चात् हिन्दी नाटक का विकास.

१९६०, सागर वि०

चन्द्रूलाल दुबे, १९२६— ३१३

हिन्दी नाटक साहित्य का विकास तथा कन्नड़-नाट्य साहित्य से उसकी प्रासङ्गिक तुलना.

१९६१, सागर वि०

दशरथ सिंह ३१४

आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्वच्छन्दतावादी नाट्य शैली का विकास.

१९६१, सागर वि०

रामकिशोरी श्रीवास्तव, कु० ३१५

हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों का आलोचनात्मक अध्ययन–१९३७ई० तक.

१९६१, लखनऊ वि०

शान्तिदेवी बत्रा ३१६

हिन्दी नाटक की शिल्प-विधि का विकास.

१९६२, पंजाब वि०

सन्तप्रसाद ३१६क

हिन्दी भाव प्रतीक, गीतनाट्य तथा रेडियो नाटक और उनके लेखक.

१९६२, आगरा वि०

निबन्ध साहित्य का अध्ययन

उमेशचन्द्र त्रिपाठी ३१७

हिन्दी निबन्ध के विकास का आलोचनात्मक अध्ययन.

१९५१, आगरा वि०

ओम्कारनाथ शर्मा ३१७क

हिन्दी साहित्य में निबन्ध का विकास.

१९[illegible], [illegible]पुर वि०

साहित्यशास्त्र का अध्ययन

अलंकार

रामशङ्कर शुक्ल 'रसाल', १८९८—

अलङ्कार पीयूष. इलाहाबाद, रामनारायण लाल, १९२९. २ जि०. १८से०.

मूल : 'हिन्दी काव्यशास्त्र का विकास'. प्रबन्ध दूसरे संस्करण (१९५४) में सम्मिलित.

डी० लिट्०, १९३७, इलाहाबाद वि०

ओम्प्रकाश (कुलश्रेष्ठ), १९२४— ३१९

हिन्दी अलङ्कार साहित्य. दिल्ली, भारती साहित्य मन्दिर, १९६०. x, २६७पृ०, २२से०. ६.००

यह प्रथम भाग. दूसरा भाग देखिये—२६०

१९५१, आगरा वि०

जगदीशनारायण त्रिपाठी, १९३०— ३२०

आधुनिक हिन्दी कविता में अलङ्कार-विधान—१९२०–१९५०. कानपुर,

अनुसन्धान प्रकाशन, १९६२. Lxii,३०६पृ०,२३से०. १५.००

१९५८, आगरा वि०

कुन्दनलाल जैन, १९२६— ३२१

हिन्दी के रीतिकालीन अलङ्कार ग्रन्थों पर संस्कृत का प्रभाव—१७००-१९००वि०.

१९६०, आगरा वि०

देवेशचन्द्र ३२२

आधुनिक काल की हिन्दी कविता में अलङ्कार-योजना—१८५०-१९५०.

१९६०, लखनऊ वि०

आलोचना शास्त्र का अध्ययन

भगवत्स्वरूप मिश्र, १९२०— ३२३

हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास. देहरादून,साहित्य सदन,१९५४. v,६०५पृ०,२१से०. १२.००

१९५१, आगरा वि०

रामलाल सिंह, १९१८— ३२४

आचार्य शुक्ल के समीक्षा सिद्धान्त. वाराणसी, कर्मभूमि प्रकाशन,१९५८. xvi,५११,८पृ०,२२से०. १२.५०

१९५६, सागर वि०

राजकिशोर कक्कड़ ३२५

आधुनिक हिन्दी साहित्य में आलोचना का विकास—१८६८-१९४३.

१९५७, आगरा वि०

रामदरश मिश्र, १९२४— ३२६

हिन्दी आलोचना का इतिहास. वाराणसी, हिन्दू वि० वि०, १९६०.

१९५७, हिन्दू वि०

वेङ्कट शर्मा ३२७

आधुनिक हिन्दी साहित्य में समालोचना का विकास. दिल्ली, आत्माराम, १९६२. xx,५२०पृ०,२३से०. २०.००

१९५९, राजस्थान वि०

हरिमोहन मिश्र **३२८क**

आधुनिक हिन्दी आलोचना.

१९६०, बिहार वि०

नरसिंहाचारी, एस० टी०, १९२७— **३२८**

हिन्दी साहित्य और आलोचना के सन्दर्भ में साहित्यिक सुरुचि.

१९६१, हिन्दू वि०

रामाधार शर्मा, १९३३— **३२९**

हिन्दी की सैद्धान्तिक समीक्षा. कानपुर, अनुसन्धान प्रकाशन, १९६२. xiv,४२६पृ०,२४.५से०. १६.००

१९६१, सागर वि०

काव्यशास्त्र

भगीरथ मिश्र, १९१४— **३३०**

हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास.२रासं०. लखनऊ, लखनऊ वि०—हिन्दी परिषद्, १९५८. xxviii,४७६पृ०,२५से०. १२.००
१ला सं० १९४८.

१९४७, लखनऊ वि०

राकेश गुप्त (छैलबिहारी), १९१९— **३३०क**

नायक—नायिका—भेद.

डी० लिट्०, १९५२, इलाहाबाद वि०

शकुन्तला दुबे **३३१**

काव्यरूपों के मूल स्रोत और उनका विकास. वाराणसी, हिन्दी प्रचारक, १९५८. xiv,५८८पृ०,२१.५से०. १०.००

१९५२, हिन्दू वि०

रमेशप्रसाद मिश्र **३३२**

आधुनिक हिन्दी साहित्य के बदलते हुए मानों का अध्ययन.

१९५६, हिन्दू वि०

सत्यदेव चौधरी, १९३१— **३३३**

रीति परम्परा के प्रमुख आचार्य. दिल्ली, अनुसन्धान परिषद्, १९५९. xxv,७५६पृ०,२२से०. १८.००.

१९५६, दिल्ली वि०

मनोहर काले
आधुनिक हिन्दी-मराठी काव्य शास्त्र...
देखिये—१७६

रणवीर सिंह ३३४
हिन्दी काव्य-शास्त्र में दोष-विवेचन.

१९६०, दिल्ली वि०

राममूर्ति त्रिपाठी ३३५
लक्षण ग्रन्थ और उसका प्रसार.

१९६०, हिन्दू वि०

और देखिये—आधुनिक कवियों के काव्य सिद्धान्त २४९.

छन्दशास्त्र

जानकीनाथ सिंह 'मनोज' ३३६
हिन्दी छन्द-शास्त्र.

१९४२, इलाहाबाद वि०

माहेश्वरी सिंह, १९१३— ३३७
मध्यकालीन छन्द का ऐतिहासिक विकास.

१९५०, लंदन वि०

पुत्तूलाल शुक्ल(चन्द्राकर), १९२४— ३३८
आधुनिक हिन्दी-काव्य में छन्द-योजना. लखनऊ, लखनऊ वि०वि०—हिन्दी विभाग, १९५७. xvi,५३०पृ०,२४से०. १२.५०

१९५३, लखनऊ वि०

शिवनन्दन प्रसाद, १९१८— ३४०
मध्यकालीन हिन्दी काव्य में प्रयुक्त मात्रिक छन्दों का विश्लेषणात्मक तथा ऐतिहासिक अध्ययन.

डी० लिट, १९५८, पटना वि०

रस सम्बन्धी अध्ययन

राकेश गुप्त (छैलबिहारी), १९१९— ३४१

साइकॉलाजीकल स्टडीज़ इन रस. अलीगढ़, तारावती गुप्त, १९५०. १७९पृ०,२१से०.

१९४३, इलाहाबाद वि०

भोलाशङ्कर व्यास, १९२४— ३४२

ध्वनि सप्रम्दाय और उसके सिद्धान्त. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९५७. ५०९पृ०,१८से०. १०.००

१९५२, राजस्थान वि०

आनन्दप्रकाश दीक्षित, १९२५— ३४३

रस सिद्धान्त : स्वरूप विश्लेषण. दिल्ली, राजकमल, १९६०. ४४७पृ०, २३से०. १०.००

१९५६, आगरा वि०

बरसानेलाल चतुर्वेदी, १९२०— ३४४

हिन्दी साहित्य में हास्य रस. दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार, १९५७. vi,३२२पृ०,२२से०. ७.५०

२रा सं० १९६२.

१९५६, आगरा वि०

ब्रजवासीलाल श्रीवास्तव ३४५

करुण रस—मध्ययुगीन हिन्दी रामकाव्य के परिवेश में. दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार, १९६१. ३५५पृ०,२०से०. १२.५०

मूल : हिन्दी काव्य में करुण रस—१४००-१७००ई०.

१९५६, आगरा वि०

आशा शिरोमणि ३४६

हिन्दी काव्य में वात्सल्य रस.

१९६१, दिल्ली वि०

तारकनाथ बाली ३४६क

रस की दार्शनिक और नैतिक व्याख्या.

१९६२, दिल्ली वि०

श्रीनिवास शर्मा ३४६ख

आधुनिक हिन्दी काव्य में वात्सल्य रस.

१९६२, आगरा वि०

इतिहास सम्बन्धी अध्ययन

इन्द्रनाथ मदान, १९१०— ३४७

मॉडर्न हिन्दी लिटरेचर—ए क्रिटिकल एनेलैसिस. लाहौर, मिनर्वा बुक शॉप, १९३९. २४१पृ०, २१.५से०. ५.००

१९३८, पंजाब वि०

रामकुमार वर्मा, १९०५— ३४८

हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास—७५०–१७५०ई०. ३रा सं०. इलाहाबाद, रामनारायण लाल, १९५४. vi, ६१९, ८६पृ० २२, से०. १०.००

१ला सं० १९३८.

१९४०, नागपुर वि०

लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, १९१४— ३४९

आधुनिक हिन्दी साहित्य—१८५०–१९०० ई०.३रा सं०. इलाहाबाद, प्रयाग वि०वि०—हिन्दी परिषद्, १९५४. ३७०पृ०, २२से०. ६.००

१ला सं० १९४१.

१९४०, इलाहाबाद वि०

श्रीकृष्णलाल, १९१२— ३५०

आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास—१९००–१९२५. इलाहाबाद, प्रयाग वि० वि०–हिन्दी परिषद्, १९४२. xxii, ४१३पृ०, २१से०. ६.००

१९४१, इलाहाबाद वि०

नगेन्द्र (नगाइच), १९१५— ३५१

रीतिकाव्य की भूमिका तथा देव और उनकी कविता. दिल्ली, गौतम बुक डिपो, १९४९. xvi, २९९पृ०, २१से०. १०.००

डी० लिट्०, १९४६, आगरा वि०

लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ३५२

आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका—१७५७–१८५७ई०. इलाहाबाद, प्रयाग वि०वि०–हिन्दी परिषद्, १९५२. xii, ५१६पृ०, २१से०. ८.००

डी० लिट्०, १९४६, इलाहाबाद वि०

जयकान्त मिश्र, १९२२— ३५३

ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर. इलाहाबाद, तिरभुक्ति पब्लि०, १९४९–५०. २ जिल्द. (४६२,१८७पृ०),२१से०. २२.५०

अंग्रेजी विभाग से.

१९४८, इलाहाबाद वि०

भोलानाथ, १९२४— ३५४

हिन्दी साहित्य—१९२६–१९४७ई०. इलाहाबाद, प्रयाग वि० वि०—हिन्दी परिषद्,१९५४. iii,४६६पृ०,२१से०. ८.००

१९५२, इलाहाबाद वि०

मोतीलाल मेनारिया, १९०५— ३५५

राजस्थान का पिङ्गल साहित्य. २रा सं०. बम्बई, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय,१९५८. viii,२६०,८पृ०,२२से०. ८.००

१९५२, राजस्थान वि०

राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, १९२४— ३५६

रीतिकालीन कविता एवं शृंगार रस का विवेचन—१६००–१८५०ई०. आगरा, सरस्वती सदन, १९५२. xxii,५३५पृ०,१८से०. ६.५०

१९५२, आगरा वि०

हरिवंश कोछड़ ३५७

अपभ्रंश साहित्य. दिल्ली, भारतीय साहित्य मंदिर,१९५६. xiii,-४३५पृ०,२२से०. १०.००

१९५२, दिल्ली वि०

इन्द्रपाल सिंह ३५८

आदिकालीन हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ.

१९५५, लखनऊ वि०

शिवस्वरूप शर्मा 'अचल' ३५९

राजस्थानी-गद्य-साहित्य—उद्भव और विकास. बीकानेर, सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट,१९६१. xxx,२३५,११पृ०,२२से०. ६.००

१९५५, राजस्थान वि०

बच्चन सिंह, १९१९— ३६०

रीतिकालीन कवियों की प्रेम-व्यञ्जना. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९५८. xxii,४८०,१७पृ०,२२से०. ८.५०

१९५६, हिन्दू वि०

बलवन्त लक्ष्मण कोतमिरे ३६१

हिन्दी गद्य के विविध साहित्य-रूपों का उद्भव और विकास. इलाहाबाद, किताब महल, १९५९. xi,३२४पृ०,२२से०. ८.५०

१९५६, हिन्दू वि०

शारदा वेदालङ्कार ३६१क

हिन्दी गद्य का विकास—१८००-१८५६ई०.

१९५६, लंदन वि०

किशोरीलाल गुप्त, १९१५— ३६२

शिवसिंह सरोज की जीवनी और साहित्य सम्बन्धी सामग्री की विवेचनात्मक परीक्षा.

१९५७, आगरा वि०

जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव ३६३

डिंगल साहित्य—पद्य. इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९६०. xiv, ३४७पृ०, मानचित्र, २१से०. ८.००

१९५७, इलाहाबाद वि०

देवेन्द्रकुमार जैन ३६४

अपभ्रंश साहित्य.

१९५७, आगरा वि०

शङ्करदयाल चौऋषि, १९२५— ३६५

द्विवेदीयुग की हिन्दी गद्य-शैलियों का अध्ययन.

१९५८, सागर वि०

जनार्दनप्रसाद काला ३६६

गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य.

१९५९, लखनऊ वि०

प्रेमप्रकाश गौतम, १६२६— ३६७
हिन्दी का प्राचीन और मध्यकालीन गद्य.
१६५६, आगरा वि०

हरिशङ्कर शर्मा 'हरीश', १६३३— ३६८
आदिकाल का हिन्दी जैन साहित्य—६५०–१४५० ई०.
१६५६, इलाहाबाद वि०

माधुरी दुबे ३६६
हिन्दी गद्य का वैभवकाल—१६२२–१६५०ई०.
१६६०, राजस्थान वि०

विष्णुशरण 'इन्दु' ३७०
हिन्दी साहित्य में भक्ति और रीति की सन्धिकालीन प्रवृत्तियों का विवेचनात्मक अध्ययन.
१६६०, आगरा वि०

शिवलाल जोशी ३७१
रीतिकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि. देहरादून, साहित्य सदन, १६६२. ३४२पृ०,२०से०. १२.५०
१६६०, आगरा वि०

हीरालाल माहेश्वरी ३७२
राजस्थानी भाषा और साहित्य—१५००–१६५० ई०. कलकत्ता, आधुनिक पुस्तक भवन,१६६०. xii,४१७पृ०,२४से०. १५.००
१६६०, कलकत्ता वि०

ब्रजमोहन शर्मा ३७३
हिन्दी गद्य का निर्माण और विकास (भाषा और साहित्य) : देश के सुधारवादी और राजनीतिक आन्दोलन के सन्दर्भ में .
१६६१, राजस्थान वि०

सुषमा प्रियदर्शिनी ३७४
स्वतन्त्रता पश्चात् हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ.
१६६१, दिल्ली वि०

हरिकृष्ण पुरोहित ३७५

आधुनिक हिन्दी साहित्य की विचार-धारा.

१९६१, राजस्थान वि०

किशोरीलाल गुप्त, १९१५— ३७६

हिन्दी साहित्य के इतिहास के विभिन्न स्रोतों का विश्लेषण—१६४९–१९४५ वि०.

डी० लिट्०, १९६२, आगरा वि०

जगदीशप्रसाद वाजपेयी ३७६क

आधुनिक ब्रजभाषा साहित्य–१९००–२००० वि०.

१९६२, आगरा वि०

लालताप्रसाद दुबे ३७६ख

हिन्दी भक्तमाल साहित्य.

१९६२, इलाहाबाद वि०

भाषा, लिपि और व्याकरण

मोहिउद्दीन कादरी 'ज़ोर', १९०५-१९६२— ३७७

हिन्दुस्तानी फॉनेटिक्स. विलेडने सैंटजोजेंस–इंप्रीमेरी लू यूनियन टाइपोग्राफिक्, १९३०. ११६पृ०,१८से०.

मूल प्रबन्ध के दो अध्याय. भाषा सम्बन्धी प्रथम प्रबन्ध.

१९३०, लंदन वि०

बाबूराम सक्सेना, १८९७— ३७८

इवोल्यूशन ऑफ अवधी—ए ब्रांच ऑफ हिन्दी. इलाहाबाद, इण्डियन प्रेस,१९३८. xviii,५६२पृ०,२४से०.

डी० लिट्०, १९३१, इलाहाबाद वि०

धीरेन्द्र वर्मा, १८९७— ३७९

ब्रजभाषा. इलाहाबाद,हिन्दुस्तानी एकेडेमी,१९५४. ii,१६२पृ०,२१.५से०. ६.००

प्रथम बार मूल फ्रैंच में (१९३५) प्रकाशित.

डी० लिट्०, १९३५, पेरिस वि०

नलिनीमोहन सान्याल, —१६५१. ३८०

बिहारी भाषाओं की उत्पत्ति और विकास—मैथिली, मगही तथा भोजपुरी बोलियों के मौलिक तत्वों की आलोचना. इलाहाबाद, रामनारायण लाल, १६४२. १६४पृ०, १८से०.

१६४३, कलकत्ता वि०

सुभद्र झा, १६०६— ३८१

द फॉर्मेशन ऑफ़ मैथिली लैंग्वेज़. लंदन, लूज़क एण्ड को०, १६५८. xvi, ६३८पृ०, सारिणी, २२से०. १०५.००

डी० लिट्०, १६४४, पटना वि०

उदयनारायण तिवारी, १६०३— ३८२

भोजपुरी भाषा का विकास. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, १६५४. २२७, ३६०पृ०, २४से०. १५.००

डी० लिट्०, १६४५, इलाहाबाद वि०

हरदेव बाहरी, १६०६— ३८३

हिन्दी सीमेंटिक्स. इलाहाबाद, भारती प्रेस पब्लिकेशन, १६५६. xx, ५३६पृ०, २२से०. ३०.००

डी० लिट्०, १६४५, इलाहाबाद वि०

ओम्प्रकाश गुप्त ३८४

मुहावरा मीमांसा. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, १६६०. xxxiv, ३६६, १८, १०पृ०, मुखचित्र, २४से०. ५.००

डी० लिट्०, १६४६, हिन्दू वि०

विश्वनाथ प्रसाद ३८५

भोजपुरी ध्वनियों और ध्वनि-प्रक्रिया का अध्ययन.
स्कूल ऑफ ओरियंटल ऐंड अफ्रीकन स्टडीज़ से.

१६५१, लंदन वि०

हरिहरप्रसाद गुप्त, १६१०— ३८६

ग्रामोद्योग और उनकी शब्दावलियाँ. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १६५६. २६०पृ०, २१.५से०. ६.००
मूल : आजमगढ़ जिले की फूलपुर तहसील के आधार पर भारतीय ग्रामोद्योग सम्बन्धी शब्दावली का अध्ययन.

१६५१, इलाहाबाद वि०

गुणानन्द जुयाल ३८७

मध्य पहाड़ी भाषा और उसका हिन्दी से सम्बन्ध—एक आलोचनात्मक अध्ययन.

१९५४, आगरा वि०

कपिलदेव सिंह ३८८

ब्रजभाषा बनाम खड़ी बोली. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९५६. ३४०पृ०, २१से०. ८.००

विगत सौ वर्षों के संघर्ष का इतिहास.

आगरा वि०, १९५५

सितकंठ मिश्र ३८९

खड़ी बोली का आन्दोलन. काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९५६. xv,३६६पृ०,२२से०. ७.००

१९५५, हिन्दू वि०

कणिका विश्वास ३९०

ब्रजभाषा और ब्रजबुलि साहित्य.

१९५७, हिन्दू वि०

केशवराम पाल ३९१

हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों का अर्थ-वैज्ञानिक अध्ययन.

१९५७, आगरा वि०

तारकनाथ अग्रवाल, १९१६—१९६३ ३९२

बीसलदेव रासो. वाराणसी,हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय,१९६२. x, १००,२१२पृ०,२२से०. ६.००

भाषा विवेचन और सम्पादन.

१९५७, कलकत्ता वि०

भालचन्द्रराव तैलङ्ग ३९२क

हलबी, भतरी और छत्तीसगढ़ी बोलियों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन. बम्बई, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, १९६३ ?

नागपुर वि०, १९५७

शिवप्रसाद सिंह, १९२९— ३९३

सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य. वाराणसी, हिन्दी प्रचारक

पुस्तकालय, १९५८. vii,४०७पृ०,२४से०. १२.५०

१९५७, हिन्दू वि०

कैलाशचन्द्र भाटिया, १९२७—— ३९४

हिन्दी में अंग्रेजी आगत शब्दों का भाषातात्विक अध्ययन. इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९६३ ?

१९५८, (हिन्दी इंस्टीट्यूट), आगरा वि०

गङ्गाचरण त्रिपाठी ३९४क

अवधी, ब्रज और भोजपुरी का तुलनात्मक अध्ययन.

१९५८, इलाहाबाद वि०

मङ्गलबिहारीशरण सिन्हा ३९५

सिद्धों की संधा भाषा.

डि० लिट्०, १९५८, पटना वि०

रामस्वरूप चतुर्वेदी, १९३१—— ३९६

आगरा जिले की बोली. इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९६१. xvi, १७२पृ०,२१से०. ६.००

१९५८, इलाहाबाद वि०

गेंदालाल शर्मा ३९७

ब्रजभाषा और खड़ीबोली के व्याकरणों का तुलनात्मक अध्ययन. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९६२.

१९५९, अलीगढ़ वि०

चन्द्रभान रावत, १९२५— ३९८

मथुरा जिले की बोलियाँ. इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९६३ ?

१९५९, (हिन्दी इंस्टीट्यूट), आगरा वि०

जगदेव सिंह ३९८क

बाँगरू भाषा का रचनात्मक व्याकरण.

१९५९, पेन्सिलवेनिया वि०

नानकशरण निगम ३९९

फोनेटिक रिसर्च इन हिन्दी लैंग्वेज.

१९५९, आगरा वि०

रामचन्द्र राय ४००
राजस्थानी प्रलेखों का लिपिशास्त्रीय तथा भाषाशास्त्रीय अध्ययन, ११५०–१७५० ई०.
१९५९, इलाहाबाद वि०

रामेश्वरप्रसाद अग्रवाल, १९२६— ४०१
बुन्देली बोली का वर्णनात्मक विश्लेषण.
१९५९, लखनऊ वि०

शङ्करलाल शर्मा ४०२
कनौजी बोली का अनुशीलन तथा ठेठ ब्रज से तुलना.
१९५९, आगरा वि०

हरिश्चन्द्र शर्मा, १९२४— ४०३
खड़ी बोली के (बोली रूप) विकास का अध्ययन.
१९५९, आगरा वि०

अमरबहादुर सिंह ४०४
अवधी और भोजपुरी की सीमावर्ती बोलियाँ.
१९६०, इलाहाबाद वि०

उमा मोदवेल ४०५
हिन्दी में शब्द और अर्थ का मनोवैज्ञानिक आधार.
१९६०, हिन्दू वि०

दयानन्द श्रीवास्तव, १९२७— ४०६
खड़ी बोली का वाक्य–विन्यास.
१९६०, कलकत्ता वि०

देवीशङ्कर द्विवेदी, १९३७— ४०७
बैसवाड़ी का शब्द-सामर्थ्य.
१९६०, आगरा वि०

प्रेमनारायण शुक्ल, १९१४— ४०८
भक्तिकालीन हिन्दी सन्त–साहित्य की भाषा—१३७५–१७०० वि०.
डी० लिट्०, १९६०, आगरा वि०

बांकेलाल उपाध्याय ४०९

संस्कृतमूलक हिन्दी गणितीय शब्दावली का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा भाषाशास्त्रीय अध्ययन.

१९६०, आगरा वि०

मोहनलाल शर्मा, १९३५— ४१०

खुरपल्टी—पदरूपाँश तथा वाक्य.

१९६०, आगरा वि०

शिवनन्दन कपूर ४११

संस्कृत शब्दों का परिनिष्ठित हिन्दी में अर्थ-परिवर्तन.

१९६०, इलाहाबाद वि०

शिवनाथ, १९१७— ४१२

अर्थतत्व की भूमिका. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९६१. xii, ३०६पृ०,१८सें०. ६.००

यह भूमिका भाग है. मूल प्रबन्ध : 'हिन्दी भाषा का अर्थतात्विक विकास'.

१९६०, कलकत्ता वि०

श्रीराम शर्मा, १९२०— ४१३

दक्खिनी का रूप–विन्यास.

१९६०, (हिन्दी इंस्टीट्यूट) आगरा वि०

अचलानन्द जखमोला ४१४

हिन्दी कोश–साहित्य—१५००–१८००ई० : विवेचनात्मक तथा तुलनात्मक अध्ययन.

१९६१, इलाहाबाद वि०

शिवशङ्करप्रसाद वर्मा ४१४क

देवनागरी लिपि—ऐतिहासिक तथा भाषा वैज्ञानिक अध्ययन.

१९६१, भागलपुर वि०

हरिदत्त भट्ट 'शैलेश', १९३०— ४१५

गढ़वाली का शब्द-सामर्थ्य.

१९६१, (हिन्दी इंस्टीट्यूट) आगरा वि०

नन्दकिशोर सिंह ४१५क

कुरमाली बोली.

१९६२, इलाहाबाद वि०

महावीरसरन जैन ४१५ख

बुलन्दशहर और खुरजा तहसील की समकालीन बोलियों का अध्ययन.

१९६२, इलाहाबाद वि०

रघुवीरशरण ४१५ग

हिन्दी भाषा : रूप और काव्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन.

१९६२, पंजाब वि०

और देखिये—जायसी की भाषा ७४. तुलसी की भाषा ३७. बिहारी की भाषा ६९. रासो की भाषा २०. सूर की भाषा ९९.

लोक-साहित्य का अध्ययन

सत्येन्द्र (गौरीशङ्कर कुलश्रेष्ठ), १९०७— ४१६

ब्रजलोक-साहित्य का अध्ययन. आगरा, साहित्य रत्न भंडार, १९४९. iv,५७५पृ०,२०.५से०. ८.००

२रा सं० १९५७.

१९४९, आगरा वि०

कृष्णदेव उपाध्याय, १९११— ४१७

भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन. वाराणसी,हिन्दी प्रचारक,१९६०. xx,४५२पृ०,२३से०. १०.००

१९५१, लखनऊ वि०

सत्यव्रत सिन्हा ४१८

भोजपुरी लोक-गाथा. इलाहाबाद,हिन्दुस्तानी एकेडेमी,१९५७. xxviii, ३४४,२पृ०,२१.५से०. ८.००

१९५३, इलाहाबाद वि०

कन्हैयालाल सहल, १९११— ४१९

राजस्थानी कहावतें—एक अध्ययन. दिल्ली,भारती साहित्य मंदिर, १९५८. २९८,५०पृ०,२२से०. ८.५०

१९५५, राजस्थान वि०

१९६० में बंगाल हिंदी मंडल, कलकत्ता से 'राजस्थानी कहावतें' पुस्तक अलग से छपी.

अम्बाप्रसाद 'सुमन', १९१६— ४२०

कृषक-जीवन-सम्बन्धी ब्रजभाषा-शब्दावली. इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९६१. xxii,६०२,१०पृ०,२४से०. १२.५०

१९६२, इलाहाबाद वि०

अलीगढ़ क्षेत्रकी बोली का अध्ययन. दूसरा खण्ड : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९६२. xii,६०२,१४पृ०,२४से०. २०.००

१९५६, आगरा वि०

चिन्तामणि उपाध्याय, १९२१— ४२१

मालवीय लोक-गीत.

१९५६, नागपुर वि०

हरिहरनाथ टण्डन, १९०५— ४२२

वार्तासाहित्य का जीवन-मूलक अध्ययन.

१९५६, आगरा वि०

कृष्णलाल 'हंस', १९०५— ४२३

निमाड़ी और उसका साहित्य. इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९६०. ४७८पृ०,२२से०. ८.००

१९५७, नागपुर वि०

गोविन्दसिंह कन्दारी ४२४

गढ़वाली बोली की उपबोली, उसके लोक-गीत और उसमें अभिव्यक्त लोक-संस्कृति.

१९५७, आगरा वि०

बद्रीप्रसाद परमार ४२५

मालव लोक-साहित्य.

१९५७, आगरा वि०

सत्येन्द्र (गौरीशङ्कर कुलश्रेष्ठ), १९०७— ४२६

मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतात्विक अध्ययन. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९६०. ५६१पृ०,२१.५से०. १५.००

मूल : मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य के प्रेमगाथा काव्य और भक्तिकाव्य में लोकवार्ता तत्व.

डी० लिट्०, १९५७, आगरा वि०

कृष्णचन्द्र शर्मा, 'चन्द्र', १९११— ४२७

मेरठ जनपद के लोग-गीतों का अध्ययन.

१९५८, आगरा वि०

शङ्करलाल यादव, १९२०— ४२७क

हरियाना प्रदेश का लोक-साहित्य. इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९६०. viii,४९९पृ०,२२से०.

१९५८, लखनऊ वि०

सावित्री सरीन ४२८

ब्रज-लोक-कथाओं के अभिप्रायों का अध्ययन.

१९५८, कलकत्ता वि०

तेजनारायण लाल शास्त्री, १९२०— ४२९

मैथिली लोक-गीतों का अध्ययन. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९६२. xiv,३३६पृ०,२२से०. १०.००

१९५९, नागपुर वि०

बी० पी० शुक्ल ४३०

बघेली लोक-साहित्य का अध्ययन.

१९५९, आगरा वि०

रवीन्द्र (नाथ राय) 'भ्रमर' १९३४— ४३१

हिन्दी भक्ति साहित्य में लोक-तत्त्व.

१९५९, हिन्दू वि०

स्वर्णलता अग्रवाल ४३२

राजस्थानी लोक-गीत.

१९५९, राजस्थान वि०

त्रिलोचन पाण्डेय ४३३

कुमाऊ का लोक-साहित्य. आगरा, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, १९६२. ४१६पृ०.

१९६०, आगरा वि०

शालिग्राम गुप्त ४३४

ब्रज और बुन्देली लोक-गीतों में कृष्ण-कथा.

१६६१, इलाहाबाद वि०

शालिग्राम शर्मा ४३५

इलाहाबाद जिले की कृषि शब्दावली का एक अध्ययन.

१६६१, इलाहाबाद वि०

सत्या गुप्ता ४३६

खड़ी बोली का लोक-साहित्य.

१६६१, इलाहाबाद वि०

चन्द्रकला त्यागी, १६२२— ४३६क

बुलन्दशहर के संस्कार सम्बन्धी लोक-गीतों का मध्यवर्ग एवं निम्न वर्ग के आधार पर अध्ययन.

१६६२, आगरा वि०

कृष्णकुमार शर्मा ४३६ख

राजस्थानी लोक-गाथाएँ.

१६६२, लखनऊ वि०

महेन्द्रसागर प्रचण्डिया, १६३२— ४३६ग

हिन्दी का बारहमासा साहित्य.

१६६२, आगरा वि०

रामदास प्रधान ४३६घ

बघेलखण्ड : लोकोक्तियाँ, मुहावरे, लोककथाओं का अध्ययन.

१६६२, सागर वि०

रामसिंह ४३६ङ

कृषि तथा ग्रामोद्योग की शब्दावली.

१६६२, लखनऊ वि०

लक्ष्मीदेवी सक्सेना ४३६च

सिंहासनबत्तीसी और उसकी हिन्दी-परम्परा का लोक-साहित्य की दृष्टि से अध्ययन.

१६६२, आगरा वि०

सत्यदेव ओझा, १९२५— ४३६छ

भोजपुरी कहावतों का सांस्कृतिक अध्ययन.

१९६२, राँची वि०

अणिमा सिंह (श्रीमती), १९२६— ४३६ज

मैथिली लोक-गीत.

१९६३, कलकत्ता वि०

और देखिये—लोक-नाटक ३०९. · शब्दावली ३८६.

पत्रकारिता का अध्ययन

रामरतन भटनागर, १९१६— ४३७

राइज़ ऐंड ग्रोथ ऑफ हिन्दी जर्नलिज्म—१८२६–१९४५. इलाहाबाद, किताब महल, १९४७. xxii,७६८पृ०,२१से०. २०.००

१९४८, इलाहाबाद वि०

रामगोपाल चतुर्वेदी ४३८

हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास.

१९५८, आगरा वि०

विमला रानी ४३९

हिन्दी साहित्य को नियतकालिक पत्रिकाओं का योगदान.

१९६०, दिल्ली वि०

सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन

आनन्दप्रकाश माथुर ४४०

१६वीं-१७वीं शताब्दियों की सामाजिक अवस्था का हिन्दी साहित्य के आधार पर अध्ययन.

अंग्रेजी विभाग से.

१९५२, इलाहाबाद वि०

विद्याभूषण 'विभु', १८९२— ४४१

अभिधान अनुशीलन. इलाहाबाद,हिन्दुस्तानी एकेडेमी,१९५८. ५२८पृ०, २४से०. १२.००

१९५२, इलाहाबाद वि०

गणेशदत्त ४४२

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में चित्रित सामाजिक जीवन.

१९५६, आगरा वि०

निर्मला सक्सेना ४४३

सूरसागरकी शब्दावली—एक सांस्कृतिक अध्ययन. इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९६२. ३९६पृ०,२४से०. १२.००

१९५८, इलाहाबाद वि०

सोमनाथ शुक्ल ४४४

हिन्दी साहित्य के आधार पर भारतीय संस्कृति—१६वीं और १७वीं शती.

१९५८, आगरा वि०

और देखिये—तुलसी और भारतीय संस्कृति ४६. मध्यकालीन कविता में संस्कृति २७१.

हिन्दी-सेवा सम्बन्धी अध्ययन

राजकुमारी शिवपुरी ४४५

राजस्थान के राजघरानों द्वारा हिन्दी-सेवा.

१९५५, राजस्थान वि०

लक्ष्मीनारायण गुप्त, १९१५— ४४६

हिन्दी भाषा को आर्यसमाज की देन. लखनऊ, लखनऊ वि०—हिन्दी विभाग, १९६१. iv,२९०पृ०,२५से०. १२.००

१९५७, लखनऊ वि०

ज्ञानवती दरबार ४४७

भारतीय नेताओं की हिन्दी-सेवा. नई दिल्ली, रञ्जन प्रकाशन, १९६१. ४७९पृ०, सचित्र०,२१से०. १५.००

१८५७–१९५७ ई० तक.

१९६१, पंजाब वि०

और देखिये—गुजरात की हिन्दी सेवा १९२.

विविध

चन्द्रावती सिंह ४४८

ह्निन्दी साहित्य में जीवनचरित का विकास. इलाहाबाद, इंडियन प्रेस, १९५८. xviii,२७५पृ०,२१से०. ४.७५

१९५३, लखनऊ वि०

गायत्रीदेवी वैश्य ४४९

आधुनिक हिन्दी काव्य में समाज—१८५०–१९५० ई०.

१९५५, राजस्थान वि०

मोतीलाल गुप्त ४५०

हिन्दी साहित्य को मत्स्य प्रदेश की देन.

१९५५, राजस्थान वि०

शकुन्तला वर्मा ४५१

आधुनिक हिन्दी साहित्य में गान्धीवाद.

१९५६, लखनऊ वि०

उषा इथापे ४५२

इब्राहीम आदिल शाह द्वितीय कालीन दक्खिनी पुस्तकों 'नौरस' तथा 'इब्राहीमनामा' की आलोचनात्मक व्याख्या.

१९५७, पूना वि०

विष्णुस्वरूप ४५३

कवि-समय-मीमांसा.

१९५७, हिन्दू वि०

कृष्णबिहारी मिश्र ४५४

आधुनिक समाजिक आन्दोलन एवं आधुनिक साहित्य—१९००-१९५०ई०.

१९५८, लखनऊ वि०

रामानन्द तिवारी, १९१९— ४५५

सत्यं शिवं सुन्दरम्.

१९५८, राजस्थान वि०

मुदमङ्गल सिंह ४५६
अंग्रेज शासकों की शिक्षा–नीति.

१९६०, हिन्दू वि०

विद्याभूषण गङ्गल ४५७
मध्ययुगीन और आधुनिक हिन्दी कविता में पेड़-पौधे-पशु-पक्षी.

१९६०, नागपुर वि०

सत्यवती महेन्द्र ४५८
हिन्दी नाम–माला साहित्य.

१९६०, (हिन्दी इन्स्टीट्यूट) आगरा वि०

सुरेन्द्र (मनोहरलाल) माथुर, १९३५— ४५९
यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९६२. ३९०पृ०,२२से०. १२.५०

१९६०, लखनऊ वि०

वेङ्कटरमण, गनमुक्तम् ४६०
कवित्रय—कबीर-सूर-तुलसी का सामाजिक पक्ष.

१९६१, उस्मानिया वि०

सुधा गुप्ता ४६१
आरम्भिक युगों से लेकर तुलसीदास तक सीता के चरित्र का अध्ययन.

१९६१, (हिन्दी इन्स्टीट्यूट) आगरा वि०

——:०:——

परिशिष्ट

साहित्यकार : व्यक्तिविशेष

तुलसीदास

वी० डी० पाण्डेय ४६२

रामचरितमानस की अन्तःकथाओं का आलोचनात्मक अध्ययन.

१९६१, आगरा वि०

पद्माकर

ब्रजनारायण सिंह ४६३

पद्माकर और उनके समसामयिक.

१९५९, लखनऊ वि०

परमानन्ददास

श्यामशङ्कर दीक्षित ४६४

परमानन्ददास : जीवनी और कृतियाँ.

१९५८, राजस्थान वि०

मंझन कवि

रामप्रतिपाल मिश्र ४६५

सूफी कवि मंझन और उनका काव्य.

१९६१, आगरा वि०

मिश्रबन्धु

सरोजिनी श्रीवास्तव ४६६

मिश्रबन्धु और उनका साहित्य

१९६१, लखनऊ वि०

सिंगाजी

रमेशचन्द्र गङ्गराडे ४६७

सन्त कवि सिङ्गाजी—जीवनी और कृतियाँ.

१९६२, नागपुर वि०

भक्ति-काव्य

सामान्य भक्ति

रामनरेश वर्मा, १९२९— ४६८

हिन्दी सगुणकाव्य की सांस्कृतिक भूमिका. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९६३. Lii,४६३पृ०,२२से०. ११.०० (सूर्यकुमारी पुस्तकमाला, ३१).

१९५८, हिन्दू वि०

कृष्ण भक्ति

पूर्णमासी राय ४६९

कृष्ण-भक्ति में मधुर रस.

१९५८, हिन्दू वि०

एस० एन० पाण्डेय ४७०

हिन्दी-कृष्णकाव्य में मधुरोपासना.

१९६१, आगरा वि०

डी० एस० मिश्र ४७१

हिन्दी काव्य में कृष्ण का चारित्रिक विकास.

१९६१, आगरा वि०

सन्त काव्य

सावित्री शुक्ल, १९२९— ४७२

सन्त साहित्य की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि.

१९५८, लखनऊ वि०

तुलनात्मक अध्ययन

विद्या मिश्र, १९२५— ४७३

वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन. लखनऊ, विश्वविद्यालय, १९६३.

१९५८, लखनऊ वि०

शिवकुमार शुक्ल ४७४

रामायणेतर संस्कृत काव्य और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन.

१९६१, आगरा वि०

प्रभावों का अध्ययन

सदानन्द मदान ४७५

भक्तिकालीन कृष्णभक्ति-काव्य पर पौराणिक प्रभाव.

१६५८, दिल्ली वि०

शिवस्वरूप सक्सेना ४७६

हिन्दी साहित्य पर मार्क्सवाद का प्रभाव.

१६६१, लखनऊ वि०

नाटक-साहित्य का अध्ययन

कमला शर्मा ४७७

आधुनिक हिन्दी नाटक में नारी-चित्रण.

१६६१, नागपुर वि०

और देखिये—३०६क.

साहित्य शास्त्र

तारा कपूर ४७८

हिन्दी काव्य में करुण रस.

१६५८, लखनऊ वि०

और देखिए—३४१–३४६. मधुर रस १४६क, ४६६, ४७०. सख्य १२७. शृङ्गार १२८.

भाषा-व्याकरण

राजकिशोर पाण्डेय, १६२०— ४७६

दक्खिनी का प्रारम्भिक गद्य.

१६५६, उस्मानिया वि०

एम० एल० उप्रेति ४८०

हिन्दी में प्रत्यय-विचार.

१६६१, आगरा वि०

—:०:—

विश्वविद्यालयानुसार स्वीकृत-प्रबंध-विवरण
१९१०-१९६२

[**वर्गीकृत भाग** में ५५५ और **विश्वविद्यालयानुसार स्वीकृत प्रबंध-विवरण** में ५७६ प्रबंध प्रविष्ट हैं. विश्वविद्यालयानुसार विवरण में डी० लिट्० उपाधि प्राप्त ३९ प्रबंधकारो के नाम ० प्रतीकान्वित हैं. वर्गीकृत भाग छपनेके अनन्तर प्राप्त २१ प्रबंधों की सूचनाएँ **विश्वविद्यालयानुसार प्रबंधों का संक्षिप्त विवरण** में + प्रतीकान्वित हैं. वर्गीकृत भाग में २३३ मुद्रित प्रबंधों का विवरण है. इलाहाबाद और कलकत्ता वि० वि० में डी० फिल्० तथा अन्य वि० वि० में पी-एच० डी० की व्यवस्था है.]

विश्वविद्यालयानुसार प्रबंधों का संक्षिप्त विवरण

विश्वविद्यालय	अवधि	पी-एच० डी०, डी० फिल्०	डी० लिट्०
आगरा	१६३६-६३	१५४+६	१२
इलाहाबाद	१६३१-६२	६६	८
उस्मानिया	१६५६-६१	२	
कलकत्ता	१६४३-६३	६	
गोरखपुर	१६६०-६१	५	
जबलपुर	१६६१-६२	२	
दिल्ली	१६५१-६३	३२	
नागपुर	१६३८-६२	२१	२
पंजाब	१६३८-६३	२४+१३	
पटना	१६४४-६२	७	४
पूना	१६५७-	१	
बम्बई	१६६२-६३	२+२	
बिहार	१६५८-६१	३	१
भागलपुर	१६६१-	२	
मद्रास	१६५६-	१	
मुस्लिम	१६५६-६१	१२	
राँची	१६६२-	१	
राजस्थान	१६४६-६२	२६	
लखनऊ	१६४६-६२	६५	४
विक्रम	१६६१-	१	
विश्वभारती	१६६२-	१	
सयाजीराव गायकवाड़	१६६२-	१	
सागर	१६५२-६२	२६	
हिन्दू	१६३४-६२	३८	६
अमेरिका और योरप			
कोनिग्सवर्ग	१६३४-	१	
पेरिस	१६३५, १६५०	—	२
पेन्सिलवेनिया (अमेरिका)	१६५६-	१	
फ्लॉरेंस	१६१०-	१	
लंदन	१६१८-५५	८	
		५३७	३६

आगरा विश्वविद्यालय—१७२

१९३९

०हरिहरनाथ हुक्कू	रामचरितमानस के विशिष्ट संदर्भ में तुलसीकी शिल्पकलाका अध्ययन

१९४६

०नगेन्द्र	रीतिकाल की भूमिका में देव का अध्ययन

१९४७

सोमनाथ गुप्त	हिन्दी-नाटक-साहित्य का इतिहास

१९४८

किरणकुमारी गुप्ता	हिन्दी कविता में प्रकृति-चित्रण
रांगेय राघव	श्रीगुरु गोरखनाथ और उनका युग

१९४९

सत्येन्द्र	ब्रज-लोक-साहित्य का अध्ययन
जयदेव कुलश्रेष्ठ	जायसी : उनकी कला और दर्शन

१९५१

ओम्प्रकाश (कुलश्रेष्ठ)	हिन्दी साहित्य में अलंकार
उमेशचन्द्र त्रिपाठी	हिन्दी निबंध के विकास का आलोचनात्मक अध्ययन
गोविन्द त्रिगुणायत	कबीर की विचारधारा
भगवत्स्वरूप मिश्र	हिन्दी साहित्य में आलोचनाका उद्भव और विकास
मुंशीराम शर्मा 'सोम'	भारतीय साधना और सूर साहित्य

१९५२

प्रतिपाल सिंह	बीसवीं शती के महाकाव्य
प्रेमनारायण शुक्ल	हिन्दी-साहित्य में विविध वाद
राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी	हिन्दी कविता में श्रृंगार-रस...१६००-१८५०
विश्वम्भरनाथ भट्ट	रत्नाकर : उनकी प्रतिभा और कला
शंकरनाथ शुक्ल	उपन्यासकार प्रेमचन्द, उनकी कला....

१९५३

रामदत्त भारद्वाज	तुलसी-दर्शन
हरवंशलाल शर्मा	श्रीमद्भागवत और सूरदास

१९५४

गुणानन्द जुयाल	मध्य-पहाड़ी भाषा (गढ़वाली-कुमाउनी)....
दयाशंकर शर्मा	हिन्दी में पशु-चारण काव्य
पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'	हिन्दी गद्य-काव्य...अध्ययन
ब्रह्मदत्त शर्मा	हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन
मनोहरलाल गौड़	घनानन्द और...स्वच्छन्द काव्य-धारा
श्यामसुन्दरलाल दीक्षित	कृष्णकाव्य में भ्रमर-गीत

१९५५

कपिलदेव सिंह	ब्रजभाषा बनाम खड़ी बोली
बदरीनारायण श्रीवास्तव	रामानन्द सम्प्रदाय का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव
भगवतीप्रसाद सिंह	राम-भक्ति साहित्य....बनादास का अध्ययन
रामेश्वरलाल खंडेलवाल	आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम-सौन्दर्य
शंभुनाथ पांडेय	आधुनिक हिन्दी-काव्य में निराशावाद
सीताराम कपूर	रामचरितमानस के साहित्यिक स्रोत

१९५६

अम्बाप्रसाद 'सुमन'	कृषक-जीवन सम्बन्धी शब्दावली (अलीगढ़ क्षेत्र)
आनन्दप्रकाश दीक्षित	काव्य में रस
गणेशदत्त	मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में चित्रित समाज
जयराम मिश्र	श्रीगुरु ग्रन्थ दर्शन
बरसानेलाल चतुर्वेदी	हिंदी साहित्य में हास्य रस
ब्रजवासीलाल श्रीवास्तव	करुण-रस–मध्ययुगीन हिन्दी काव्य...१४००–१७००
महेशचन्द्र सिंघल	सन्त सुन्दरदास
०मुंशीराम शर्मा 'सोम'	वैदिक भक्ति...हिन्दी के मध्यकालीन काव्यमें
रामचन्द्र मिश्र	हिंदी के आरम्भिक स्वच्छन्दतावादी...श्रीधर पाठक...
हरिहरनाथ टण्डन	वार्त्ता-साहित्य का जीवनी-मलक अध्ययन

१९५७

किशोरीलाल गुप्त	शिवसिंह सरोज...कवियों सम्बन्धी तथ्य...

केशवराम पाल	हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों का....अध्ययन (संस्कृत विभाग से)
गोपीनाथ तिवारी	भारतेन्दुकालीन नाटक साहित्य
०गोविन्द त्रिगुणायत	हिन्दी की निर्गुण काव्य-धारा और उसकी...पृष्ठभूमि
गोविन्दसिंह् कन्दारी	गढ़वाली बोली की रावल्टी उपबोली....
देवेन्द्रकुमार जैन	अपभ्रंश साहित्य
द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	कायामनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन
नत्थनसिंह्	बालमुकुन्द गुप्त—जीवन और साहित्य का अध्ययन
बद्रीप्रसाद परमार	मालव-लोक-साहित्य
राजकिशोर कक्कड़	आधुनिक हिन्दी साहित्य में आलोचना....१८६८-१९४३
राजेन्द्रप्रसाद शर्मा	पं० बालकृष्ण भट्ट—जीवन और साहित्य
रामनाथ त्रिपाठी	कृत्तिवासी बॅगला रामायण और रामचरितमानस
०सत्येन्द्र	मध्ययुगीन हिन्दी-साहित्य के प्रेमगाथा-काव्य....

१९५८

अम्बादत्त पन्त	अपभ्रंश काव्य...और विद्यापति
अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	द्विजदेव और उनका काव्य
इन्द्रावती ग्रोवर	हिन्दी उपन्यास में नारी-चित्रण
इन्द्रावती सिन्हा	हिन्दी साहित्य पर पौराणिकता का प्रभाव
कृष्णचन्द्र शर्मा	मेरठ जनपद के लोक-गीतों का अध्ययन
गोपालदत्त शर्मा	हरिदासजी का सम्प्रदाय और उसका वाणी साहित्य
ज्ञानवती अग्रवाल	प्रसाद का काव्य और दर्शन
छोटेलाल	मीराँबाई
जगदीशनारायण त्रिपाठी	आधुनिक हिन्दी काव्य में अलङ्कार विधान
जयचन्द राय	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल—एक अध्ययन
प्रभाकर माचवे	हिन्दी-मराठी का निर्गुण-काव्य—११वीं से १५ शती.
बालमुकुन्द गुप्त	हिन्दी में कृष्ण-काव्य का विकास
०भगवतीप्रसाद सिंह	राम-भक्ति में रसिक सम्प्रदाय
रणवीरचन्द्र रांग्रा	हिन्दी उपन्यासों में चरित्र-चित्रण का विकास
रमेशकुमार शर्मा	रीति कविता का आधुनिक हिन्दी कविता पर प्रभाव
रामगोपाल चतुर्वेदी	हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास
रामसागर त्रिपाठी	मुक्तक काव्य-परम्परा में बिहारी...विशेष अध्ययन

श्रीपति शर्मा	हिन्दी नाटकों पर पाश्चात्य प्रभाव
सरला देवी	हिन्दी के मध्ययुगीन साहित्य पर बौद्ध-धर्म का प्रभाव
सोमनाथ शुक्ल	हिन्दी साहित्य के आधार पर भारतीय संस्कृति

१९५९

कमला सांकृत्यायन	भानुभक्त रामायण और तुलसी रामायण....
गोपालदत्त सारस्वत	आधुनिक हिन्दी काव्य—परम्परा और प्रयोग
गोपाल व्यास	चाचा हित वृन्दावनदास और उनका काव्य
नानकशरण निगम	हिन्दी भाषा में ध्वनि-सम्बन्धी अनुशीलन
नारायणदत्त शर्मा	निम्बार्क सम्प्रदाय और उसके कृष्णभक्त कवि
नित्यानन्द शर्मा	आधुनिक हिन्दी काव्यमें प्रतीक विधान—१८७५-१९३५
प्रेमप्रकाश गौतम	हिन्दी का प्राचीन और मध्यकालीन गद्य
प्रेमसागर जैन	हिन्दी भक्ति—काव्य में जैन साहित्यकारों का योगदान
प्रयागदत्त तिवारी	सन्त कवि पलटूदास और सन्त सम्प्रदाय
बी० पी० शुक्ल	बघेली लोकसाहित्य का अध्ययन
०रामदत्त भारद्वाज	गोस्वामी तुलसीदास...रत्नावली की जीवनी....
रेवतीसिंह यादव	कवि पद्माकर...आलोचनात्मक अध्ययन
विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	सन्त-वैष्णव-काव्यपर तांत्रिक प्रभाव—१४००-१७००ई०
विश्वनाथ गौड़	आधुनिक हिन्दी काव्य में रहस्यवाद
शङ्करलाल शर्मा	कनौजी बोली का अनुशीलन...ठेठ ब्रज से तुलना
शान्तिस्वरूप गुप्त	हिन्दी तथा मराठी उपन्यास...अध्ययन—१९००-१९५०
शरणबिहारी गोस्वामी	हिन्दी-कृष्णभक्ति-काव्य में सखी-भाव
सरला देवी, श्रीमती	आधुनिक हिन्दी-साहित्य में नारी
श्यामसुन्दर व्यास	हिन्दी महाकाव्यों में नारी-चित्रण
श्रीनारायण अग्निहोत्री	हिन्दी उपन्यास...शास्त्रीय विवेचन
हरिशचन्द्र शर्मा	खड़ीबोली (बोली रूप) के विकास का अध्ययन

१९६०

के० सी० डी० यजुर्वेदी	ध्रुवपद और हिन्दी साहित्य
कृष्णा नाग, श्रीमती	किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यास....
०किरणकुमारी गुप्ता	विशिष्टाद्वैत और उसका...भक्तिकाव्य पर प्रभाव
कुन्दनलाल जैन	हिन्दी के रीतिकालीन अलंकार ग्रंथों पर संस्कृत का प्रभाव

त्रिलोचन पाण्डेय	कुमाउनी जन-साहित्य का अध्ययन
देवीशङ्कर अवस्थी	१८वीं शती के ब्रजभाषा काव्य में प्रेमाभक्ति
देवीशङ्कर रस्तोगी	हिन्दी नीति-काव्य (आदिकाल से भारतेन्दु तक)
प्रभुनारायण शर्मा	राजस्थानी लोक-नाटक (खयाल साहित्य)
बाँकेलाल उपाध्याय	संस्कृतमूलक हिन्दी गणितीय शब्दावली.....अध्ययन
०प्रेमनारायण शुक्ल	भक्तिकालीन हिन्दी-सन्त-साहित्य की भाषा
बीरबलसिंह रत्न	हिन्दी की छायावादी कविता...
ब्रजलाल वर्मा	सन्त साहित्य के सन्दर्भ में रज़्जब का अनुशीलन
राजकुमार पाण्डेय	रामचरितमानस का शास्त्रीय अध्ययन
रामगोपाल शर्मा	हिन्दी काव्य में नियतिवाद—१०५०-२००० वि०
रामप्रकाश अग्रवाल	वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस...
रामप्रसाद शर्मा	उपनिषद् और हिन्दी काव्य की निर्गुणधारा ..
विष्णुशरण 'इन्दु'	हिन्दी साहित्य में भक्ति और रीति....
वीरेन्द्रकुमार	रीति काव्य पर विद्यापति का प्रभाव
शङ्करलाल मेहरोत्रा	हिन्दी महाकाव्यों में नाटय-तत्व
शिवलाल जोशी	रीतिकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
सरोजिनीदेवी कुलश्रेष्ठ	मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में कृष्ण (विकास-वार्त्ता)
सूरजप्रसाद शुक्ल	बैसवाड़ी के हिन्दी कवि

१९६१

आर० पी० मित्तल	रीतिकाव्य में रूप-चित्रण
एस० एल० पाण्डेय	हिन्दी-कृष्णकाव्य में मधुरोपासना
कमला शर्मा	आधुनिक हिन्दीकाव्य में नारी-चित्रण
डी० एस० मिश्र	हिन्दी काव्य में कृष्ण का चारित्रिक विकास
बी० डी० पाण्डेय	रामचरितमानस की अन्तर्कथाओं का अध्ययन
रघुराजशरण शर्मा	तुलसी और भारतीय संस्कृति
रामप्रतिपाल मिश्र	सूफी कवि मंझन और उनका काव्य
रामप्रसाद मिश्र	खड़ीबोली कविता में विरह-वर्णन
शिवकुमार शुक्ल	रामायणेतर संस्कृत-काव्य और रामचरितमानस
सुधा गुप्ता	विभिन्न युगों में सीता का चरित्र...तुलसीदास में परिणति

१९६२

०अंबिकाप्रसाद वाजपेयी	तुलसी के काव्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

अरविन्दकुमार देसाई	भारतेन्दु और नर्मद...
एम० एच० प्रचण्डिया	हिन्दी का बारहमासा साहित्य...
ओमप्रकाश	हिन्दी-गद्य-साहित्य में प्रकृति-चित्रण
ओमप्रकाश दीक्षित	पउमचरिउ एवं रामचरितमानस....
०किशोरीलाल गुप्त	हिन्दी-साहित्य के इतिहास के विभिन्न स्त्रोतों का विश्लेषण (१६४९-१९४५)
केदारनाथ दुबे	कबीर और कबीर-पन्थ का तुलनात्मक अध्ययन
गायत्री सिन्हा	पदमावत में समाज-चित्रण
चन्द्रकला त्यागी	बुलन्दशहर के संस्कार-सम्बन्धी लोक-गीत....
जगदीश नारायण	रामचरितमानस और रामचन्द्रिका....
जगदीशप्रसाद वाजपेयी	आधुनिक व्रजभाषा काव्य का विकास—१९००—२०००
नारायणदास गुप्त	अयोध्यासिंह उपाध्याय....
पंजाबीलाल शर्मा	रीतिकालीन निर्गुण-भक्ति काव्य
परशुराम शुक्ल 'विरही'	आधुनिक...काव्य में यथार्थवाद (१८५०-१९५०)
मुरारीलाल शर्मा	अवधी-कृष्णकाव्य...लक्षदास....
०राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी	आधुनिक कविता की मूल प्रवृत्तियाँ
श्रीनिवास शर्मा	आधुनिक हिन्दी-काव्य में वात्सल्य रस
सन्तप्रसाद	हिन्दी भावप्रतीक, गीत नाट्य तथा रेडियो रूपक....

आगरा विश्वविद्यालय—हिन्दी इंस्टीट्यूट

१९५८	
कैलाशचन्द्र भाटिया	हिन्दी में अंग्रेजी के आगत शब्द
१९५९	
चन्द्रभान रावत	मथुरा जिले की बोलियाँ
रवीन्द्रकुमार जैन	बनारसीदास : जीवनी और कृतित्व
रामबाबू शर्मा	१५वीं शती से १७वीं शती तक हिन्दी-काव्य-रूप
विमला गौड़	मीराँ साहित्य के मूलस्रोत
१९६०	
इन्द्रा जोशी	हिन्दी उपन्यासों में लोकतत्व
गङ्गा पाठक	प्रेमचन्द और रमणलाल...देसाई
देवीशङ्कर द्विवेदी	बैसवाड़ी—शब्द-सामर्थ्य

नटवरलाल—

अम्बालाल व्यास	गुजरात के कवियों की हिन्दी साहित्य को देन
ब्रह्मानन्द	बँगला पर हिन्दी का प्रभाव
मोहनलाल शर्मा	खुरपल्टी, पदरूपांश तथा वाक्य
श्रीराम शर्मा	दखिनी का रूप-विन्यास
सत्यवती महेन्द्र	हिन्दी नाममाला साहित्य
सरोज अग्रवाल	प्रबोध चन्द्रोदय और उसकी हिन्दी परम्परा
हरिदत्त भट्ट	गढ़वाली की शब्द-सामर्थ्य

१९६१

मुरारीलाल उप्रैति	हिन्दी में प्रत्यय-विचार

१९६२

एम० जार्ज	तुलसीदास तथा मलयालम के रामभक्त कवि एषुत्तच्छन
गोपीवल्लभ नेमा	रामानन्द सम्प्रदाय के कुछ अज्ञात कवि....
नरेन्द्रकुमार सिन्हा	लिंग्विटिक स्टडी ऑफ स्पीच डिफेक्ट्स् इन स्टैमरिंग
निर्मला भार्गव, श्रीमती	वैदिक साहित्य और संस्कृत में भृगु ऋषियों की देन
रमानाथ सहाय	ए० स्टडी ऑफ पाली वर्ब रूट्स
रमेशचन्द्र जैन	हिन्दी-समास—रचना का अध्ययन
लक्ष्मी सक्सेना, कुमारी	सिंहासनबत्तीसी तथा उसकी परंपरा....
सुशीला धीर	हिन्दी और गुजराती के निर्गुण संतकाव्य....

१९६३

शशिशेखर तिवारी	भोजपुरी लोकोक्तियो का अध्ययन
सत्यराम वर्मा	भर्तृहरि वाक्पदीय का भाषा-तात्त्विक अध्ययन

इलाहाबाद विश्वविद्यालय—७७

१९३१

०बाबूराम सक्सेना	अवधी का विकास (संस्कृत विभाग)

१९३७

०रामशङ्करशुक्ल 'रसाल'	हिन्दी काव्यशास्त्र का विकास

१९४०

०माताप्रसाद गुप्त	तुलसीदास-जीवनी और कृतियों का...अध्ययन

लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	आधुनिक हिन्दी साहित्य—१८५०-१९००ई०
१९४१	
श्रीकृष्ण लाल	हिन्दी साहित्य का विकास—१९००-१९२५ ई०
१९४२	
जानकीनाथ सिंह 'मनोज'	हिन्दी छन्दशास्त्र
१९४३	
राकेश गुप्त	मनोविज्ञान के प्रकाश में रस-सिद्धान्त का...अध्ययन
१९४४	
०दीनदयालु गुप्त	हिन्दी के अष्टछाप-कवियों का अध्ययन
१९४४	
०उदयनारायण तिवारी	भोजपुरी भाषा की उत्पत्ति और विकास
ब्रजेश्वर वर्मा	सूरदास—जीवनी और कृतियों का अध्ययन
०हरदेव बाहरी	हिन्दी अर्थ—विज्ञान
१९४६	
ब्रजमोहन गुप्त	हिन्दी काव्य में रहस्यवादी प्रवृत्तियाँ
०लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	हिन्दी साहित्य और उसकी सांस्कृतिक भूमिका
१९४७	
कमल कुलश्रेष्ठ	हिन्दी प्रेमाख्यान काव्य : जायसी का विशेष अध्ययन
१९४८	
जयकान्त मिश्र	मैथिली साहित्य का संक्षिप्त इतिहास
रघुवंशसहाय वर्मा	हिन्दी साहित्य में प्रकृति और काव्य
रामरतन भटनागर	हिन्दी समाचारपत्रों का इतिहास
शीलवती मिश्र	हिन्दी सन्तों पर वेदान्त....का ऋण
१९४९	
कामिल बुल्के	रामकथा-उत्पत्ति और विकास
शैलकुमारी माथुर	आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी—भावना
१९५०	
विश्वनाथ मिश्र	अंग्रेजी का हिन्दी भाषा और साहित्य पर प्रभाव

१९५१

धर्मकिशोर लाल	अंग्रेजी नाटकों का हिन्दी नाटकों पर प्रभाव
रामसिंह तोमर	प्राकृत अपभ्रंश का साहित्य....हिन्दी पर प्रभाव
हरिहरप्रसाद गुप्त	ग्रामोद्योग सम्बन्धी शब्दावली...फूलपुर तहसील (आजमगढ़ जिला)

१९५२

आनन्दप्रकाश माथुर	१६वीं–१७वीं शती की अवस्था का ..अध्ययन
टीकमसिंह तोमर	हिन्दी वीरकाव्य–१६००-१८०० ई०
भोलानाथ	हिन्दी साहित्य–१९२६-१९४७ ई०
०राकेश गुप्त	नायक-नायिका भेद
लक्ष्मीनारायण लाल	हिन्दी कहानियों की शिल्प-विधि का विकास
विद्याभूषण विभु	हिन्दी प्रदेश के हिन्दू नामों का अध्ययन

१९५३

जगदीश गुप्त	हिन्दी और गुजराती कृष्ण-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन
धर्मवीर भारती	सिद्ध-साहित्य
रवीन्द्रसहाय वर्मा	आधुनिक हिन्दी काव्य पर अंग्रेजी प्रभाव
सत्यव्रत सिन्हा	भोजपुरी लोक-गाथा

१९५४

विमला वाघ्रे	दक्खिनी के सूफ़ी लेखक

१९५५

रत्नकुमारी	हिन्दी और बॅंगला के वैष्णव-कवि...१६वीं शती

१९५६

भोलानाथ तिवारी	हिन्दी नीतिकाव्य
विमला पाठक	रीवाँ दरबार के हिन्दी कवि

१९५७

उषा पाण्डेय	मध्यकालीन काव्य में नारी-भावना
जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव	डिंगल पद्य सात्यि का अध्ययन
पारसनाथ तिवारी	कबीर की कृतियों के...पाठ....
शशि अग्रवाल	हिन्दी कृष्णभक्ति साहित्य पर पौराणिक प्रभाव

१९५८

उषा सक्सेना	हिन्दी कथा साहित्य के विकास पर आँग्ल प्रभाव
गङ्गाचरण त्रिपाठी	अवधी, ब्रज और भोजपुरी—तुलनात्मक अध्ययन
निर्मला सक्सेना	सूरसागर की शब्दावली का अध्ययन
रामस्वरूप चतुर्वेदी	आगरा जिले की बोली का अध्ययन

१९५९

केशवचन्द्र सिन्हा	हिन्द उपन्यास पर बँगला उपन्यास का प्रभाव
मोहनलाल अवस्थी	आधुनिक हिन्दी कविता का काव्य-शिल्प
हरिशङ्कर शर्मा	आदिकाल का हिन्दी जैन साहित्य

१९६०

अमरबहादुर सिंह	अवधी और भोजपुरी की सीमावर्ती बोलियाँ
कीर्तिलता	भारत का स्वतन्त्रता प्राप्ति पर....
बिन्दु अग्रवाल	हिन्दी उपन्यासों में नारी-चित्रण
रामचन्द्र राय	राजस्थान के हिन्दी अभिलेख....भाषा शास्त्रीय अध्ययन
रामअवतार	रामभक्ति और उसकी ....अभिव्यक्ति
रामनारायण पाण्डेय	हिन्दी काव्य में रहस्यवाद
लालजी शुक्ल	शङ्करदेव तथा माधवदेव....तुलनात्मक अध्ययन
वीरेन्द्रसिंह	हिन्दी काव्य में प्रतीकवाद
शिवनन्दन	परिनिष्ठित हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों का अर्थपरिवर्तन
श्याममनोहर पाण्डेय	हिन्दी के सूफ़ी तथा असूफ़ी प्रेमाख्यान....

१९६१

अचलानन्द जखमोला	हिन्दी कोश साहित्य—१५००-१८०० ई०
ओम्प्रकाश शर्मा	सन्त साहित्य की लौकिक पृष्ठ-भूमि
करुणा वर्मा	मध्ययुगीन हिन्दी भक्ति–साहित्य....वात्सल्य....
केशनीप्रसाद चौरसिया	मध्यकालीन हिन्दी सन्त-साहित्य...
मिथिलेश कान्ति	हिन्दी-भक्तिकाव्य में शृङ्गार रस
मीरा श्रीवास्तव	मध्ययुगीन हिन्दी कृष्णभक्ति....चैतन्य सम्प्रदाय
रामकुमारी मिश्र	बिहारी सतसई का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन
लक्ष्मीधर मालवीय	देव के लक्षण ग्रन्थों का पाठ तथा....समस्याएँ
शालिग्राम गुप्त	ब्रज और बुन्देली लोक-गीतों में कृष्ण-कथा

शालिग्राम शर्मा	इलाहाबाद जिले की कृषि शब्दावली का अध्ययन
सत्या गुप्ता	खड़ी बोली के लोक-साहित्य का अध्ययन

१९६२

आशा गुप्त	सगुण और निर्गुण भक्ति–साहित्य का अध्ययन—१४००-१७०० ई०
कुसुम जायसवाल	हिन्दी लघुकथाओं में सामाजिक तत्त्व
कुसुम वार्ष्णेय	हिन्दी कथा-साहित्य में नायक की परिकल्पना
महावीरसरन जैन	ए सिंक्रानिक स्टडी ऑव द डायलेक्टस ऑव द बुलन्दशहर एण्ड खुरजा तहसील
रतिभानु सिंह	हिन्दी भक्ति-साहित्य के संदर्भ में भक्ति-आन्दोलनों का विकास
रामकुमार गुप्त	हिन्दी खण्ड-काव्यों का अध्ययन
लालताप्रसाद दुबे	हिन्दी भक्तमाल साहित्य

उस्मानिया विश्वविद्यालय—२

१९५९

राजकिशोर पाण्डेय — दक्खिनी का प्रारम्भिक गद्य

१९६१

गनमुक्तम् वेंकटरमण — कवित्रय (सूर-तुलसी-जायसी) का सामाजिक पक्ष

कलकत्ता विश्वविद्यालय—१

१९४३

नलिनीमोहन सान्याल — बिहारी भाषाओं की उत्पत्ति और विकास

१९४८

विपिनबिहारी त्रिवेदी — चन्द वरदायी और उनका काव्य

१९५१

शिवनन्दन पाण्डेय — भारतीय नाटक का उद्भव और विकास

१९५८

तारकनाथ अग्रवाल	बीसलदेव रासो का सम्पादन
सावित्री सरीन	पंजाबी और हिन्दी के वार्ता–साहित्य में अभिप्राय

१९६०

दयानन्द श्रीवास्तव	खड़ी बोली का वाक्य-विन्यास
शिवनाथ	हिंदी भाषा का अर्थतात्विक विकास
हीरालाल माहेश्वरी	राजस्थानी भाषा और साहित्य

१९६३

अणिमासिंह, श्रीमती	मैथिली लोक-गीत

गोरखपुर विश्वविद्यालय—६

१९६०

मुकुन्ददेव शर्मा	हरिऔध जीवनी और साहित्य....

१९६१

रामदेव ओझा	नाथ सम्प्रदाय का मध्यकालीन हिन्दी भाषा और साहित्य पर प्रभाव

१९६१

राधिकाप्रसाद त्रिपाठी	रामसनेही सम्प्रदाय
सुरेन्द्रबहादुर त्रिपाठी	मध्यकालीन हिन्दी कविता में भारतीय संस्कृति
शैल श्रीवास्तव, श्रीमती	आधुनिक काव्य में कविकल्पना का स्वरूप और उसकी विवेचना

जबलपुर विश्वविद्यालय—२

१९६०

एन० डी० साहू	विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक के सम्पूर्ण साहित्य का अध्ययन

१९६१

एस० एल० जायसवाल	इंफ्लुएंस ऑफ सोशलिज्य ऑन पोस्ट ग्रेट वार हिन्दी (१९२०–५०)

दिल्ली वि० वि०—३२

१९६१

विमलकुमार जैन	सूफ़ी मत और हिन्दी साहित्य

सावित्री सिन्हा	मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ
१९५२	
दशरथ ओझा	हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास
हरिवंश कोछड़	अपभ्रंश-साहित्य
१९५५	
स्नेहलता श्रीवास्तव	हिन्दी में भ्रमरगीत काव्य और उसकी परम्परा
१९५६	
मनमोहन गौतम	सूर की काव्य-कला
विजयेन्द्र स्नातक	राधावल्लभ सम्प्रदाय के सन्दर्भ में हित हरिवंश का विशेष अध्ययन
सत्यदेव चौधरी	रीतिकाल के प्रमुख आचार्य
१९५७	
उमाकान्त गोयल	मैथिशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता
१९५८	
उमा मिश्र	रीतिकालीन काव्य और संस्कृत का पारस्परिक सम्बन्ध
महेन्द्रकुमार	मतिराम—कवि और आचार्य
सदानन्द मदान	भक्तिकालीन कृष्ण-भक्तिकाव्य पर पौराणिक प्रभाव
१९५९	
कैलाशप्रकाश	प्रेमचन्द-पूर्व हिन्दी उपन्यास
गार्गी गुप्त	राम काव्य की परम्परा में रामचन्द्रिका....
मधुरमालती सिंह	आधुनिक हिन्दी काव्य में विरह
रामस्वरूप शास्त्री	हिन्दी में नीति-काव्य का विकास
सुरेशचन्द्र गुप्त	आधुनिक हिन्दी कवियों के काव्य-सिद्धान्त
हरभजन सिह	गुरमुखी लिपि में....हिन्दी काव्य (१७-१८वीं शती)
१९६०	
मनोहर काले	आधुनिक हिन्दी और मराठी काव्य....
रणवीर सिंह	हिन्दी-काव्यशास्त्र में दोष–विवेचन
राजकुमारी मित्तल	हिन्दी के भक्तिकालीन कृष्ण साहित्य में रीतिकाव्य...
रामसिंह चौहान	हिन्दी कविता में ज्ञानवादी प्रवृत्तियाँ

रूपनारायण	ब्रजभाषा के कृष्णकाव्य में माधुर्य भक्ति
विजयबहादुर अवस्थी	रामचरितमानस पर पौराणिक प्रभाव
शिव भार्गव	प्रेमचन्द उत्तरकालीन हिन्दी-उपन्यास

१६६१

आशा शिरोमणि	हिन्दी-काव्य में वात्सल्य रस
निर्मला जैन	आधुनिक हिन्दी–काव्य में रूप-विधाएँ
विमला रानी	हिंदी साहित्य को नियतकालिक पत्रिकाओं का योगदान
सुषमा पाराशर	स्वतन्त्रता के पश्चात् हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ (१६२०-१६३७)

१६६२

तारकनाथ बाली	रसकी दार्शनिक और नैतिक व्याख्या
सुषमा नारायण	भारतीय राष्ट्रवाद....हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्ति

१६६३

नरेन्द्रकुमार	तुलसीदास के काव्य में अलंकार योजना

नागपुर वि० वि०—२८

१६३८

०बलदेवप्रसाद मिश्र	तुलसी–दर्शन

१६४०

रामकुमार वर्मा	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

१६५५

०हरवंशलाल शर्मा	सूरदास और उनका साहित्य

१६५६

चिन्तामणि उपाध्याय	मालवी लोक-गीत
रामनिरञ्जन पाण्डेय	भक्तिकालीन हिन्दी कविता में दार्शनिक प्रवृत्तियाँ...
विनयमोहन शर्मा	हिन्दी को मराठी सन्तों की देन
कृष्णलाल हंस	निमाड़ी और उसका लोक-साहित्य

१६५७

पाण्डुरङ्गराव 'मुरली'	आन्ध्र-हिन्दी-रूपक

भालचन्द्रराव तेलंग	भारतीय आर्यभाषा-परिवार.....छत्तीसगढ़ी...
महेन्द्र भटनागर	समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द
राजेश्वर गुरु	प्रेमचन्द
रामयतन सिंह	हिन्दी–काव्य में कल्पना-विधान
१९५८	
गोविन्दप्रसाद शर्मा	हिन्दी के उपन्यास साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन
१९५९	
क्रान्तिकुमार शर्मा	हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय काव्य-धारा का विकास
तेजनारायणलाल शास्त्री	मैथिली लोक-गीतों का अध्ययन
रामकुमार शुक्ल	गुरु-ग्रन्थ साहित्य
१९६०	
लीला अवस्थी	आधुनिक हिन्दी नाटकों में नारी–चित्रण
विद्याभूषण गङ्गल	मध्ययुगीन....कविता में पेड़-पौधे और पशु-पक्षी
सुदर्शनसिंह मजीठिया	मध्यकालीन हिन्दी और पंजाबी संतों की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन
१९६१	
ओम्कारनाथ शर्मा	हिन्दी साहित्य में निबन्ध का विकास
१९६२	
रमेशचन्द्र गङ्गराडे	सन्त कवि सिंगाजी : जीवन और कृतियाँ
रामपूजन तिवारी	हिन्दी सूफ़ी-काव्य की भूमिका....
श्रीशङ्कर शेष	हिन्दी और मराठी कथा–साहित्य का अध्ययन

पंजाब विश्वविद्यालय—३७

१९३८	
इन्द्रनाथ मदान	...आधुनिक हिन्दी साहित्य की समालोचना
१९४५	
लक्ष्मीधर शास्त्री	ऋषि बरकत उल्लाह कृत पेम पकाश....
१९४६	
शिवनारायण बोहरा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
१९५१	
सरनदास भणोत	आलम या स्यामसनेही

१९५२

वेदपाल खन्ना	हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास

१९५४

रामधन शर्मा	सूरदास के कूट-काव्य का अध्ययन

१९५७

किरणचन्द्र शर्मा	केशवदास...उनके रीतिकाव्य का विशेष अध्ययन

१९५८

गोविन्दराम शर्मा	हिन्दी के आधुनिक महाकाव्य
धर्मपाल अष्टा	दशमग्रन्थ का कवित्व
भीष्म साहनी	हिन्दी उपन्यास में नायक की परिकल्पना
वेणीप्रसाद शर्मा	पृथ्वीराजरासो के लघुतम संस्करण का.... आलोचनात्मक संपादन
संसारचन्द्र महरोत्रा	हिन्दी काव्य में अन्योक्ति

१९५९

आशा गुप्ता	खड़ी बोली का अभिव्यंजना शिल्प
केदारनाथ दुबे	हित ध्रुवदास और उनका साहित्य
गणपतिचन्द्र गुप्त	हिन्दी काव्य में शृङ्गार-परम्परा और बिहारी
दुर्गादत्त मन्नन	जयशङ्करप्रसाद : विचार और कला
शुषमा धवन	प्रेमचन्द तथा प्रेमचन्दोत्तर-हिन्दी-उपन्यास

१९६१

ज्ञानवती दरबार	भारतीय नेताओं की हिन्दी-सेवा
ब्रजलाल गोस्वामी	निर्गुण-सगुण काव्य-धाराओं का अध्ययन

१९६२

धर्मपाल	हिन्दी साहित्य पर राजनीतिक आन्दोलनों का प्रभाव—१९०६–१९४७ ई०
रघुवीरशरण	हिन्दी भाषा का रूपवैज्ञानिक तथा वाक्य-वैज्ञानिक अध्ययन
रतनसिंह	दशम ग्रन्थ में पौराणिक रचनाओं का अध्ययन
विद्यानाथ गुप्त	हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीयतावाद
विद्याभास्कर 'अरुण'	हिन्दी तथा पंजाबी की ध्वनियों का ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक अध्ययन

शान्तिदेवी बत्रा	हिन्दी नाटक की शिल्प-विधि का विकास
सत्येन्द्र तनेजा	आधुनिक हिन्दी नाटक-साहित्य पर बँगला नाटक साहित्य का प्रभाव—१८५०–१९५०
हरवंशलाल शर्मा	हिन्दी तथा पंजाबी के निर्गुणकाव्य—तुलनात्मक अध्ययन.

१९६३

कुन्तल भसीन, श्रीमती	आधुनिक हिन्दी-काव्य में रूढ़िगत मान्यताएँ
जयनाथसिंह तोमर	भक्तिकाल में माधुर्यभाव का स्वरूप और सामाजिक परिवेश में उसका मूल्यांकन
ज्ञानवती चतुर्वेदी	मध्यकालीन हिन्दी-काव्य
पद्मचन्द काश्यप	कुलवी लोक-साहित्य
प्रेम भटनागर	हिन्दी उपन्यास में शिल्प-विधान....
बद्रीनाथ कपूर	हिन्दी भाषा में पर्यायवाची शब्दों का स्थान
राजवधना, श्रीमती	आधुनिक हिन्दी—कविता में चेतना का स्वरूप और विकास
वीरेन्द्र राज	हिन्दी साहित्य में व्यंग—१८५७-१९५७
श्रीकृष्ण देव	बीभत्स रस और हिन्दी साहित्य
हरिश्चन्द्र बत्रा	आधुनिक हिन्दी कविता में अभिव्यञ्जना-कला—**इन्दु** से **तार सप्तक** तक

पटना विश्वविद्यालय—१२

१९४४

धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी	सन्त कवि दरिया : एक अनुशीलन
०सुभद्र झा	मैथिली भाषा का विकास

१९५३

०रामखेलावन पाण्डेय	मध्यकालीन सन्त-साहित्य

१९५७

राजाराम रस्तोगी	तुलसीदास—जीवनी और विचारधारा

१९५८

०शिवनन्दन प्रसाद	मध्यकालीन...हिन्दी काव्य में मात्रिक छन्द

१९५९

०मङ्गलबिहारी शरण सिद्धों की सन्धा भाषा

१९६०

गीतालाल प्रेमचन्द का नारी-चित्रण....

वासुदेवनन्दन प्रसाद भारतेन्दुकालीन नाटक और रङ्गमञ्च

१९६१

वचनदेव कुमार तुलसी के भक्त्यात्मक गीत

१९६२

सियाराम तिवारी हिन्दी के मध्यकालीन खण्डकाव्य

रामपूजन तिवारी सूफी मत...साधना और साहित्य

१९६३

०वीरेन्द्र श्रीवास्तव अपभ्रंश का भाषावैज्ञानिक अध्ययन

पूना विश्वविद्यालय—१

१९५७

उषा इथापे दक्खिनी हिन्दी—इब्राहीमनामा और नौवरस

बम्बई विश्वविद्यालय—४

१९६२

उर्वशी सुरती आधुनिक हिन्दी-कविता में मनोविज्ञान

कृष्णलाल शर्मा आधुनिक हिन्दी काव्य में ध्वनि

बद्रीनारायण झा गोविन्द ठाकुर तथा उनका काव्य

१९६३

बंशीधर पंडा हिन्दी कोश-साहित्य का विकास—सिद्धान्त, पूर्व-परम्परा एवं शास्त्रीय विवेचन—१७६५-१९६२

बिहार विश्वविद्यालय—४

१९५८

भुवनेश्वरनाथ मिश्र रामभक्ति साहित्य में मधुरोपासना

१९५९

कामेश्वरप्रसाद सिंह प्रसादजी की काव्य-प्रवृत्ति

१९६०

हरिमोहन मिश्र	आधुनिक हिन्दी आलोचना

१९६१

०श्यामनंदनप्रसाद किशोर	आधुनिक हिन्दी-महाकाव्य में शिल्प-विधान

भागलपुर विश्वविद्यालय—४

१९६१

नेमिचन्द्र शास्त्री	हरिभद्र—प्राकृत-कथा साहित्य का अध्यय
शिवशङ्करप्रसाद वर्मा	देवनागरी लिपि—ऐतिहासिक....अध्ययन

१९६२

रमाशंकर तिवारी	सूरदास की शृंगार-भावना
विष्णुकिशोर झा	हिन्दी उपन्यास–पृष्ठभूमि और परम्परा

मद्रास विश्वविद्यालय—१

१९५९

शङ्करराजू नायुडु	कंब रामायणम् और रामचरितमानस....

मुस्लिम विश्वविद्यालय—१२

१९५६

गोवर्धननाथ शुक्ल	परमानन्ददास और उनका साहित्य
देवर्षि सनाढ्य	हिन्दीके पौराणिक नाटकों का आलोचनात्मक अध्ययन

१९५८

विजयपाल सिंह	केशव और उनका साहित्य
शिवशङ्कर शर्मा	भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य में योग-भावना
श्यामेन्द्रप्रकाश शर्मा	अष्टछाप के कवियों में ब्रज–संस्कृति (सूर के विशेष सन्दर्भ में).

१९५९

गिरिधारीलाल शास्त्री	हिन्दी कृष्ण-भक्तिकाव्य की पृष्ठभूमि
गेंदालाल शर्मा	ब्रजभाषा और खड़ी बोली के व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन
द्वारिकाप्रसाद मीतल	भक्तिकालीन कृष्णकाव्य में राधा का स्वरूप
हरीसिंह	कृष्णकाव्य-धारा में मुसलमान कवियों का योगदान (१६००–१८५०ई०)

१९६०

रामशरण बत्रा	राम-काव्य में सामाजिक तथा दार्शनिक पृष्ठभूमि (१६वीं–१७वीं शती)

१९६१

धन्यकुमार जैन	प्राचीन हिन्दी साहित्य पर जैन साहित्य का प्रभाव
विश्वनाथ शुक्ल	श्रीमद्भागवत का हिन्दी कृष्णभक्ति साहित्य पर प्रभाव

राँची विश्वविद्यालय—१

१९६२

सत्यदेव ओझा	भोजपुरी कहावतों का सांस्कृतिक अध्ययन

राजस्थान विश्वविद्यालय—२८

१९४९

सरनामसिंह शर्मा	हिन्दी साहित्य पर संस्कृत का प्रभाव

१९५०

सुधीन्द्र (ब्रह्मदत्त)	द्विवेदी युग—कविता का पुनरुत्थान (१९०१-१९२०)

१९५२

फैयाज़ अली खाँ	नागरीदास की कविता....अध्ययन
भोलाशङ्कर व्यास	ध्वनि-सम्प्रदाय और उसके सिद्धान्त
मोतीलाल मेनारिया	राजस्थान का पिंगल साहित्य

१९५४

चन्द्रकला	आधुनिक हिन्दी-कविता में प्रतीकवाद के प्रकार

१९५५

कन्हैयालाल सहल	राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन
गायत्रीदेवी वैश्य	आधुनिक हिन्दी-काव्य में समाज (१८५०-१९५० ई०)
देवराज उपाध्याय	आधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य और मनोविज्ञान
मोतीलाल गुप्त	हिन्दी साहित्य को मत्स्य प्रदेश की देन
राजकुमारी शिवपुरी	राजस्थान के राजघरानों द्वारा हिन्दी-साहित्य सेवा
शिवस्वरूप शर्मा	राजस्थानी गद्य-साहित्य का इतिहास....

१९५७

जगदीशचन्द्र जोशी	जयशङ्करप्रसाद के ऐतिहासिक नाटक
रामचरण महेन्द्र	हिन्दी एकांकी—उद्भव और विकास

१९५८

रामानन्द तिवारी	सत्यं शिवं सुन्दरम्
श्यामशङ्कर दीक्षित	परमानन्ददास—जीवनी और कृतियाँ

१९५९

अम्बाशङ्कर नागर	गुजरात की हिन्दी-सेवा
वेंकट शर्मा	आधुनिक हिन्दी साहित्य में समालोचना का विकास
सीता हाँडा	आधुनिक हिन्दी–साहित्य में आख्यायिका....
स्वर्णलता अग्रवाल	राजस्थानी लोक–गीत

१९६०

माधुरी दुबे	हिन्दी गद्य का वैभव-काल (१९२५-५०ई०)

१९६१

ब्रज मोहन शर्मा	हिन्दी गद्य का निर्माण और विकास....
शम्भूलाल शर्मा	रामचरितमानस...शिक्षा-दर्शन
सत्यवती गोयल	मध्यकालीन हिन्दी-कविता में दोहा
हरिकृष्ण पुरोहित	आधुनिक हिन्दी-साहित्य की विचार-धारा (१८७०-१९५०ई०)

१९६२

कृष्णकुमार शर्मा	राजस्थानी लोक-गाथाएँ

लखनऊ विश्वविद्यालय—७०

१९४६

उदयभानु सिंह	म० प्र० द्विवेदी और उनका युग

१९४७

भगीरथ मिश्र	हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास

१९४८

त्रिलोकीनारायण दीक्षित	सन्तकवि मलूकदास

१९४९

सरयूप्रसाद अग्रवाल	अकबरी दरबार के हिन्दी कवि

१९५०

हीरालाल दीक्षित	आचार्य केशवदास—एक अध्ययन

१९५१

हरिकान्त श्रीवास्तव	हिन्दू कवियों के प्रेमाख्यान
कृष्णदेव उपाध्याय	भोजपुरी लोक-साहित्य

१९५२

समरबहादुर सिंह	अब्दुर्रहीम खानखाना....और काव्य

१९५३

चन्द्रावती सिंह	हिन्दी साहित्य में जीवन-चरित्र का विकास....
देवकीनन्दन श्रीवास्तव	तुलसीदास की भाषा
नारायणदास खन्ना	आचार्य भिखारीदास
पुत्तूलाल शुक्ल	आधुनिक हिन्दी-कविता में छन्द

१९५४

भगवद्व्रत मिश्र	सन्तकवि रविदास....उनका पन्थ
सरला शुक्ल	जायसी के परवर्ती हिन्दी सूफी कवि

१९५५

इन्द्रपाल सिंह	आदिकालीन हिन्दी-साहित्य की प्रवृत्तियां
उषा गुप्त	हिन्दी के भक्तिकालीन कृष्ण-काव्य में संगीत
भास्करन नय्यर, के०	हिन्दी और मलयालम के भक्त कवि

१९५६

०त्रिलोकीनारायण दीक्षित	चरन-सुन्दर-मलूक—दार्शनिक विचार
रामचन्द्र तिवारी	शिवनारायणीय सम्प्रदाय और....हिंदी काव्य
शकुन्तला वर्मा	आधुनिक हिन्दी-साहित्य में गांधीवाद
शान्तिप्रसाद चन्दोला	नाथ सम्प्रदाय के हिन्दी-कवि

१९५७

अविनाशचन्द्र अग्रवाल	भारतेन्दुयुगीन हिन्दी-कवि
पुष्पलता निगम	हिन्दी महाकाव्यों में नायक
प्रेमनारायण टण्डन	सूरदास की भाषा
ब्रजकिशोर मिश्र	अवध के प्रमुख हिन्दी कवियों का अध्ययन
लक्ष्मीनारायण गुप्त	हिन्दी-साहित्य को आर्यसमाज की देन

ललितेश्वर झा	मैथिली के कृष्ण-भक्त कवियों का अध्ययन

१९५८

कृष्णबिहारी मिश्र	आधुनिक सामाजिक आन्दोलन एवं आधुनिक साहित्य—१९००-५०ई०
जनार्दनप्रसाद काला	गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य
तारा कपूर	हिन्दी काव्य में करुण-रस
प्रतापनारायण टण्डन	हिन्दी उपन्यासों में कथा-शिल्प का विकास
विद्या मिश्र	वाल्मीकि रामायण....रामचरितमानस...तुलना
शङ्करलाल यादव	हरियाना प्रदेश का लोक-साहित्य
शशिभूषण सिंहल	वृन्दावनलाल वर्मा....उपन्यास....
सावित्री शुक्ल	हिन्दी-सन्त-काव्य....सामाजिक पृष्ठभूमि

१९५९

कैलाश(चन्द्र)वाजपेयी	आधुनिक हिन्दी कविता का शिल्प-विधान
ब्रजनारायण सिंह	पद्माकर और उनके समसामयिक
लालताप्रसाद सक्सेना	हिन्दी काव्य में मानव और प्रकृति
०विश्वनाथ मिश्र	हिन्दी नाटक—उपन्यास....पाश्चात्य प्रभाव

१९६०

०उदयभानु सिंह	तुलसी-दर्शन-मीमांसा
कमलारानी तिवारी	आधुनिक हिन्दी-काव्य में सौन्दर्य—भावना
देवेशचन्द्र	आधुनिक....हिन्दी कविता में अलंकार....
भाग्यवती सिंह	तुलसी की काव्यकला
मायारानी टण्डन	अष्टछाप....सांस्कृतिक अध्ययन
रामजीलाल सहायक	कबीरदास....दार्शनिक विचार-धारा
रामेश्वरप्रसाद अग्रवाल	बुन्देली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
विद्या सिंह	हिन्दी-काव्य में रहस्यवाद
शम्भूनाथ चतुर्वेदी	स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी-कविता
०सावित्री सिन्हा	ब्रजभाषा...कृष्ण-भक्ति-काव्य....
सुरेन्द्रमनोहरलाल माथुर	हिन्दी का यात्रा—साहित्य
सुरेशचन्द्र अवस्थी	हिन्दी के नाट्यरूपों का अध्ययन

१९६१

कृष्णचन्द्र अग्रवाल	पृथ्वीराजरासो के पात्र....
दयाशङ्कर शुक्ल	हिन्दी का समस्यापूर्ति काव्य

प्रसिन्नी सहगल	गुरु गोविन्दसिंह : जीवनी और साहित्य
भगवतीप्रसाद शुक्ल	बावरी सम्प्रदाय के हिन्दी-कवि
महेन्द्रनाथ मिश्र	किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यास....
वेङ्कटेश्वर रेड्डी	कबीर और वेमना....तुलनात्मक अध्ययन
शारदा अग्रवाल	द्विवेदीयुग के उपन्यासों का अध्ययन
शिवस्वरूप सक्सेना	हिन्दी साहित्य पर मार्क्सवाद का प्रभाव
सरोजिनी श्रीवास्तव	मिश्रबन्धु और उनका साहित्य
सुखदेवप्रसाद शुक्ल	हिन्दी उपन्यास का विकास और नैतिकता

१९६२

ओम् शुक्ल	हिन्दी उपन्यासों की शिल्पविधि....
त्रिलोकीनाथ सिंह	सूदन का सुजान चरित और उसकी भाषा
रामकिशोरी श्रीवास्तव	हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों का अध्ययन
रामसिंह	कृषि तथा ग्रामोद्योग-शब्दावली
विष्णुशर्मा मिश्र	तुलसी का सामाजिक दर्शन
शान्तिदेवी श्रीवास्तव	भक्तयुगीन साहित्य में नारी
शुभकारनाथ कपूर	आचार्य चतुरसेन शास्त्री का कथा-साहित्य
सरोजिनीदेवी अग्रवाल	आधुनिक हिन्दी-काव्य....गीत-भावना

१९६३

०प्रतापनारायण टण्डन	समीक्षा के मान एवं हिन्दी समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ

विक्रम विश्वविद्यालय—१

१९६२

कोमलसिंह सोलंकी	हिन्दी के निर्गुण कवियों पर नाथ पन्थ का प्रभाव

विश्वभारती विश्वविद्यालय—१

१९६२

नन्दकिशोर सिंह	कुरमाली बोली

सयाजीराव विश्वविद्यालय—१

१९६२

महेन्द्रप्रताप सिंह	भगवन्तराय खीची और उनके मण्डल के कवि

सागर विश्वविद्यालय—२६

१६५२

वीरेन्द्रकुमार शुक्ल	भारतेन्दु का नाट्य-साहित्य

१६५३

प्रेमशङ्कर	जयशङ्कर प्रसाद के काव्य का विकास

१६५७

कमलाकान्त पाठक	गुप्तजी का काव्य-विकास
भानुदेव शुक्ल	भारतेन्दुयुग के नाटककार
रामलाल सिंह	आचार्य शुक्ल के समीक्षा-सिद्धान्त

१६५८

शङ्करदयाल चौऋषि	द्विवेदीयुगीन हिन्दी-गद्य-शैलियाँ

१६५६

विश्वनाथ अय्यर,	बीसवीं शताब्दी : हिन्दी और मलयालम काव्य
शिवकुमार मिश्र	छायावादयुग के पश्चात् हिन्दी काव्य की विभिन्न विकास-दिशाएँ

१६६०

चण्डीप्रसाद जोशी	बीसवीं शताब्दी—हिन्दी उपन्यासों का....अध्ययन
बलभद्रप्रसाद तिवारी	आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी प्रवृत्तियाँ
मालतीबाई श्रीखण्डे	हिन्दी और मराठी सन्त काव्य....
सावित्री खरे	प्रसाद के पश्चात् हिन्दी-नाटकों का विकास

१६६१

चन्दूलाल दुबे	हिन्दी-नाटक का विकास....कन्नड़....से तुलना
दशरथ सिंह	आधुनिक....स्वच्छन्दतावादी नाटक....
देवेश ठाकुर	आधुनिक....नारी और प्रसाद के नारी पात्र
महेशप्रसाद चतुर्वेदी	तुलसी का समाज-दर्शन
रामाधार शर्मा	हिन्दी में सैद्धान्तिक समीक्षा का विकास
शिवसहाय पाठक	मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य

१६६२

कमलकुमारी जौहरी	हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी उपन्यास
गजानन शर्मा	भक्तिकालीन काव्य में नारी

दामोदर	हिन्दी और मलयालम के सामाजिक उपन्यास
राजेन्दप्रसाद मिश्र	आधुनिक काव्य और काव्यवादों का अध्ययन
रामकरन मिश्र	बीसवीं शताब्दी....सांस्कृतिक परिस्थितियाँ
रामदास प्रधान	बघेलखण्ड प्रदेश की लोकोक्तियाँ....
विद्यारामकमल मिश्र	आधुनिक....स्वच्छन्दतावादी काव्य का अनुशीलन
सुरेशचन्द्र जैन	आधुनिक काव्य में राष्ट्रीय चेतना का विकास

हिन्दू विश्वविद्यालय—४४

१९३४

०पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल	हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय

१९४०

०केसरीनारायण शुक्ल	आधुनिक काव्य-धारा

१९४३

०जगन्नाथप्रसाद शर्मा	प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन

१९४९

०ओम्प्रकाश गुप्त	हिन्दी मुहावरे
०राजपति दीक्षित	तुलसीदास और उनका युग

१९५०

०शिवमङ्गलसिंह 'सुमन'	गीतिकाव्य का उद्गम....

१९५२

शकुन्तला दुबे	हिन्दी काव्यरूपों का उद्भव और विकास

१९५५

शम्भुनाथ सिंह	हिन्दी में महाकाव्य का स्वरूप–विकास
सितकण्ठ मिश्र	खड़ी बोली का आन्दोलन

१९५६

नामवर सिंह	रासो की भाषा
बच्चनसिंह	रीतिकालीन कवियों की प्रेम–व्यंजना
बलवन्त ल० कोतमिरे	हिन्दी गद्य के विविध साहित्य-रूप....
रघुनाथसिंह	आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी

रमेशप्रसाद मिश्र	आधुनिक हिन्दी-काव्य-साहित्य....
हिरण्मय	हिन्दी और कन्नड़ में भक्ति आंदोलन....अध्ययन

१९५७

अष्टभुजाप्रसाद पाण्डेय	हिन्दी में गद्य-काव्य का विकास
कणिका विश्वास	ब्रजभाषा और ब्रजबुलि साहित्य
रामदरश मिश्र	आधुनिक आलोचना
विष्णुस्वरूप	कवि-समय-मींमासा
शिवप्रसाद सिंह	सूर-पूर्व व्रज-भाषा

१९५८

गणेशन, एस० एन०	हिन्दी उपन्यासों पर पाश्चात्य प्रभाव
गिरीशचन्द्र तिवारी	कबीर के बीजक....दार्शनिक व्याख्या
त्रिभुवन सिंह	मध्यकालीन....कविता और मतिराम
पूर्णमासी राय	कृष्णभक्ति में मधुर रस
मोतीसिंह	निर्गुण साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
रामनरेश वर्मा	सगुण भक्तिकाव्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

१९५९

कपिलदेव पाण्डेय	मध्यकालीन साहित्य में अवतारवाद
कृष्णकुमार मिश्र	हिन्दी गद्य-साहित्य का विकास
धर्मपाल मेनी	श्री गुरुग्रन्थ साहब
रवीन्द्रनाथ राय	हिन्दी भक्ति–साहित्य में लोक-तत्त्व
राममूर्ति त्रिपाठी	लक्षणा और उसका प्रसार

१९६०

उमा मोदविल	हिन्दी में शब्द और अर्थ का मनोवैज्ञानिक अध्ययन
कमलिनी मेहता	नाटकों में यथार्थवाद
नवरत्न कपूर	हिन्दी के ऐतिहासिक नाटक....
मुदमङ्गल सिंह	अंग्रेज शासकों की शिक्षा नीति....
श्यामसुन्दर शुक्ल	हिन्दी काव्य की निर्गुण-धारा

१९६१

नगेन्द्रनाथ उपाध्याय	नाथ और सन्त-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन
नरसिंहाचारी,एस०टी०	हिन्दी साहित्य और आलोचना....
शङ्करदेव शर्मा	आधुनिक हिन्दी-साहित्य में काव्यरूप.. ..

शैल रस्तोगी	हिन्दी उपन्यासों में नारी
श्रीधर सिंह	तुलसीदास की कारयित्री प्रतिभा
१६६२	
जगमोहन राय	हिन्दी का पद-साहित्य
मोहनराम यादव	रामलीला की उत्पत्ति...
शिवनारायणलाल श्रीवास्तव	हिन्दी उपन्यासों का विकास

विदेशी विश्वविद्यालय

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय

१६५६	
एल० टी० वॉल्कट	ए स्टडी ऑफ द तुलसीकृत रामचरितमानस विद ए व्यू टू टैस्टिंग द क्लेम फॉर कन्सैप्ट्स् (इन तुलसीदास) सिमिलर और पैरलल टू द आगापे कन्सैप्ट ऑफ द न्यू टैस्टामेंट. (डी० फ़िल्०).

कोनिग्सबर्ग विश्वविद्यालय

१६३४	
जनार्दन मिश्र	रिलीजस पोइट्री ऑफ सूरदास

पेरिस विश्वविद्यालय

१६३५	
धीरेन्द्र शर्मा	ब्रजभाषा
१६५०	
वोदबिल, शा०	रामचरितमानस के स्रोत....

पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय

१९५९

जगदेव सिंह — बाँगरू भाषा का रचनात्मक व्याकरण

फ्लरेंस विश्वविद्यालय

१९१०

टैसीटोरी, एल० पी० — रामायण और रामचरितमानस

लन्दन विश्वविद्यालय

१९१८

कार्पेन्टर, जे० एन० — थियोलोजी ऑफ तुलसीदास

१९३०

मोहिउद्दीन कादरी — हिन्दुस्तानी फॉनेटिक्स

१९३१

के, एफ० ई० — कबीर एण्ड हिज फॉलोअर्स

१९४१

लक्ष्मीधर — मलिक मु० जायसी के पदमावत...

१९४९

हरिश्चन्द्र राय — हिन्दी साहित्य में महाकाव्य

१९५०

विश्वनाथ प्रसाद — भोजपुरी ध्वनियों और ध्वनिप्रक्रिया का अध्ययन

माहेश्वरी सिंह — गद्यकालीन हिन्दी-छन्द का ऐतिहासिक विकास

१९५५

शारदा वेदालङ्कार — हिन्दी गद्य का विकास

अनुक्रमणी

[अनुक्रमणी में **प्रबंधकार** और **प्रबंधग्रंथ** के सामने लिखे अंक वर्गानुसार विवरण की प्रविष्टि-संख्या-सूचक हैं।]

प्रबन्धकार

प्रबन्धग्रन्थ